PDF Compressor Free Version

इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

BES-126
ज्ञान और पाठ्यचर्या

खण्ड

2

पाठ्यचर्या को समझना

इकाई 5

पाठ्यचर्या : अर्थ एवं इसके आयाम 5

इकाई 6

पाठ्यचर्या : कार्यक्षेत्र व निर्धारक तत्व 17

इकाई 7

पाठ्यचर्या की संरचना 34

इकाई 8

पाठ्यचर्या नवीकरण 53

PDF Compressor Free Version

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर आई.के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली

प्रोफेसर श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रोफेसर परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली
एवं प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

प्रोफेसर प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली

प्रोफेसर अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एन.के. दाश
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एम. सी. शर्मा
(कार्यक्रम समन्वयक–बी.एड.)
31 मार्च 2017 तक
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सह–समन्वयक–बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित सदस्य (शिक्षा विद्यापीठ के संकाय सदस्य)

प्रोफेसर डी. वेंकटेश्वरलू
प्रोफेसर अमिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आयशा कन्नाडी
डॉ. एम.वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेथ कुरुविला
डॉ. निराधर डे

कार्यक्रम समन्वयक: प्रोफेसर सरोज पाण्डे एवं डॉ. गौरव सिंह,
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक: डॉ. वंदना सिंह, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

खंड निर्माण दल

पाठ्यक्रम लेखन
इकाई 5 डॉ. वंदना सिंह,
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

इकाई 6 को ईएस 331 की इकाई 2ए खंड 1 के रूपान्तरित किया है।

इकाई 7 और 8 को एमईएस–012 की इकाई–16 और 17 से रूपान्तरित किया है।

विषयवस्तु संपादन
प्रोफेसर एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय,
जामिया मिलिया
इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक
डॉ. सत्यवीर सिंह
इकाई 5 और 6
शिक्षा विभाग
आई.सी.डी.ई.ओ.एल
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला
डॉ. विशाल सूद
एस.एन.आई. कॉलेज,
पिलाना बागपत
(उत्तर प्रदेश)

हिंदी भाषा पुनरीक्षण
डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रूफ रीडिंग
डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री उत्पादन

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

श्री.एस.एस. वेंकटाचलम
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
इग्नू, नई दिल्ली

दिसम्बर, 2017

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2017

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कृति का कोई भी अंश, मिमियोग्राफ या किसी भी अन्य रूप में, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार, उत्तम नगर, (नजदीक सेक्टर 2 द्वारका), नई दिल्ली–110059

PDF Compressor Free Version

बी.ई.एस.–126	ज्ञान और पाठ्यचर्या
खंड 1	**शिक्षा में ज्ञान**
इकाई 1	ज्ञान को समझना
इकाई 2	जानने की प्रक्रिया
इकाई 3	ज्ञान पर शैक्षिक विचारक
इकाई 4	ज्ञान, समाज और शक्ति
खंड 2	**पाठ्यचर्या को समझना**
इकाई 5	पाठ्यचर्या : अर्थ एवं इसके आयाम
इकाई 6	पाठ्यचर्या : कार्यक्षेत्र व निर्धारक तत्व
इकाई 7	पाठ्यचर्या की संरचना
इकाई 8	पाठ्यचर्या नवीकरण
खंड 3	**विद्यालयों में पाठ्यचर्या सहभागिता**
इकाई 9	विद्यालयः पाठ्यचर्या सहभागिता का स्थान
इकाई 10	विद्यालय में पाठ्यचर्या क्रियान्वयन
इकाई 11	पाठ्यचर्या नेतृत्व

PDF Compressor Free Version

खंड परिचय

खंड एक में हमने ज्ञान की प्रकृति और ज्ञान सृजन की प्रक्रिया की चर्चा की। शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विचारधाराओं और शैक्षिक चिन्तकों ने निश्चित अधिगम अनुभवों की वकालत की है जिनको निर्धारित अधिगम वातावरण में शिक्षार्थियों को प्रदान करने की आवश्यकता है। ये अधिगम अनुभव जो किसी संगठित शैक्षणिक क्रियाकलाप की विषयवस्तु हैं, पाठ्यचर्या का आधार निर्मित करते हैं। इसलिए, पाठ्यचर्या के अर्थ एवं सम्प्रत्यय, पाठ्यचर्या निर्माण के विविध आधार, पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया, उसका संगठन, निष्पादन तथा मूल्यांकन आदि को जानना बहुत महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या का खंड 2 आपको पाठ्यचर्या के विविध आयामों पर विस्तृत विवरण प्रदान करने का एक प्रयास है। इसमें चार इकाइयाँ है।

इकाई 5, **पाठ्यचर्या के अर्थ व सम्प्रत्यय** से सम्बन्धित है। एक शिक्षार्थी को एक निश्चित अधिगम वातावरण, जैसे–एक विद्यालय, एक महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रदान किए जाने वाले सभी नियोजित अनुभव सम्मिलित है। पाठ्यचर्या को मुख्यतः मुखर, अन्तर्निहित व शून्य में वर्गीकृत किया जा सकता है। यद्यपि विभिन्न विशेषज्ञों ने पाठ्यचर्या को परिभाषित किया है, पर उन्हें चार समूहों में रखा जा सकता है, अर्थात् एक उत्पाद के रूप में एक कार्यक्रम के रूप में, एक अभीष्ट अधिगम उत्पाद के रूप में तथा एक नियोजित अधिगम अनुभव के रूप में। इसके पांच प्रमुख उपागमों: व्यवहारिक–तार्किक उपागम, प्रणाली – प्रबन्धकीय उपागम, बौद्धिक शैक्षणिक उपागम, मानवीय–सौन्दर्यात्मक उपागम तथा पुनर्निर्माणात्मक उपागम, की चर्चा इस इकाई में की गई है।

इकाई 6, **पाठ्यचर्या में कार्यक्षेत्रों व निर्धारकों** पर केन्द्रित हैं। ये आधार है, पाठ्यचर्या के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक आधार। दर्शन, विस्तृत शैक्षणिक लक्ष्यों तथा अल्पकालिक शैक्षणिक उद्देश्यों को प्रभावित करती है। इन लक्ष्यों से, पाठ्यचर्या में पाठ्यचर्यात्मक विषयवस्तु की पहचान व संगठन होता है। यह दर्शन पाठ्यचर्या की प्रकृति को भी प्रभावित करता है। हम चर्चा करेंगे कि किस प्रकार पाठ्यचर्यात्मक इनपुट देने में आदर्शवादी, यथार्थवादी, प्रयोजनवादी और समकालिक, आदि दार्शनिक चिन्तन भिन्न स्वरूप में बल देते हैं। भारतीय सन्दर्भ में पाठ्यचर्या विकास मे महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा श्री अरविन्द क दार्शनिक विचारों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय आधारों में ये सभी सामाजिक कारक तथा सामाजिक व्यवस्थाएं सम्मिलित है जो पाठ्यचर्या की संरचना तथा विकास को प्रभावित करती है। पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक आधार विविध अधिगम सिद्धान्तों वाले विचार पाठ्यचर्या संरचना तथा विकास को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

इकाई 7, **पाठ्यचर्या नियोजन तथा संरचना** पर केन्द्रित हैं। पाठ्यचर्या नियोजन में लक्ष्य एंव उद्देश्यों के निर्धारण से लेकर वास्तविक अंतरण तक विभिन्न प्रक्रियायें सम्मिलित हैं। इकाई में विभिन्न स्तरों पाठ्यचर्या नियोजन, जैसे राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, संस्थान स्तर, वैयक्तिक शिक्षक के स्तर, आदि की चर्चा की गई है। पाठ्यचर्या संरचित करने के चार प्रमुख उपागम है: विषय आधारित उपागम, विस्तृत क्षेत्र उपागम, समस्या केन्द्रित उपागम तथा शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम, इनकी चर्चा भी की गई है। पाठ्यचर्या संरचना के आधार पर पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया का निर्धारण और निष्पादन होता है। इकाई में पाठ्यचर्या संरचना की प्रक्रिया का भी उल्लेख किया गया है।

इकाई 8, **पाठ्यचर्या नवीकरण** से सम्बन्धित हैं। यह पाठ्यचर्या प्रक्रिया का अन्तिम क्रियाकलाप है, जो सावधानीपूर्वक किए गए पाठ्यचर्या मूल्यांकन के बाद किया जाता हैं। इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के स्रोतों का विस्तृत विवरण है। इकाई उन विधियो तथा प्रतिमानों का वर्णन करती है जिन्हें पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु अपनाया जाता है इनमें से कुछ प्रमुख है: मेट्फिसेल–माइकल प्रतिमान, कॉनग्रुयेन्स – कन्टिजेन्सी प्रतिमान, डिस डिपेन्सी प्रतिमान, सी.आई.पी.वी. प्रतिमान तथा कोनोशियन्सिप प्रतिमान। पाठ्यचर्या का मूल्यांकन कुछ चरणों में किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन में विभिन्न भागीदारों की सहभागिता होती है, मूल्यांकनकर्ता, अध्यापक, नीति निर्धारक, बाहरी विशेषज्ञ तथा विशेषज्ञ समितियां, उनकी चर्चा इसमें की गई है।

PDF Compressor Free Version

इकाई 5 पाठ्यचर्या : अर्थ एवं इसके आयाम

संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 पाठ्यचर्या का अर्थ

5.3.1 पाठ्यचर्या रूपरेखा, पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु एवं पाठ्यपुस्तकों में अंतर

5.4 पाठ्यचर्या के प्रकार

5.5 पाठ्यचर्या के उपागम

5.5.1 व्यवहारिक – तार्किक उपागम

5.5.2 प्रणाली – प्रबंधन उपागम

5.5.3 बौद्धिक – शैक्षिक उपागम

5.5.4 मानवतावादी – सौन्दर्यात्मक उपागम

5.5.5 पुनर्संकल्पित उपागम

5.6 पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की भूमिका

5.7 सारांश

5.8 इकाई के अंत में अभ्यास

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.10 संदर्भ एवं सुझायी गई अध्ययन सामग्री

5.1 प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति प्राकृतिक एवं नियंत्रित दोनों वातावरणों में सीखता है। यद्यपि, किसी भी प्रकार के अधिगम वातावरण में शिक्षार्थी की मुख्य भूमिका है परन्तु नियंत्रित वातावरण में शिक्षार्थी एवं शिक्षक की भूमिका का महत्व बढ़ जाता है।

शिक्षक एवं शिक्षार्थी की शैक्षिक प्रक्रिया में पूर्व निर्धारित अनुभवों को साझा करने में बराबर की भागीदारी है। अधिगम अनुभव शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का तीसरा आयाम है, शिक्षणशास्त्र में इसे 'पाठ्यचर्या' कहते हैं।

इस इकाई में हम इस तीसरे उपागम के विषय में समझेंगे। हम इसके उद्देश्य एवं शिक्षक और शिक्षार्थियों पर इसके प्रभाव को भी जानेंगे। क्योंकि, यह इस खंड की पहली इकाई है इसलिए जिन संप्रत्ययों की यहाँ चर्चा की जाएगी वे अगली इकाइयों को समझने में मदद करेंगे। अनेक परिभाषाओं एवं उपागमों के द्वारा हम पाठ्यचर्या को समझेंगे जो पाठ्यचर्या के मुद्दों पर बल देते हुए व्यक्तिगत विचारों को दर्शाता है।

इस इकाई में, सामाजिक रूप से सार्थक पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु विभिन्न प्रतिनिधिक समूहों की भूमिका पर भी बल दिया गया है। अन्तर्निहित परिवीक्षण एवं पृष्ठपोषण प्रणाली (Feedback Mechanism) पर भी बल दिया गया है।

अतः, इस इकाई में आप पाठ्यचर्या की विभिन्न व्याख्याओं, उत्पत्ति एवं इसकी वृद्धि और विकास को समझेंगे और पाठ्यचर्या में परिवर्तन एवं इसके मानदंड की प्रक्रिया के आधारों

PDF Compressor Free Version

को जानेंगे। आप यह भी समझेंगे कि पाठ्यचर्या किस प्रकार समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को सार्थक बनाने में सहायक है। इसके अतिरिक्त यह भी जानेंगे कि पाठ्यचर्या शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में किस प्रकार सहायक है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पाठ्यचर्या को परिभाषित कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या के संप्रत्यय की विभिन्न प्रकार से विवेचना कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या के विभिन्न उपागमों का अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्यात्मक प्रक्रियाओं एवं मानदंडों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- प्रभावी शिक्षण–अधिगम में पाठ्यचर्या की भूमिका को स्पष्ट करने में सक्षम होंगे।

5.3 पाठ्यचर्या का अर्थ

स्मिथ (1996, 2001), के अनुसार, "पाठ्यचर्या का विचार बिल्कुल नया नहीं है, वरन् जिस तरह हमने इसको लम्बे समय से समझना शुरु किया इसमें बदलाव आया है और इसके अर्थ पर विवाद है।" आइए, इसे समझने और इसका अर्थ पता करने का प्रयास करते हैं।

लैटिन भाषा में "पाठ्यचर्या" का अर्थ है, "घुड़दौड़ का मैदान", जो सारथियों के द्वारा प्रयोग किया जाता है। इसलिए, इसे शैक्षिक संस्थाओं द्वारा अपनाये गये अध्ययन हेतु ऐसे रास्ते के रूप में समझा जा सकता है, जिसे एक निश्चित अवधि में पूरा किया जाना है। इसे पूरा करने हेतु सभी क्रियाकलाप/घटनाएँ, विद्यालय के अंदर एवं बाहर किए जाते हैं। अतः, पाठ्यचर्या को परिभाषित करने के लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इसमें किन–किन घटनाओं को सम्मिलित करना है। इसमें वे सभी अनुभव सम्मिलित हैं जो शिक्षार्थियों को विद्यालय के अंदर एवं बाहर दिए जाते हैं।

ऐसी बहुत–सी परिभाषाएँ हैं जो हमारी समझ को समृद्ध बनाने में सहायक हैं। आइए, इनको समझें।

मार्श एवं स्टेफोर्ड़ (1988) ने पाठ्यचर्या के तीन आयामों पर प्रकाश डाला है, जो निम्न हैं:

- पाठ्यचर्या विषयवस्तु की सूची मात्र नहीं है अपितु इसमें शैक्षिक लक्ष्य व उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन भी शामिल हैं;
- पाठ्यचर्या में अधिगम नियोजन सम्मिलित है; तथा
- पाठ्यचर्या एवं निर्देशों को अलग नहीं किया जा सकता।

डिवी (1902) ने पाठ्यचर्या को शिक्षार्थी के वर्तमान अनुभव से परे ले जाते हुए, सतत् पुनर्निर्माण की संज्ञा दी है जो सत्य की संगठित संस्थाओं द्वारा प्रदर्शित किए जाते हैं जिन्हें हम अध्ययन – विभिन्न अध्ययन को कहते हैं, वे अपने आपमें अनुभव हैं जो एक प्रकार नृजाति के हैं (पृष्ठ 11–12)।

PDF Compressor Free Version

कार्टर वी. गुड (1959) के अनुसार, "पाठ्य विभिन्न पाठ्यचर्या का एक व्यवस्थित समूह अथवा विभिन्न विषयों का व्यवस्थित क्रम है जो एक विशेष क्षेत्र के अध्ययन में निष्णात होने या प्रमाणित करने का साधन है।"

विल्स एवं बॉंडी (1988) के अनुसार, "पाठ्यचर्या को अधिगम प्राप्ति की योजना माना जा सकता है जिसमें शिक्षा को समाज के लिए विभिन्न मान्यताओं के आधार पर अर्थपूर्ण बनाया जाता है, इसकी एक विशेष संरचना है, जिसके माध्यम से योजनाकर्त्ताओं के दृष्टिकोण को शिक्षार्थियों के लिए अधिगम अनुभवों में परिवर्तित किया जाता है। अतः पाठ्यचर्या के दो मुख्य आयाम हैं; एक दृष्टिकोण, व एक संरचना। टैनर एवं टैनर (1980) के अनुसार, "पाठ्यचर्या, विद्यालय (अथवा विश्वविद्यालय) के निर्देशन में व्यवस्थित रूप से विकास करते हुए ज्ञान एवं अनुभव का पुनर्निर्माण है, यह शिक्षार्थी को इस योग्य बनाता है कि वह अपने ज्ञान और अनुभव को और अधिक बढ़ा सके।"

डोल (1988) ने पाठ्यचर्या को विद्यालय की औपचारिक एवं अनौपचारिक विषयवस्तु एवं प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जिसके द्वारा शिक्षार्थी ज्ञान एवं समझ अर्जित करता है, कौशलों का विकास करता है और विद्यालय के निर्देशन में अपने व्यवहार (स्वभाव) में परिवर्तन करता है, प्रशंसा एवं गुणों का विकास करता है।

ब्राउन डी.एफ. (2006) के अनुसार, पाठ्यचर्या में शिक्षार्थी के कौशल विकास, समालोचनात्मक एवं सृजनात्मक तरीके से सोचने की क्षमता का विकास, समस्याओं को हल करना, दूसरों के साथ सहयोग से कार्य करना, संप्रेषण कौशल, प्रभावी तरीके से लिखना, विश्लेषणात्मक पठन, समस्या हल करने हेतु खोज की प्रवृत्ति के विकास से जुड़े सभी विद्यालयी अनुभव समाहित होते हैं।

इस प्रकार, पाठ्यचर्या न तो कोई दस्तावेज है और न ही अनुभवों का एक क्रम है। यह शिक्षार्थी को एक सुदृढ़ अधिगम प्रदान करने की योजना है। यह योजना वहाँ से शुरु होती है जहाँ शिक्षार्थी अधिगम प्राप्त करना प्रारंभ करता है, वह अधिगम के सभी पहलुओं एवं आयामों को प्रगणित करता है जो आवश्यक समझे जाते हैं, वह उनकी आवश्यकता का कारण भी बताता है, उससे प्राप्त होने वाले शैक्षिक लक्ष्यों को बताता है। योजना में निश्चित स्तर के उद्देश्यों को बताया जाता है, पठन सामग्री का निर्धारण और विषयवस्तु की क्रमबद्धता निश्चित की जाती है। यह शिक्षण पद्धतियों के सामान्य सिद्धान्त, मूल्यांकन के तरीके और अच्छी शिक्षण–अधिगम सामग्री के क्षेत्र की भी संस्तुति करता है। वास्तव में, इस प्रकार की योजना एक दस्तावेज के रूप में होती है, यह शिक्षार्थियों के संगठित अनुभवों को आधार मानकर शिक्षक के निर्देशन में लागू की जाती है लेकिन शायद अवधारणाओं के कारण योजना को केन्द्र में रखा जाना चाहिए जबकि दस्तावेज वास्तविक रूप में क्षतिपूरक होता है और अनुभवों के पाठ्यचर्या योजना के क्रियान्वयन रूप होते हैं (नेशनल पोजीशन पेपर, एन.सी.ई.आर.टी., 2006 पाठ्यचर्या)।

बीने एवं अन्य (1986) ने इन सभी में से कुछ प्रमुख परिभाषाओं का संग्रह करके उन्हें चार श्रेणियों में रखा जो पाठ्यचर्या की प्रकृति को स्पष्ट करती हैः

- एक उत्पाद के रूप में पाठ्यचर्या
- एक कार्यक्रम के रूप में पाठ्यचर्या
- एक अपेक्षित शिक्षण–उत्पाद अधिगम के रूप में पाठ्यचर्या
- पाठ्यचर्या–शिक्षार्थियों के योजनाबद्ध अनुभव के रूप में

PDF Compressor Free Version

आइए, इन्हें समझें:

क) **एक उत्पाद के रूप में पाठ्यचर्या :** एक उत्पाद के रूप में पाठ्यचर्या की परिभाषा उस विचार से ली गई है जिसमें विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में एक दस्तावेज तैयार किया जाता है जिसमें पाठ्यचर्यों की एक सूची और उनकी पाठ्यपुस्तक निर्धारित होती है। ये दस्तावेज पाठ्यचर्या के नियोजन एवं विकास के फलस्वरूप बनते हैं।

ख) **एक कार्यक्रम के रूप में पाठ्यचर्या :** इसमें पाठ्यचर्या में विद्यालय द्वारा प्रदत्त पाठ्यचर्यों का अध्ययन समाहित होता है। इसका अर्थ यह भी है कि विद्यालय कार्यक्रम में शिक्षार्थियों की रूचि के विषय होते हैं। पाठ्यचर्या की यह परिभाषा अधिकांश विद्यालयों द्वारा स्वीकार्य होती है। यद्यपि, इस परिभाषा का विस्तृत उद्देश्य अधिगम की प्राप्ति है। अतः पाठ्यचर्या अधिगम प्राप्ति का साधन है। इसमें विषयों के अतिरिक्त अधिगम के अन्य स्रोत भी सम्मिलित होते हैं। यह इस बात की पुष्टि करता है कि विद्यालय में आयोजित प्रत्येक क्रियाकलाप पढ़ने के लिए निर्धारित विषयों के अलावा, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, खेल क्रियाकलाप, कैन्टीन व बस में चर्चा, प्रधानाचार्य कार्यालय में वार्तालाप, आदि अधिगम के स्रोत हैं।

ग) **एक अपेक्षित शिक्षण उत्पाद के रूप में पाठ्यचर्या :** यहाँ पाठ्यचर्या का अर्थ है – "क्या सीखना है"? यह परिभाषा इस बात को स्पष्ट करती है कि क्या सीखना है? कहाँ से सीखना है? और, कैसे सीखना है? यह प्रश्न आवश्यक नहीं है कि हमें क्यों कुछ सीखना है? यहाँ पाठ्यचर्या का अर्थ है – विषय का ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं व्यवहार, जिसे शिक्षार्थी विद्यालय अथवा महाविद्यालय में अर्जित करता है। सामान्यतः विद्यालय वातावरण में शिक्षार्थी अपने सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ सुनियोजित अधिगम अनुभवों पर चर्चा करते हैं। इस परिभाषा के मानने वाले इस बात पर विश्वास करते हैं कि ऐसे अधिगम स्रोत अनुदेशों का चयन करने में सहायक होते हैं। "पाठ्यचर्या" एवं "अनुदेश" शब्दों पर काफी विवाद है। कुछ पाठ्यचर्या निर्माता "अधिगम क्या और कैसे" में काफी अन्तर देखते हैं। ऐसे लोगों का विचार पाठ्यचर्या को "क्या" से जोड़ता है। "पाठ्यचर्या अपेक्षित अधिगम उत्पाद" में मुख्य बात अनुदेशों का परिणाम होता है, न कि साधन अर्थात् क्रियाकलाप निर्देशित विषयवस्तु अथवा अन्य सामग्री। इस परिभाषा के लाभ हैं:

(i) अधिगम उत्पादों का शैक्षिक उद्देश्यों से सीधा सम्बन्ध है।

(ii) अधिगम की मुख्य योजना और इसका कक्षाकक्ष में लागू करना या निष्पादन करना, ये भिन्न स्थितियाँ हैं।

इस परिभाषा का एक दोष यह है कि यह अधिगम का गहन अर्थ नहीं बताती है। अधिगम के दो अंगों "क्या" और "कैसे" को अलग–अलग ढंग से लिया गया है और इस प्रकार यह परिभाषा अधिगम को खंडित योजना के रूप में देखती है।

घ) **शिक्षार्थियों के योजनाबद्ध अधिगम अनुभवों के रूप में पाठ्यचर्या :** उपर्युक्त तीनों परिभाषाओं में एक विचार समान है, कि पाठ्यचर्या शिक्षण–अधिगम स्थितियों से पूर्व नियोजित होता है। यह परिभाषा इनसे अलग है। इसमें शिक्षार्थी के अधिगम अनुभवों पर जोर दिया गया है जोकि नियोजित स्थितियों का परिणाम है। इस परिभाषा का समर्थन करने वाला समूह इस विचार में पूर्ण विश्वास रखता है कि जो कुछ होता है, वह नियोजित ढंग से होता है।

अतः उपर्युक्त तीनों परिभाषाओं के विचार में केवल पाठ्यचर्या का नियोजन मात्र है जबकि वास्तव में पाठ्यचर्या अधिगम के रूप में होती है, जिसे शिक्षार्थी विभिन्न अधिगम अनुभवों के द्वारा प्राप्त करते हैं।

PDF Compressor Free Version

इनके विचार में नियोजित विषयवस्तु की बजाय उसके द्वारा अधिगम प्राप्ति अधिक आवश्यक है। दूसरे शब्दों में अधिगम अनुभवों को ठीक ढंग से नियोजित करना आवश्यक है। पाठ्यचर्या में शिक्षार्थी के अधिगम अनुभवों का विश्लेषण आवश्यक है। एक उदाहरण के लिए, मान लीजिए एक शिक्षक कोई मासिक कार्यक्रम कराता है जिसका उद्देश्य सदस्यों में सहयोग अथवा समूह में काम करने की योग्यता विकसित करना है। प्रत्येक माह शिक्षक शर्मीले एवं कमजोर शिक्षार्थियों को, उनकी तुलना में निम्न ग्रेड देता है जो अधिक बोलते हैं और समूह में अपना दबदबा रखते हैं। इससे पहला समूह हतोत्साहित हो जाता है और कोई भी क्रिया करने से बचता है। इस प्रकार वह समझता है कि उच्च ग्रेड लेना ही आवश्यक है और उसमें अपेक्षित अधिगम प्राप्ति नहीं होगी। इस प्रकार नियोजित तरीके से प्राप्ति नहीं होगी।

इस परिभाषा के निम्नलिखित लाभ हैं:

(i) यह शिक्षार्थी केन्द्रित है और शिक्षण के स्थान पर अधिगम पर अधिक बल देती है।

(ii) यह पाठ्यचर्या को एक व्यापक अर्थ प्रदान करती है।

5.3.1 पाठ्यचर्या रूपरेखा, पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु एवं पाठ्यपुस्तकों में अंतर

अधिकांशतः पाठ्यचर्या रूपरेखा, पाठ्यचर्या व पाठ्यवस्तु में भ्रम रहता है। आइए, इनमें भेद को निम्न प्रकार समझें:

पाठ्यचर्या रूपरेखा: यह एक ऐसी योजना है जो इस बात की व्याख्या करती है कि व्यक्तिगत एवं सामाजिक शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यालयों में किस प्रकार के अधिगम अनुभव प्रदान किए जाए।

पाठ्यचर्या: आप पाठ्यचर्या की विभिन्न परिभाषाओं का अध्ययन कर चुके हैं। आपको यह बात अब स्पष्ट हो जानी चाहिए कि पाठ्यचर्या क्रियाकलापों का एक नियोजन है जिसको विशेष शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बनाया जाता है। जो विषयवस्तु पढ़ाई जानी है, जिन कौशलों और दृष्टिकोणों को विकसित करने हेतु शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित किया जाना है, उनके लिए पाठ्यवस्तु के चयन का पैमाना भी बनाया जाता है, शिक्षक सामग्री व शिक्षण पद्धतियाँ और मूल्यांकन हेतु भी चर्चा की जाती है।

पाठ्यवस्तु: जो विषयवस्तु पढ़ाई जाती है, जो ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियाँ स्तर के अनुसार उद्देश्यों के साथ शिक्षार्थियों में विकसित किये जाते हैं, वह सब पाठ्यवस्तु है।

पाठ्यपुस्तक: जब आप एक शिक्षक के रूप में कक्षाकक्ष में शिक्षार्थियों के साथ काम करते हैं, तब आपको कुछ विषयवस्तु पढ़ानी होती हैं। दूसरे शब्दों में आपके पास एक क्रमबद्ध पाठ्यवस्तु होता है। यही पाठ्यवस्तु प्रायः पुस्तक में निहित है। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक पाठ्यवस्तु का एक भंडार है। इसमें जो कुछ है, उसे पढ़ाना है। यह कक्षाकक्ष में अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियों के लिए एक मार्गदर्शक का काम करती है। पाठ के अंत में मौखिक एवं लिखित प्रश्नों के उत्तर भी पाठ्यपुस्तक से दिए जाते हैं। जब शिक्षक पाठ्यपुस्तक को एक विचार एवं मार्गदर्शक के रूप में प्रयोग करता है तो शिक्षार्थियों को महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है।

PDF Compressor Free Version

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. पाठ्यचर्या को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2. पाठ्यचर्या की परिभाषा को "अध्ययन का एक कार्यक्रम के रूप में" स्वीकार करने के क्या लाभ हैं?

....

....

....

5.4 पाठ्यचर्या के प्रकार

पाठ्यचर्या को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं:

i) मुखर अथवा स्पष्ट वर्णित पाठ्यचर्या

ii) अघोषित अथवा अन्तर्निहित पाठ्यचर्या

iii) शून्य पाठ्यचर्या

आइए, इन सभी के विषय में समझें:

मुखर अथवा स्पष्ट वर्णित पाठ्यचर्या: यह पाठ्यचर्या स्पष्टतया अपेक्षित जानकारी देती है। यह उन सभी पाठ्यगामी एवं पाठ्यसहगामी अनुभवों का समूह है जोकि विद्यालय द्वारा किसी उद्देश्य से नियोजित किए जाते हैं और जिन्हें शिक्षार्थी ग्रहण करते हैं। इसमें ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियाँ, विचारशीलता, मूल्य, जो स्पष्टतया शिक्षार्थियों को दिए जाते हैं, शामिल हैं। यह शैक्षिक व्यवस्था के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। यह वहाँ तक सीमित रहता है, जैसा कि पाठ्यचर्या निर्माणकर्त्ताओं एवं प्रशासकों की समझ होती है।

अघोषित अथवा अन्तर्निहित पाठ्यचर्या: यह प्रायः अलिखित एवं अनपेक्षित होता है, जिससे शिक्षार्थी अवश्य ही अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं। शिक्षार्थियों को पाठ्यगामी क्रियाकलाप विभिन्न प्रकार से संस्थाओं द्वारा प्रदान किए जाते हैं। शिक्षार्थी समाज एवं कक्षा वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। शिक्षार्थियों से चर्चा के दौरान शिक्षक बहुत से ऐसे निर्देश देता है, जो प्रारंभ में नियोजित नहीं किए जाते। शिक्षक शारीरिक संकेतों, जैसे – आँख के इशारे, गर्दन हिलाना, प्रशंसा करना, आदि विभिन्न प्रकार के व्यवहार से शिक्षार्थी को बहुत कुछ सिखाता है। अघोषित पाठ्यचर्या विद्यालय एवं शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों को भी दर्शाता है जो अधिगम के स्रोत हैं। अतः अघोषित पाठ्यचर्या मुखर पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण भाग है। शिक्षार्थी विद्यालय में कार्य करते हुए उपयुक्त तरीके सीखते हैं जो अघोषित पाठ्यचर्या का एक अंग है।

PDF Compressor Free Version

शून्य पाठ्यचर्या (Null Curriculum): विद्यालय में ही सारी जानकारी दे पाना या सब कुछ सिखा देना संभव नहीं है, इसलिए कुछ विषयक्षेत्र जानबूझकर पाठ्यचर्या में सम्मिलित नहीं किए जाते हैं। 'ईजनर' (Eisher) द्वारा इसे शून्य पाठ्यचर्या नाम दिया गया है। उदाहरण के लिए जीवन विद्या, भविष्य की योजना, आदि जो मुखर पाठ्यचर्या में शामिल नहीं है परंतु जीवन में आवश्यक है।

5.5 पाठ्यचर्या के उपागम

किसी भी पाठ्यचर्या के विषय में समझ विकसित करना इस बात पर निर्भर करता है कि पाठ्यचर्या निर्माणकर्त्ताओं ने किस उपागम को माना है। पाठ्यचर्या के लिए अपनाया गया उपागम उसके भविष्य को, उसकी स्थिति को बताता है। ओरंस्टीन व हंकिंस (1988) ने पाठ्यचर्या उपागम की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं:

- पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या की संपूर्ण स्थिति को दर्शाता है अथवा पाठ्यचर्या के आधारभूत स्तंभ, पाठ्यचर्या का ज्ञान क्षेत्र एवं उसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नियमों को दर्शाता है।

- यह पाठ्यचर्या के विकास एवं निर्माण के विचार को दर्शाता है, पाठ्यचर्या नियोजन में शिक्षार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्या विशेषज्ञों की भूमिका पर प्रकाश डालता है और उन महत्वपूर्ण मुद्दों को बताता है जिन्हें जाँचने की आवश्यकता है। अधिकांशत: यह विस्तृत परिप्रेक्ष्य में उन सैद्धान्तिक स्थितियों पर निर्भर करता है जो विद्यालयों अथवा महाविद्यालयों में शैक्षिक व्याख्यानों की रचना, विकास एवं उन्हें लागू करने में अपनाई जाती हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य उन सैद्धान्तिक स्थितियों को स्पष्ट करने से है जिन्होंने पाठ्यचर्या के संप्रत्यय एवं प्रक्रिया को प्रभावित किया है।

यद्यपि, आप विभिन्न लेखकों के द्वारा अपनाए गए उपागमों की चर्चा कर सकते हैं, लेकिन इस समय हम आरंस्टीन एवं हंकिन्स (1988) द्वारा सुझाए गए पाँच उपागमों पर चर्चा करेंगे। इनकी चर्चा इन उपभागों में की गई हैं:

5.5.1 व्यवहारिक – तार्किक उपागम

यह उपागम तार्किक–वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है जिसका उद्‌गम बीसवीं सदी में व्यवहार विज्ञान के प्रभुत्व में हुई खोजों के द्वारा हुआ है। इस उपागम को तार्किक, प्रत्यक्षवादी, संकल्पनात्मक, अनुभवतावादी, प्रयोगवादी, तार्किक, वैज्ञानिक एवं उद्योगतंत्रवादी भी कहते हैं। इस उपागम को मानने वाले इस बात में विश्वास रखते हैं कि पाठ्यचर्या एक क्रमबद्ध एवं संरचनात्मक क्रिया है। वे इस बात पर बल देते हैं कि कोई भी क्रिया लक्ष्य एवं उद्देश्यों से प्रारंभ होकर विषयवस्तु को क्रमबद्ध करने या अधिगम अनुभवों को क्रमबद्ध करने और फिर अधिगम उपलब्धियों का मूल्यांकन (शिक्षार्थी की उपलब्धियाँ) विषयवस्तु एवं अनुभवों के निष्पादन पर निर्भर करती है।

व्यवहार विज्ञान उपागम व्यवहारगत उद्देश्यों की ओर उन्मुख है। इसका अर्थ है कि अध्यापन के पश्चात् शिक्षार्थियों में से उद्देश्य उनके व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप से उतरते दिखाई दें। इस उपागम की इस बात के लिए आलोचना होती है कि यह निम्न स्तर के उद्देश्य प्राप्ति जैसे – जोड़ना, स्मरण, आदि के लिए तो सही है परंतु उच्च स्तरीय चिन्तन कौशलों (विवेचनात्मक विश्लेषण, सम्प्रेषित सोच) के लिए अव्यवहारिक है।

PDF Compressor Free Version

5.5.2 प्रणाली – प्रबंधन उपागम

इस उपागम के अनुसार विद्यालय को एक सामाजिक प्रणाली के रूप में देखा जाता है। विद्यालय द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रणालियाँ मिलकर काम करती हैं। विद्यालय के विभिन्न घटक इस प्रकार हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ और वे दूसरे लोग जो कुछ विशेष नियमों एवं मानदंड़ों के अंतर्गत इनसे परस्पर अंतःक्रिया करते हैं। इस प्रकार यह उपागम कार्यक्रम, कार्य सूचियाँ, विधियाँ एवं युक्तियाँ, मानवीय सम्बन्धों एवं निर्णय लेने पर केन्द्रित है (आरंस्टीन एवं हंकिन्स, 1986)। व्यावहारिक तार्किक उपागम की तरह इस उपागम का ध्यान उद्देश्यों, विषयवस्तु, अधिगम अनुभवों का मूल्यांकन, इत्यादि न होकर, विद्यालय की विभिन्न प्रणालियों, जो योजना एवं लोगों द्वारा बनाई गई नीतियों पर आधारित हैं, के प्रबंधन पर होता है। इसमें पाठ्यचर्या रचना एवं प्रणाली प्रबंधन सम्मिलित है।

जहाँ प्रबंधनात्मक परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों एवं नीतियों के संगठन पर बल देता है वहीं प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य में तीन मुख्य घटक हैं – अभियांत्रिकी, अवस्था एवं संरचनाएँ। अभियांत्रिकी में वे प्रक्रियाएँ हैं, जिनसे अभियंता, जैसे कार्यालय प्रमुख, निदेशक, अधीक्षक एवं समन्वयक पाठ्यचर्या योजना बनाते हैं। अवस्थाएँ विकास करने, डिजाइन तैयार करने एवं मूल्यांकन करने जैसे कार्य को पूरा करती है। संरचना, विषयवस्तु, पाठ्यचर्या, इकाई एवं पाठ से सम्बन्धित है।

5.5.3 बौद्धिक – शैक्षिक उपागम

इस उपागम का उद्गम जॉन डिवी, हेनरी मॉरिसन एवं बॉयड बोडे के बौद्धिक कार्यों से हुआ जो 1930–1950 के बीच एक लोकप्रिय उपागम बन गया। यह पाठ्यचर्या के मुख्य प्रचलनों, स्थितियों एवं संप्रत्यय पर बल देता है एवं उसका विश्लेषण करती है। यह विद्यालय की गतिविधियों एवं शिक्षा को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखता है और शिक्षा को ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से देखता है। यह मुख्यतः पाठ्यगामी क्रियाओं एवं सिद्धान्तों पर जोर देता है, जो परंपरागत, विश्व कोश, बौद्धिक, ज्ञान आधारित उपागम है (आरंस्टीन एवं हंकिन्स, 1993)।

5.5.4 मानवतावादी – सौन्दर्यात्मक उपागम

व्यावहारिक – तार्किक संगत उपागम के विपरीत यह प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, रूचियों, एवं योग्यता पर बल देता है। प्रत्येक शिक्षार्थी अपने आपमें अद्वितीय है एवं पाठ्यचर्या का निर्माण एवं विकास इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं चिंतन एवं स्व–विकास में दिलचस्पी लेता है। मानवतावादी सिद्धान्तों से निकलने वाला यह उपागम स्वाभिमान, अधिगम में स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत पूर्णता के मूल्य पर बल देता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच परस्पर चर्चा से समस्या समाधान और अन्वेषण प्रवृत्ति पर बल देता है। आपसी सहयोग से मिलकर, स्वतंत्र रूप से अधिगम, छोटे–छोटे समूहों में शिक्षण प्राप्त करना, कुछ ऐसी पाठ्यचर्या युक्तियाँ हैं जो इस उपागम से मिलती हैं। इस उपागम में कला, संगीत एवं साहित्य जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं जिससे शिक्षार्थी का बौद्धिक विकास की तुलना में मानवीय विकास अधिक होता है।

5.5.5 पुनर्संकल्पित उपागम

इस विचारधारा के मानने वालों ने पाठ्यचर्या के विकास में किसी प्रकार से तकनीकी ज्ञान के द्वारा कोई योगदान नहीं दिया है अपितु एक नए परिप्रेक्ष्य को जन्म दिया है जो विषयात्मक, राजनीतिक एवं आदर्शवादी प्रकृति का है। इस परिप्रेक्ष्य की जड़ें सामाजिक

PDF Compressor Free Version

संक्रियतावादी एवं पुनर्संरचनावादी लोगों जैसे काउंट, रूग एवं बेंजामिन के दर्शनशास्त्र में है। वे पाठ्यचर्या के परम्परागत वैज्ञानिक और तर्कसंगत विचारों को चुनौती देते हैं। वे शिक्षा के नैतिक और आदर्शवादी मुद्दों पर बल देते हैं और समाज की आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं के निर्माण पर बल देते हैं। इसका मुख्य सिद्धान्त है कि शिक्षार्थी जितना अधिक अपने आपको समझेगा, उतना ही अपने चारों ओर के वातावरण को समझेगा। इसलिए पाठ्यचर्या विकास को इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति और समाज के समकालीन ढाँचे से जुड़ना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. शून्य पाठ्यचर्या क्या हैं?

....

....

....

4. मानवतावादी उपागम के अनुसार पाठ्यचर्या विकास का मुख्य उद्देश्य क्या है?

....

....

....

5.6 पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की भूमिका

मुख्य रूप से शिक्षक ही पाठ्यचर्या को कक्षाकक्ष में क्रियान्वित करता है। शिक्षकों की भूमिका पाठ्यचर्या निष्पादन एवं मूल्यांकन में परिभाषित है। यदि शिक्षक को पाठ्यचर्या विकास में सम्मिलित किया जाए तो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया और अधिक प्रभावी होगी। पाठ्यचर्या में सुधार लाने हेतु शिक्षकों की भूमिका निर्णायक हो सकती है। ड्रोल (1996) ने तीन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है जिनके द्वारा शिक्षक पाठ्यचर्या सुधार में प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं:

i) शिक्षार्थियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखकर,

ii) व्यक्तिगत अध्ययन में व्यस्त रहकर; और

iii) अन्य शिक्षकों के साथ परस्पर चर्चा करते हुए उनके पाठ्यचर्या सम्बन्धी अनुभवों को साझा करके।

इन तीन कारकों से वे अपनी सोच और कौशल का प्रयोग करके अधिगम अनुभवों की गुणवत्ता को सुधार सकते हैं। इन अनुभवों को वे शिक्षार्थियों को प्रदान करते हैं। शिक्षक शिक्षार्थियों में समझ और सहनशीलता बढ़ाते हुए, जिज्ञासा को जगाते हुए और स्वयं चिंतन के लिए प्रेरित करते हुए शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयास करते हैं। शिक्षण का तरीका भी पाठ्यचर्या निष्पादन को प्रमुख रूप से प्रभावित करता है। अतः शिक्षकों को पाठ्यचर्या योजना, विकास, निष्पादन, मूल्यांकन एवं संशोधन की प्रक्रिया में शामिल किया

PDF Compressor Free Version

जाए (देवल, 2004)। एक शिक्षक की शिक्षण विधि भूमिका अधिगम उत्पन्न कर सकती है या दूसरी तरफ बच्चे की जिज्ञासा को जगा सकती है।

शिक्षकों का पाठ्यचर्या विकास में शामिल होना और पाठ्यचर्या से अवगत होना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक सार्थक और सटीक बनाता है। जब एक बार पाठ्यचर्या के मूल बिन्दु एवं निर्देशों की भूमिका शिक्षक की समझ में आ जाती है जो वह अलग तरीके से सोचना प्रारंभ कर देता है। इस प्रकार से मूल्यांकन के तरीके एवं तकनीकी, पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के साथ अधिक मेल खाएँगे।

अंग्रेजी अथवा गणित का शिक्षक अपने आपको केवल विषय के शिक्षण से ही सम्बन्धित नहीं रखेगा। विद्यालय के शिक्षण क्षेत्र में वह अपने विषय को एक विस्तृत रूपरेखा में प्रस्तुत करेगा। यदि शिक्षक इस बात में विश्वास करता है कि शिक्षण अधिगम का उद्देश्य अर्थपूर्ण अनुभवों का निर्माण करना है तब वह शिक्षार्थियों की सोच इस प्रकार विकसित करेगा कि वे वास्तविकता के समीप रह सकें। शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में शिक्षक की मुख्य भूमिका है और पाठ्यचर्या निर्माण और उसकी जानकारी हेतु भागीदारी से भिन्नता के बजाय अपनी चतुराई से प्रोत्साहित करेगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. एक शिक्षक के लिए पाठ्यचर्या नियोजन एवं विकास से जुड़े मुद्दों का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

....

....

....

5.7 सारांश

इस इकाई में हमने "पाठ्यचर्या" पद की परिभाषा पर चर्चा की। पाठ्यचर्या पद की विभिन्न व्याख्याओं की जाँच की। संदर्भ के आधार पर पाठ्यचर्या के अध्ययन कार्यक्रम, अपेक्षित अधिगम प्राप्ति उत्पाद और शिक्षण अनुभवों का नियोजन के रूप में व्याख्या की गई। हमने उन विभिन्न पाठ्यचर्या उपागमों पर चर्चा की जिन्हें पाठ्यचर्या निर्माताओं ने स्वीकार किया है। एक पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या की रूपरेखा और विकास के बारे में पाठ्यचर्या निर्माता के समग्र परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण को दर्शाता है। जिन उपागमों पर चर्चा की गई वे हैं – व्यावहारिक तार्किक, प्रणाली, प्रबंधनात्मक, बौद्धिक–शैक्षिक, मानवतावादी, सौन्दर्य प्रधान, पुनःसंकलित। इस इकाई में हमने पाठ्यचर्या सम्बन्धीय विकास यात्रा और पाठ्यचर्या संप्रत्यय पर इसके प्रभाव की रूपरेखा प्रस्तुत की। हमने अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय संदर्भ में पाठ्यचर्या विकास पर चर्चा की। पाठ्यचर्या निष्पादन में शिक्षक की भूमिका पर भी प्रकाश ड़ाला। इकाई के अंत में पाठ्यचर्या में बदलाव की प्रक्रिया और पाठ्यचर्या के बदलाव व सुधार को कैसे लागू किया जाए, इन बातों पर चर्चा की गई। अंतर्निहित अनुश्रवण प्रक्रिया पर ध्यान दिया गया जिससे यह निश्चित किया जा सके कि जैसा सोचा गया है, वैसा ही पाठ्यचर्या निष्पादन हो गया है।

PDF Compressor Free Version

5.8 इकाई के अंत में अभ्यास

1. शिक्षकों, शिक्षार्थियों, शैक्षिक प्रशासकों एवं शिक्षार्थियों के अभिभावकों के साथ साक्षात्कार करके जानकारी करें कि "पाठ्यचर्या" पद से वे क्या समझते हैं?

2. विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) का विश्लेषण करें और इसकी मुख्य विशेषताओं का पता लगाएँ।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. कुछ नियोजित क्रियाओं का समूह जिन्हें एक विशेष लक्ष्य/लक्ष्यों या उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पढ़ाया जाता है और ज्ञान, कौशल व अभिवृत्तियों के विकास के लिए शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके साथ पाठ्यवस्तु का चयन, शिक्षण–अधिगम, सामग्री एवं मूल्यांकन सम्बन्धी जानकारी निहित होती है।

2. "पाठ्यचर्या एक अध्ययन कार्यक्रम के रूप में" परिभाषा के निम्नलिखित लाभ हैं:

   क) पाठ्यचर्या को संदर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

   ख) निर्धारित पठन सामग्री के अतिरिक्त विद्यालय में और कई प्रकार से अधिगम होता है।

3. यह उस पाठ्यचर्या को इंगित करता है जो पढ़ाया नहीं जाता है। इसका अर्थ यह है कि कुछ बातें पूर्व निर्धारण के बिना भी सीखी जा सकती हैं।

4. मानवतावादी उपागम का उद्देश्य ऐसी पाठ्यचर्या से है जिसे शिक्षार्थी वास्तविक जीवन में प्रयोग में ला सकें। इसके द्वारा विद्यालय में प्राप्त शैक्षिक अनुभव शिक्षार्थी को एक प्रभावी मानव बना सकें।

5. पाठ्यचर्या प्रक्रिया के अध्ययन से शिक्षक को इसके अंतर्गत संप्रत्ययों की समझ विकसित होती है। पाठ्यचर्या के अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। योजनाबद्ध शिक्षण अधिगम शिक्षक के शिक्षण को अधिक प्रभावी तरीकों द्वारा सार्थक एवं सटीक बनाता है।

5.10 संदर्भ एवं सुझावित अध्ययन सामग्री

आर्मस्ट्रॉंग, डी.जी. (1989): *डेवलेपिंग एंड डाक्यूमेंटिंग दि करीकुलम,* बोस्टन: एलियन एवं बीकॉन, इंक।

ब्रूनर, जे.एस. (1960): *दि प्रोसेस ऑफ एजुकेशन,* हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

लीनी, जे. ए. (एवं अन्य), (1986): *करीकुलम, प्लानिंग एंड डेवलेपमेंट,* लंदन:एलियन एवं बीकॉन।

कार्टर, वी. गुड (1973): *डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन,* न्यूयॉर्क: मैकग्रा हिल।

केसवेल, हालिज, एल. (1966): "इमर्जेंस ऑफ दि *करीकुलम,* एज ए फील्ड ऑफ प्रोफेशनल वर्क एंड स्टडी", इन हेलन पी. रोबिनसंन, (संपा.), *प्रीसीडेंट्स एंड प्रोमीसिजस इन दि कैरीकुलन्ज़ फील्ड,* न्यू यॉर्क: टीचर्स कालेज प्रेस।

PDF Compressor Free Version

देवल, ओ. एस. (2004): "नैशनल कैरीकुलम" इन जे.एस. राजपूत (संपा.) *इनसाइकोलॉपीडिया ऑफ एजुकेशन,* नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी।

डॉल, रोनाल्ड, सी. (1996), *कैरीकुलम इम्प्रूवमेंट: डिसिजन मेकिंग एंड प्रोसेस,* (छठा संस्करण) बोस्टन: एलियन एवं बीकॉन।

इसनर, ई. डब्ल्यू. (1970): दि एजुकेशनल इमेजिनेशन, न्यूयॉर्क: मैकमिलन

जॉनसन, एम. (1967): "डेफिनेशन्स एंड मॉडल्स इन कैरीकुलम थ्योरी", *एजुकेशनल थ्योरी* (अप्रैल)

एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *नैशनल केरिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन,* नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।

ओलिवा, पीटर एफ. (1988): *डेवलेपिंग दि कैरीकुलम,* (द्वितीय संस्करण), लंदन: स्कॉट, फोरमेन

ओर्नस्टेन, ए. सी. एवं हंग्किन्स, एफ. पी. (1988): *कैरीकुलम, फाउण्डेशन्स, प्रिंसिपल्स एंड इश्यूज,* न्यू जर्सी, यू.के.।

शार्पे, डी.के. (1988): *कैरीकुलम ट्रेडिशन एंड प्रैक्टिसेस,* लंदन: राउटलेज

स्टेनहाउस, ले. (1975): *एन इंट्रोडक्शन टू कैरीकुलम रिसर्च एंड डेवलेपमेंट,* लंदन: हिनमेन।

टेनर डेनियल एंड टेनर लायूरिल एन. (1980): कैरीकुलम डेवलेपमेंट: थ्योरी इनटू प्रैक्टिस, न्यूयॉर्क: मैकमिलन

विलयर, डी.के. (1976): कैरीकुलम प्रोसेस, लंदन: यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन।

वेल्स, जॉन एवं बूंदी, जोसफ (1989): कैरीकुलम डेवलेपमेंट, ओहियो: मैरिल पब्लिशिंग कंपनी।

PDF Compressor Free Version

इकाई 6 पाठ्यचर्या : कार्यक्षेत्र एवं निर्धारक तत्व

संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 पाठ्यचर्या के कार्य क्षेत्र

6.4 पाठ्यचर्या के निर्धारक तत्व

6.4.1 दार्शनिक उन्मुखीकरण

6.4.2 मनोवैज्ञानिक विचार

6.4.3 सामाजिक विचार

6.4.4 आर्थिक विचार

6.4.5 पर्यावरणीय विचार

6.4.6 संस्थागत विचार

6.4.7 सांस्कृतिक विविधता

6.4.8 शिक्षक सम्बन्धी विचार

6.5 सारांश

6.6 इकाई के अंत में अभ्यास

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.8 संदर्भ पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने पाठ्यचर्या के अर्थ एवं संप्रत्यय पर चर्चा की है। पाठ्यचर्या के संप्रत्यय पर चर्चा के पश्चात् अब हम पाठ्यचर्या के आधार (संस्थापना) का अध्ययन करते हैं।

जैसा कि आप जानते हैं कि पाठ्यचर्या का निर्माण/विकास अलगाव की परिस्थिति में नहीं किया जा सकता। समाज की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पर्यावरण कारक, मुद्दे अर्थपूर्ण पाठ्यचर्या बनाने में सहायक होते हैं। इस इकाई में हम उन सभी संभव विचारों की समीक्षा करेंगे जिन्हें शिक्षार्थियों हेतु पाठ्यचर्या बनाते समय याद रखना आवश्यक है।

जब हम पाठ्यचर्या का विकास करते हैं तो मुख्यतया उन विचारों पर निर्भर करते हैं जो निम्न तीन क्षेत्रों से उत्पन्न होते हैं – दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान। ये परंपरागत क्षेत्र पाठ्यचर्या के आधार माने गए हैं इसलिए इन्हें समझना पाठ्यचर्या अध्ययन के लिए आवश्यक हैं।

दर्शनशास्त्र प्रकृति एवं जीवन के अभिप्राय से सम्बन्धित है। यह मानव की प्रकृति के बारे में जानकारी प्राप्त करता है, उन जीवन मूल्यों का निर्धारण करता है जो उनके जीवन को आकार प्रदान करते हैं, और शिक्षा की भूमिका और अभिप्राय का निर्धारण करता है। दर्शनशास्त्र का व्यक्तिगत बोध शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत विचारों और विभिन्न अधिगम गतिविधियों को बहुत अधिक प्रभावित करता है। पाठ्यचर्या समाज के लिए उपयोगी/सार्थक होनी चाहिए। अतः सामाजिक घटकों का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि ये शिक्षार्थियों के

PDF Compressor Free Version

वर्तमान एवं भविष्य से जुड़ी विशेषताओं की आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। ऐसा करना पाठ्यचर्या को सामाजिक स्तर पर सार्थक बनाने में सहायक है। मनोविज्ञान मानव की आधारभूत आवश्यकताओं, अभिवृत्तियों एवं व्यवहार से सम्बन्ध रखता है। यह शिक्षार्थियों की प्रकृति एवं विशेषताओं को समझने में सहायक है। अतः मनोविज्ञान पाठ्यचर्या योजनाकारों की ऐसी पाठ्यचर्या सामग्री को पहचानने में मदद करता है जो शिक्षार्थियों की प्रगति एवं विकास में लाभदायक हों।

इस इकाई में हम इन्हीं आधारभूत क्षेत्रों की चर्चा करेंगे और यह समझेंगे कि पाठ्यचर्या नियोजन को ये क्षेत्र किस प्रकार प्रभावित करते हैं, और अंत में किस प्रकार शिक्षार्थियों को विविध व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभव प्रदान करते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पाठ्यचर्या के कार्यक्षेत्रों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अंतर्संबंध स्पष्ट कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या की संरचना एवं योजना के निर्धारकों को समझ सकेंगे; और
- पाठ्यचर्या के निर्धारकों के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे।

6.3 पाठ्यचर्या के कार्यक्षेत्र

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पाठ्यचर्या संरचना के चार मुख्य अवयव हैं – लक्ष्य एवं उद्देश्य, विषयवस्तु की संरचना, अधिगम अनुभवों को लागू करना; मूल्यांकन उपागम (आरंस्टीन एवं हंकिन, 1988)। पाठ्यचर्या की संरचना इन चारों के व्यवस्थित रूप पर निर्भर करती है प्रायः किसी एक अवयव को दूसरे की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। अधिकांश पाठ्यचर्या संरचना विषयवस्तु पर अधिक बल देती हैं, कुछ अन्य शिक्षण क्रियाक लापों पर अधिक बल देती हैं। पाठ्यचर्या संरचना के इन चारों अवयवों का अन्तः सम्बन्ध गिलेज एवं अन्य (1942) द्वारा निम्न चित्र 6.1 में प्रदर्शित किया गया है। इन्होंने अधिगम अनुभवों के स्थान पर विधि एवं विस्तार पर बल दिया गया है।

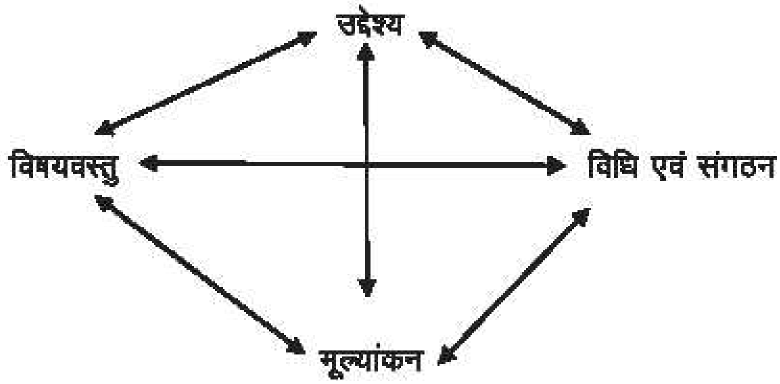

चित्र 6.1: संरचना के घटक

स्रोतः गिलेज एवं अन्य (1942)

इस प्रकार एक पाठ्यचर्या निर्माणकर्ता चार मूल प्रश्नों से प्रभावित होता है – क्या किया जाना अपेक्षित है? क्या विषयवस्तु सम्मिलित की जानी है? किन युक्तियों, संस्थानों, एवं क्रियाकलापों का प्रयोग करना है? संरचना का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा? गिलेज एवं अन्य (1942) द्वारा दी गई विचारधारा यह सुझाव देती है कि ये चारों अवयव लगातार

PDF Compressor Free Version

आपस में अन्तःक्रिया करते रहते हैं अर्थात एक अवयव का निर्माण दूसरे अवयवों द्वारा प्रभावित होता है।

इसमें वे सभी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक बिन्दु (मुद्दे) सम्मिलित होते हैं जिनका प्रभाव शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के चुनाव, विषयवस्तु के संगठन, विषयवस्तु के निष्पादन और मूल्यांकन के लिए निर्णय लेने में भी सहायक है।

किसी भी पाठ्यचर्या के चार मूल आधार हैं – सामाजिक प्रभाव, मानव विकास, अधिगम की प्रकृति, ज्ञान एवं की प्रकृति। आइए, इनके महत्व एवं प्रभाव को समझें।

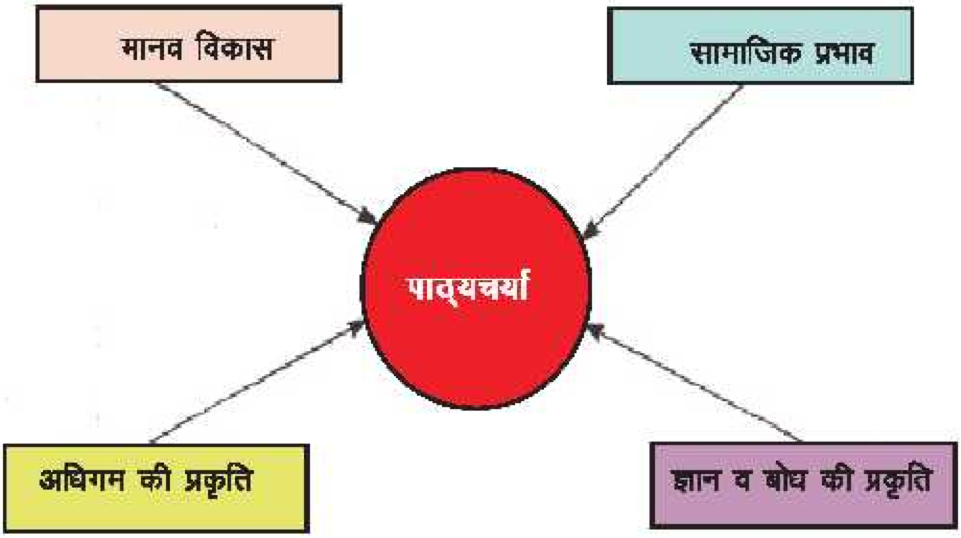

चित्र 6.2: पाठ्यचर्या के आधार

क) सामाजिक प्रभावः

किसी भी समाज में सामाजिक प्रभाव विद्यालय की गतिविधियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। ये सामाजिक प्रभाव शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों, सांस्कृतिक समानता एवं भिन्नता, समाज द्वारा डाले गए दबाव, सामाजिक परिवर्तन, भावी योजना और सांस्कृतिक प्रत्ययों में झलकते हैं। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों वाला देश है, इसका एक अभिलेखित इतिहास है, सामाजिक प्रभाव चौंकाने वाली भिन्नता के साथ–साथ जटिलताओं को दर्शाते हैं। विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रभाव शिक्षा की कार्यवृत्त (एजेंडा) को निर्धारित करते हैं। पाठ्यचर्या में समकालीन सामाजिक प्रभाव झलकता है और यह समाज निर्माण में सहायता करती हैं इस संदर्भ का राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986 एवं संशोधित, 1992) विशेष उल्लेख करती है:

"राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर निर्भर होगी जिसमें एक समान रूपरेखा के साथ–साथ कुछ लचीले अवयव होंगे। सामान्य रूपरेखा में भारत की स्वतंत्रता के आंदोलन का इतिहास होगा, संवैधानिक दायित्व होंगे, तथा कुछ ऐसी विषयवस्तु होगी जो राष्ट्रीय एकता को बनाए रखें। ये तत्व विषयों के अंतर्गत होंगे और मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु संरचित किए जाएँगे, जैसे –भारत की समान सांस्कृतिक विरासत, समतावाद, प्रजातंत्र तथा धर्मनिरपेक्षता, लिंग समानता, पर्यावरण सुरक्षा, सामाजिक विषमताओं को दूर करना, छोटे परिवार का महत्व तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करना। सभी शैक्षिक कार्यक्रम पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के आधार सख्ती से लागू किए जाएँगे।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986, 3 – 4)।

ख) मानव विकास

मानव विकास के बहुत से पहलुओं में से कुछ विद्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले संरचित पाठ्यचर्या द्वारा और कुछ समाज द्वारा पूरे किए जाते हैं। मानव विकास के क्षेत्र में विस्तृत शोध एवं अध्ययन हुआ है। इन अध्ययनों ने हमें बच्चों के बारे में नए सिरे से सोचना

PDF Compressor Free Version

सिखाया है, जैसे बच्चों की विकास अवस्थाएँ, उनका सोचने का तरीका, उनकी जरूरतें एवं रूचियाँ। बच्चे कई अर्थों में वयस्कों से भिन्न होते हैं। वयस्क बनने से पहले इनकी विकास की विभिन्न अवस्थाओं में न केवल मात्रात्मक बल्कि गुणात्मक अन्तर भी स्पष्ट दिखाई देता है। इनका कई बाल मनोवैज्ञानिकों ने प्रशंसनीय वर्णन किया है इनमें जीन लिगेट मुख्य हैं। मानव विकास का ज्ञान पाठ्यचर्या विकास में शिक्षक की मदद करता है। इस प्रकार से विकसित पाठ्यचर्या में एक ही आयु समूह व भिन्न–भिन्न आयु समूह के बच्चों को समझने हेतु विकास के विभिन्न सोपानों को सम्मिलित किया जाना चाहिए.

ग) अधिगम प्रकृति

अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर शोध हुए हैं, फिर भी हम इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप से नहीं समझ पाए हैं। इसी कारण अधिगम के विभिन्न सिद्धान्त बने हैं, इनमें से व्यवहार विज्ञान एवं संज्ञानात्मक सिद्धान्त मुख्य हैं। ये सिद्धान्त पाठ्यचर्या विकास एवं नियोजन के लिए विभिन्न उपागमों की सिफारिश करते हैं। पाठ्यचर्या विशेषज्ञ इन सिद्धान्तों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं कर सकते क्योंकि इनकी सोच वैज्ञानिक है।

घ) ज्ञान एवं अनुभूति की प्रकृति

ज्ञान एवं अनुभूति (सीखना) की प्रकृति पाठ्यचर्या विकास का एक और आधार है। सूचना एवं ज्ञान में क्या अंतर है? बच्चे सूचना को ज्ञान में किस प्रकार परिवर्तित करते हैं? कौन सा ज्ञान अधिक सार्थक है? चिन्तन प्रक्रिया की प्रकृति क्या है? विभिन्न चिन्तन प्रक्रियाएँ और अनुभूति प्रक्रिया कौशल किस प्रकार एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं? ऐसे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने में शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों, शोधकर्त्ताओं एवं दार्शनिकों की बहुत रूचि है। इन प्रश्नों के उत्तर पाठ्यचर्या में ज्ञान को संगठित करने में शिक्षाशास्त्रियों की मदद करते हैं। अब यह सिद्ध हो चुका है कि प्रत्येक शिक्षार्थी का सीखने का तरीका एवं गति अलग–अलग होती है। अतः एक अच्छी पाठ्यचर्या में ऐसे विकल्प होने चाहिए जिससे सभी प्रकार के बच्चे अधिगम प्राप्त कर सकें।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. पाठ्यचर्या रूपरेखा के अवयवों की सूची बनाइए।

....

....

....

2. पाठ्यचर्या योजना तैयार करने में ज्ञान एवं अनुभूति की क्या भूमिका है?

....

....

....

6.4 पाठ्यचर्या के निर्धारक तत्व

किसी भी स्तर के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण करने के कई कारक होते हैं। इन कारकों को समझना आवश्यक है क्योंकि इनसे पाठ्यचर्या विकास की दिशा का पता चलता है। आइए, इन निर्धारक तत्वों पर चर्चा करें और उन्हें लागू करने की समझ विकसित करें।

PDF Compressor Free Version

6.4.1 दार्शनिक उन्मुखीकरण

स्मिथ स्टैनले एवं शोरेस (1957) के अनुसार, शैक्षिक उद्देश्यों का बनाने एवं इनकी पुष्टि में, ज्ञान के चुनाव एवं संगठन में तथा अधिगम क्रियाओं के निर्धारण में दर्शनशास्त्र बहुत आवश्यक है। शैक्षिक लक्ष्य, मूल्यों के ऐसे कथन हैं जिन्हें दर्शनशास्त्र से लिया गया है, ये साधन प्रक्रिया को बताते हैं और दार्शनिक विकल्पों को दर्शाते हैं व प्रक्रिया का अअन्त तथ्यों, अवधारणाओं एवं ज्ञान के सिद्धान्त अथवा शिक्षार्थी द्वारा धारण किए गए व्यवहार को दर्शाते हैं।

आरंस्टीन एवं हंकिन (1988) के अनुसार, दर्शनशास्त्र का कार्य या तो पाठ्यचर्या विकास का आधार होता है या पाठ्यचर्या विकास का आरंभिक बिन्दु होता है या अन्य कार्यों के साथ एक स्वतंत्र रूप से कार्य करना होता है। यह कारण प्रभाव के आपसी सम्बन्धों को दर्शाता है। अपने विचार को दूसरों के विचारों से प्रश्न रूप से देखना, मूल्यों और विश्वास को स्पष्ट करना व निर्णय लेने के लिए रूपरेखा तैयार करके उन निर्णयों पर अमल करना दर्शनशास्त्र का काम है।

विभिन्न समर्थक दर्शनशास्त्र को पाठ्यचर्या से विविध तरीकों से जोड़ते हैं, प्रथम विचारक जॉन डिवी जिनका सम्बन्ध विद्यालय से है, इस बात से संतुष्ट है कि "दर्शनशास्त्र को शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त के रूप में परिभाषित किया जा सकता है", और दर्शनशास्त्र का कार्य "विद्यालयों के उद्देश्य एवं विधियों की रूपरेखा तैयार करना है"। विद्यालय की दूसरी सोच टेलर (1949) द्वारा बताई गई है, उनके अनुसार, दर्शनशास्त्र शैक्षिक लक्ष्यों को प्रभावित करने वाले पाँच मुख्य अवयवों में से एक है। तथा कुछ अन्य कारकों से जुड़ा है, जैसे कि – समकालीन जीवन के अध्ययन, विषय विशेषज्ञों के सुझाव एवं अधिगम मनोविज्ञान, इत्यादि। आइए, अब इस पर चर्चा करें कि विभिन्न दर्शनशास्त्र पाठ्यचर्या को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

i) आदर्शवाद

आदर्शवाद के अनुसार वस्तु एक भ्रम है, संसार के होने का मुख्य कारण नैतिकता एवं आध्यात्मिकता है। इसके अनुसार सच्चाई एवं मूल्य निरपेक्ष हैं, समयविहीन और सर्वव्यापी हैं। मस्तिष्क एवं विचार का संसार स्थायी, नियमित एवं क्रमागत हैं; यह एक निश्चित क्रम को दर्शाता है।

आदर्शवाद के अनुसार ज्ञान का अर्थ है – मन में स्थित नवीनतम विचारों पर पुनः विचार करना। अतः यह शिक्षक का दायित्व है कि इस छुपी हुई प्रतिमा को बच्चे के चेतन मस्तिष्क में लाए। इसका अर्थ है कि शिक्षक एक आदर्श की भूमिका निभाए जिससे ये मूल्य स्थायी रूप से शिक्षार्थियों में आ सकें। इसके अनुसार विद्यालय पूर्ण रूप से संरचित हो और केवल उन्हीं विचारों की वकालत करें जो शिक्षार्थियों में स्थायी मूल्यों का निर्माण करें। निर्देशात्मक सामग्री की प्राथमिकता विषय पर निर्भर करती है, जो मानवता की सांस्कृतिक विरासत समाहित करता है। आरस्टीन के अनुसार तीन जरूरी कौशल (3Rs) और आवश्यक विषय (अंग्रेजी, अंकगणित, विज्ञान, इतिहास और एक भाषा) निश्चित ही पाठ्यचर्या के अंग के रूप में होने चाहिए।

ii) यथार्थवाद

यथार्थवाद के अनुसार मानव व्यवहार तर्कसंगत है, यदि यह प्रकृति के नियमों के अनुरूप तथा सामाजिक नियमों के अंतर्गत होता है। लोग संसार को अपनी इन्द्रियों तथा कारण से अनुभव करते हैं अतः शिक्षा अटकलों की बजाय एक वास्तविकता है। यथार्थवाद के अनुसार पाठ्यचर्या एक श्रेणीबद्ध क्रम का पालन करती है जिसमें अमूर्त विषय सबसे ऊपर तथा स्थूल विषय अंत में होते हैं। यह इस बात पर बल देते हैं कि पाठ्यचर्या संगठित

PDF Compressor Free Version

ज्ञान का रूप है जो विशिष्ट क्षेत्रों से सम्बन्धित है। उदाहरण के लिए, इतिहास विषय की पाठ्यचर्या मानवता के विभिन्न अनुभवों का समूह है। जन्तु विज्ञान में जन्तुओं से जुड़ा ज्ञान सीखा जाता है। आदर्शवाद की तरह यथार्थवाद भी तर्क, विभिन्न पाठों, अभ्यासों द्वारा मन में तर्क पूर्ण विचार पैदा करता है। शिक्षक का यह दायित्व बन जाता है कि वह शिक्षार्थियों को ऐसा ज्ञान प्रदान करें जो उनके लिए रहने वाले संसार हेतु उपयोगी हो। उन तर्कों एवं अभ्यासों पर ज्यादा बल दिया जाए जिससे मानव मन में विचार विकसित हों। मौलिक शिक्षा में (पढ़ना, लिखना, अंकगणित) का ज्ञान होना आवश्यक है। इनका विश्वास है कि विषय विशेषज्ञ ही पाठ्यचर्या के मुख्य स्रोत एवं निर्धारक हैं।

iii) व्यावहारिकवाद

व्यावहारिकवाद को प्रयोगवाद भी कहते हैं; यह परिवर्तन, प्रक्रिया एवं वास्तविकता पर आधारित हैं। यह पारम्परिक दर्शनशास्त्रों (आदर्शवाद एवं यथार्थवाद से) से विपरीत है। व्यवहारवादी कहता है कि किसी विचार का मूल्य उसके वास्तविक होने में है। इनके विचार के अनुसार, जब कोई व्यक्ति समस्या–समाधान में लीन होता है तब वह अधिगम प्राप्त करता है, जिसे कई विषयों एवं स्थितियों में बदला जा सकता है। यह समझा जाता है कि जो भी मूल्य या विचार वर्तमान में मान्य हैं उस समय तक अधूरे समझे जाएँगे जब तक सामाजिक विकास के कारण उन्हें बदला नहीं जाता। उदाहरण के तौर पर, एक समय यह समझा जाता था कि पृथ्वी सपाट है जिसको बाद में वैज्ञानिक शोध द्वारा गलत सिद्ध कर दिया गया।

इसलिए, जो बदला न जाए (आदर्शवाद) और जैसा संसार है (यथार्थवाद) और सामाजिक या सोची गई धारणाओं को नकारना, बच्चों की संपूर्ण वृद्धि और विकास में बाधक है।

व्यावहारिकवाद के अनुसार, पाठ्यचर्या की योजना ऐसी होनी चाहिए जिससे शिक्षक एवं शिक्षार्थी गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित हों बजाए इसके कि क्या सोचना है? इसलिए शिक्षण व्याख्यात्मक की बजाय अन्वेषणात्मक होना चाहिए। जब शिक्षार्थी समस्याओं को हल करते हैं तब अधिगम अधिक सक्रिय होता है जो उन्हें अपने ज्ञान के क्षितिज को बढ़ाने में मदद करता है, वे बदलते परिवेश के साथ अपने अनुभवों को पुनः निर्मित करते हैं। अतः शिक्षक को शिक्षार्थियों हेतु ऐसे अधिगम अवसर प्रदान करने चाहिए जिससे वे अपने स्वयं के अनुभवों का निर्माण कर सकें। ये एक संगठित ज्ञान को अर्जित करने की अपेक्षा वैज्ञानिक विधियों के द्वारा समस्या–समाधान पर अधिक बल देते हैं।

iv) अस्तित्ववाद

अस्तित्ववादी दर्शन के अनुसार, शिक्षार्थियों को बहुत सारे विकल्पों की स्थिति में छोड़ दिया जाता है। शिक्षार्थी इस बात के लिए स्वतंत्र होते हैं कि वे क्या सीखें? ओर इन सच्चाइयों का पता लगाने के लिए क्या मापदंड अपनाएँ? यह इस बात पर बल देता है कि शिक्षा व्यक्तिगत धारणा एवं सोच है, इससे अलग–अलग व्यक्ति अपने जीवन की स्थितियों के अनुसार प्रतिक्रिया कर सके।

इस शास्त्र में व्यक्ति विशेष अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवन व्यक्तिगत अर्थों पर आधारित है इसलिए अस्तित्ववादी इस बात का तर्क देते हैं कि शिक्षा की प्रकृति शिक्षार्थी के अनुसार होनी चाहिए। किसी शिक्षार्थी को पूर्व निर्धारित अध्ययन कार्यक्रम में जाने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। ऐसे प्रावधान करने चाहिए (शिक्षक द्वारा) ताकि शिक्षार्थी अपने विकल्प आप चुन सके।

आरंस्टीन एवं हंकिन (1988) के अनुसार एक अस्तित्ववादी पाठ्यचर्या ऐसे अनुभवों और विषयों पर बल दे जिससे वे (शिक्षार्थी) दार्शनिक वार्तालाप करके अपने विकल्प तैयार कर सकें। यह शिक्षार्थियों को स्वयं की अभिव्यक्ति और प्रयोग करने हेतु तैयार करेगी। इस

PDF Compressor Free Version

तरह शिक्षार्थी निर्देशात्मक भूमिका में न होकर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में भागीदार होगा। शिक्षक शिक्षार्थियों पर पूर्व निर्धारित थौंपने के बजाय एक सुगमकारक के रूप में साथ रहे ताकि शिक्षार्थियों का अन्वेषण एवं शोध करने के बाद आंतरिक विकास हो।

v) पुनर्रचनावाद

यह समाजन्मुखी शिक्षा पर बल देता है जो समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप हो (व्यक्ति विशेष के लिए नहीं) और सभी श्रेणियों के लिए (केवल मध्यम वर्ग के लिए नहीं)। ये विश्वास करते हैं कि वस्तुतः सभी विद्यालय/महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं, इस प्रकार शिक्षा को इस संदर्भ में प्रयोग किया जाए ताकि प्रत्येक पीढ़ी के बच्चों की अभिवृत्तियों और मूल्यों को आकार दिया जा सके। इसके परिणामस्वरूप जब युवा वयस्क बन जाएगें तो वे कुछ आवश्यक सामान्य मूल्यों को आपस में साझा करेंगे और इस प्रकार समाज को नई आकृति प्रदान होगी।

पुनर्रचनावादी पाठ्यचर्या ऐसे विषयों को सम्मिलित करती है जो नई सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शिक्षा प्रदान करें। विषयवस्तु का अध्ययन समाज की समस्याओं पर आधारित हो। इसी पर अध्ययन केन्द्रित हो।

आरंस्टीन एवं हंकिन्स (1988) के द्वारा वर्तमान के कुछ पुनर्रचनावादी विचारधारा वाले व्यक्तियों का वर्णन किया गया है जिन्होंने शिक्षा के पुनर्रचनावादी कार्यक्रम में निम्नलिखित पर बल दिया है:

- समाज की सांस्कृतिक विरासत एवं पूरी सभ्यता की समीक्षात्मक शिक्षा;
- विरोधाभाषी मुद्दों की जाँच;
- समाज में रचनात्मक बदलाव लाने की प्रतिबद्धता;
- ऐसी अभिवृत्तियों का निर्माण करना जो संसार में जीने की सच्चाई समझ सकें, और
- संस्कृति के नवीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीयता का संवर्धन।

इस विचारधारा की शाखाएँ

पुनर्रचनावाद पाठ्यचर्या के क्षेत्र को बढ़ाता है ताकि इसमें सहज ज्ञानयुक्त, व्यक्तिगत, रहस्यमय, समस्याएँ राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन सम्मिलित हो सके। सामान्यतया पुनर्रचनावाद पाठ्यचर्या में कठिन विज्ञान विषयों के स्थान पर समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र विषयों पर बल दिया जाता है। संज्ञानात्मक एवं बौद्धिक गतिविधियों से आजादी दिलाते हुए व्यक्तिगत आत्मबोध के विकास पर बल दिया जाता है। इस प्रकार सामाजिक प्रतिबंधों, सीमाओं और नियंत्रण से व्यक्ति को छुटकारा मिलता है। इसका उद्देश्य यह है कि हम अनुशासन आधारित शिक्षा पर्याप्त मात्रा में ले चुके हैं, संकीर्ण विशेषज्ञता प्राप्त कर चुके हैं, अब हमें और विशेषज्ञों की आवश्यकता नहीं है, यदि हमें जीवित रहना है तो अब अच्छे लोगों की आवश्यकता है।

पुनर्रचनावाद के वर्तमान समर्थक, मैरियो फैन्टीनो, लियारोल्ड शाने और एल्विन टॉफलर एक ऐसी पाठ्यचर्या चाहते हैं जिसमें सांस्कृतिक बाहुल्यवाद, अन्तर्राष्ट्रीयता और भविष्यवाद पर बल दिया जाए। शिक्षार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए कि वे "वासुधैवकुटुम्बक में की प्रशंसा करें, वे भविष्य के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाओं को तलाशें।

हमें पाठ्यचर्या विशेषज्ञ के रूप में उदार दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, एक ऐसा बीच का रास्ता अपनाने की आवश्यकता है जहाँ अत्यधिक विषयवस्तु या सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विकास, उच्च गुणवत्ता पर अत्यधिक बल न दिया जाए। हमें यह समझना चाहिए कि पाठ्यचर्या निर्माता लगातार अपने पाठ्यचर्या निर्णयों पर नजर रखें और

PDF Compressor Free Version

समाज व शिक्षार्थियों की बदलती आवश्यकताओं पर पाठ्यचर्या को बदलते रहें। अतः पाठ्यचर्या दर्शनशास्त्र ऐसा हो जो राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से संभव हो और समाज व शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करता हो।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. यथार्थवाद के अनुसार शिक्षकों की भूमिका क्या है?

....

....

....

4. शिक्षा एवं पाठ्यचर्या की भूमिका के संदर्भ में पुनर्रचनावादी किस बात पर बल देते हैं?

....

....

....

6.4.2 मनोवैज्ञानिक विचार

पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देते समय, शिक्षार्थियों की वृद्धि एवं विकास से जुड़े अनेक मुद्दे सामने रहते हैं, उनकी मनोवैज्ञानिक जरूरतों, रूचियों एवं समस्याओं को ध्यान में रखा जाता है। वृद्धि एवं विकास के प्रत्येक क्षेत्र (जैसे शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं बौद्धिक) के विभिन्न गुणों को चिह्नित किया जाता है। निम्न आकृति में इन चारों के आपसी सम्पर्क को दर्शाया गया है।

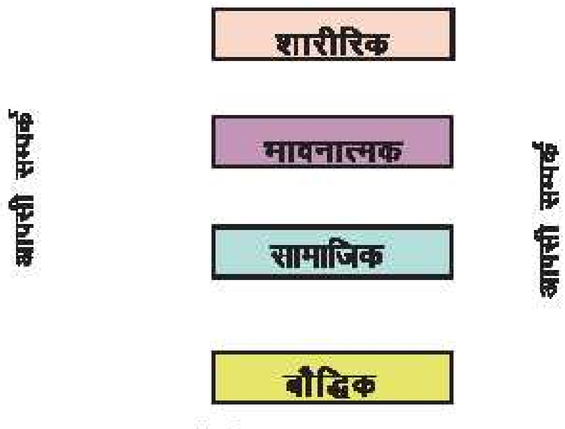

चित्र 6.3: विकास के क्षेत्र एवं उनका आपसी सम्पर्क

उपर्युक्त आकृति से स्पष्ट है कि शिक्षार्थी के आसपास का पर्यावरण अधिगम क्षमता को बढ़ाने, अधिगम अनुभवों को एकत्रित करने व शिक्षार्थी की अधिगम प्राप्त करने की तत्परता को प्रभावित करता है। तत्परता का सिद्धान्त यह बताता है कि एक विशेष प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी को एक न्यूनतम परिपक्वता स्तर प्राप्त करना आवश्यक हैं इसका अर्थ यह है कि अधिगम बहुत कम आयु में, बहुत अधिक मात्रा में या बहुत तेजी से नहीं होना चाहिए। हालाँकि यह भी देखा जाना चाहिए कि अधिगम की तत्परता पूर्णतः बच्चे की आयु और परिपक्वता पर ही निर्भर नहीं करती है, अपितु शिक्षार्थी के अधिगम अनुभवों, विद्यालय वातावरण, आदि पर भी निर्भर करती है।

PDF Compressor Free Version

इसलिए पाठ्यचर्या में क्या देना है? और पाठ्यचर्या किसके लिए है? इस बात पर निर्णय लेते समय उपरोक्त सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए उनके आपसी प्रभाव को भी ध्यान में रखा जाए।

6.4.3 सामाजिक विचार

बच्चे को शिक्षा देना समाज का दायित्व है और यह सामाजिक परिस्थितियों में ही प्रदान की जाती है। एक समाज में सामाजिक दबाव भी शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय हमें उन सामाजिक दबावों का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए जिनका समाज की शैक्षिक प्रणाली पर असर पड़ता है। ऐसे बहुत से सिद्धान्त हैं जो पाठ्यचर्या एवं सामाजिक परिवेश में सम्बन्ध स्थापित कर ने का प्रयास करते हैं।

एप्पल (1982) का कार्य बताता है कि विचारधारा एक ऐसा धागा है जो आधार के स्तरों तथा अधिरचनाओं को जोड़ता है। पाठ्यचर्या के गठन एवं निष्पादन के जानने हेतु विचारधाराओं की जड़ों की जाँच करना आवश्यक है कि अमुक पाठ्यचर्या में क्या ज्ञान दिया जाए? विचारधारा विशेष सामाजिक जीवन में प्रमुख समूह के विचारों और मूल्यों के निर्माण की प्रक्रिया को अग्रसरित करती है और समाज में इन्हें वैधता और संवर्धन देती है। यह इस बात को इंगित करता है कि किस प्रकार एक प्रमुख समूह अपने प्रभाव का प्रयोग करके अपनी धारणाओं को मुख्यधारा की प्रकृति में स्थापित कर लेता है।

एक अच्छी पाठ्यचर्या यह सुनिश्चित करती है कि समाज के अद्वितीय लक्षण एवं एकता सुरक्षित रहे और सामाजिक समूहों के जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार हो। सामाजिक दबाव इस बात को भी प्रभावित करते हैं कि क्या पढ़ाया जाना है और कैसे पढ़ाया जाना
ड़ना
स्तर
इन
ाव,
ुक्त

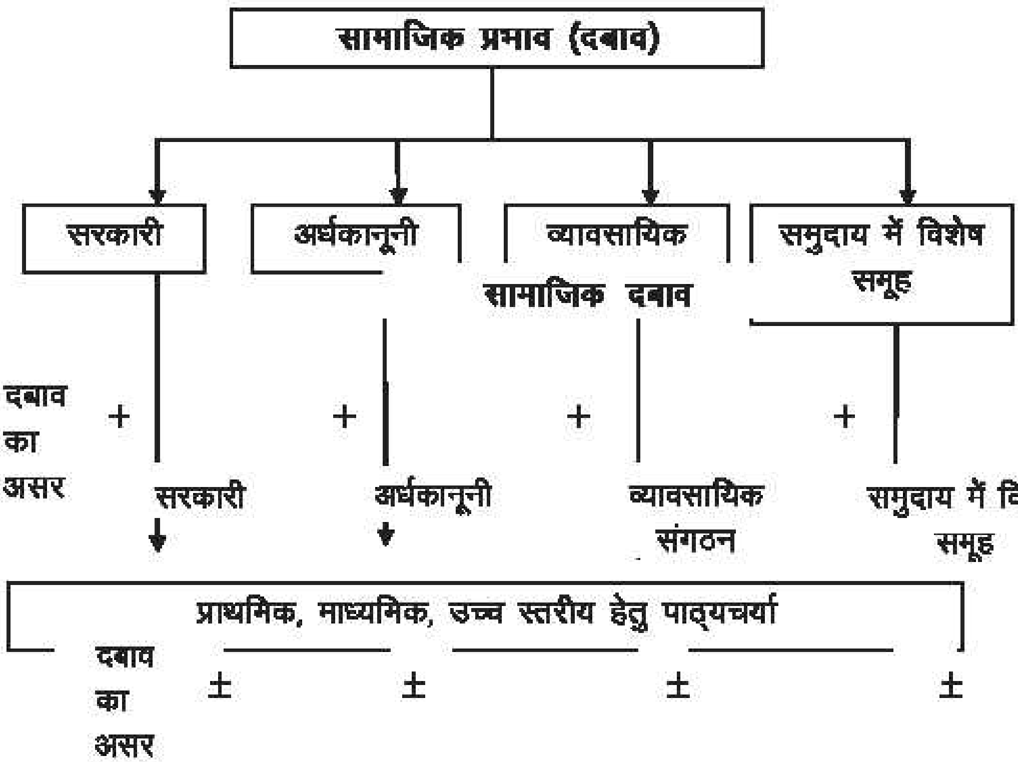

प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च स्तरीय हेतु पाठ्यचर्या

चित्र 6.4- पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले सामाजिक दबाव

चित्र 6.4: पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले सामाजिक दबाव

PDF Compressor Free Version

i) सरकारी दबाव

सरकार शिक्षा एवं पाठ्यचर्या पर नीतियाँ बनाती है। सरकार का सीधा नियंत्रण संवैधानिक प्रावधानों एवं कानूनों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए "शिक्षा का अधिकार" कानून के अंतर्गत 6 – 14 आयु समूह के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है। इसके लिए सरकार ने भौतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने और शिक्षकों की भर्ती करने का कार्य किया है। बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का विकास एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण भी किया गया है। इसी प्रकार सरकार ने संसद में कानून बनाकर सन् 1968 एवं 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ बनाई जिनमें व्यावसायिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और सामान्य शिक्षा को कक्षा दस के स्तर तक बढ़ाया। ये सभी और इस प्रकार के अन्य नीतिगत निर्णय पाठ्यचर्या योजनाओं को प्रभावित करते हैं। इनके अंतर्गत प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक उद्देश्यों को पुनः निर्धारण एवं पाठ्यचर्या का पुनः निर्माण किया जाता है। एक अन्य उदाहरण है – भारतीय संविधान में प्रजातंत्र एवं धर्मनिरपेक्षता को मान्यता दी गई है जो इस पर आधारित विद्यालय पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों में झलकती है।

दूसरा साधन जिसके द्वारा सरकार विद्यालय पाठ्यचर्या को प्रभावित करती है, वास्तव में यह है कि विद्यालयी शिक्षा को देश में लागू करने में अधिकांशतः वित्तीय सहायता केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय तंत्र द्वारा दी जाती है। इस प्रकार सरकार, शिक्षार्थियों को दी जाने वाली पाठ्यचर्या गतिविधियों एवं अनुभवों से सम्बन्धित क्रियाकलापों में अपने नियमों, नीतियों को लागू करने की स्थिति में होती है।

ii) अर्द्ध कानूनी दबाव

ये दबाव निश्चित रूप से कानून द्वारा नहीं बनाए जाते हैं। ये स्वयंसेवी संगठनों, व्यावसायिक संस्थाओं एवं स्वायत्त संस्थाओं द्वारा बनाए जा सकते हैं। इनमें विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, अभिभावक–शिक्षक संघ, पाठ्यपुस्तक लेखक, प्रकाशक, परोपकारी संगठन, प्रचार तंत्र, इत्यादि हो सकते हैं। उदाहरण के लिए विश्वविद्यालय और महाविद्यालय शिक्षक–शिक्षा के माध्यम से न केवल पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं अपितु पाठ्यचर्या निर्माण में भी अहम् भूमिका निभाते हैं। अभिभावक–शिक्षक संघ दबाव समूह का काम करते हैं, इस माध्यम से समुदाय के पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचार और पाठ्यपुस्तकों से जुड़ी सलाह विद्यालय, बोर्ड और पाठ्यचर्या नियोजकों तक पहुँच जाते हैं।

बड़े–बड़े प्रकाशक पाठ्यचर्या और पाठ्यचर्या में सम्मिलित होने वाली विषयवस्तु के प्रकार को वृहत रूप से प्रभावित करते हैं। विद्यालयों में वे ही पाठ्यपुस्तकें लागू की जानी चाहिए जिनमें सशक्त मनोवैज्ञानिक संगठन, प्रेरक आकार, आवश्यक अधिगम क्रियाएँ, सार्थक एवं प्रभावी चित्र, विषयवस्तु एवं शिक्षण विधियों की दृढ़ता सम्मिलित हों। कभी–कभी पाठ्यचर्या निर्माता इन सुसंगठित पाठ्यपुस्तकों के आधार पर विशेष क्षेत्रों में अध्ययन हेतु पाठ्यचर्या का नमूना तैयार करते हैं।

iii) व्यावसायिक संगठन

शिक्षक एवं शिक्षक संघ जो व्यावसायिक संगठन के रूप में कार्य करते हैं काफी हद तक पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) को भारत सरकार ने शिक्षक–शिक्षक की पाठ्यचर्या संरचित करने हेतु अधिकृत कर रखा है। शिक्षक संगठन न केवल शिक्षकों की भलाई एवं कार्य दशाओं में सुधार हेतु कार्य करती हैं अपितु व्यवसाय के बारे में विभिन्न सूचनाएँ एकत्रित करती हैं, निर्देशों में सुधार एवं सुझाव देती है और शैक्षिक शोध कार्य व शिक्षकों के अंतःकालीन सेवा

PDF Compressor Free Version

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मदद करती है। ये सभी गतिविधियाँ विद्यालय पाठ्यचर्याओं को प्रभावित करती हैं। पाठ्यचर्या नियोजक विभिन्न संगठनों एवं उनके सदस्यों के विचार एवं सुझाव एकत्रित करते हैं। शैक्षिक व्यावसायिक संगठनों के अतिरिक्त पाठ्यचर्या नियोजक अन्य संगठनों के सुझाव पर भी विचार करते हैं।

उदाहरण के लिए, वाणिज्य एवं लेखा के लिए एक अच्छी पाठ्यचर्या बनाने हेतु व्यावसायिक लेखाकरों, कम्पनी सचिवों, निर्यातकों आदि के सुझाव लेखा में लेने आवश्यक हैं। इसी प्रकार, पाठ्यचर्या योजना बनाते समय विषय समुदायों, शोधकर्त्ताओं के परिणाम एवं अनुभवों पर भी विचार किया जाना चाहिए।

iv) समुदाय में विशेष रूचि वाले समूह

प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे संगठन होते हैं जो किसी विशेष दर्शनशास्त्र को बढ़ावा देने में विशेष रूचि दिखाते हुए उस विचारधारा को बढ़ाने हेतु विद्यालय की स्थापना करते हैं। इन संगठनों में देशभक्त समूह, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठन, नागरिक समूह तथा समुदाय के अन्य क्षेत्रों में रूचि रखने वाले संगठन शामिल हैं। पाठ्यचर्या नियोजकों को समाज के इन विविध समुदायों के विश्वासों, आशाओं एवं आकांक्षाओं की अन्तःदृष्टि में रूचि लेनी चाहिए।

स्थानीय शिक्षा समिति जो समूह का प्रतिनिधित्व करती है, विद्यालयों का प्रबंध करती है और समुदाय की शैक्षिक रूचियों को पूरा करती है, प्रायः अध्ययन सामग्री के प्रस्तावों को स्वीकृत करती है। इस प्रकार इन समितियों के माध्यम से सभी प्रकार की रूचि रखने वाले समूहों की अपेक्षाएँ एवं आकांक्षाएँ, मूल्य, पाठ्यचर्या में झलकते हैं, यह सब राज्यीय एवं केन्द्रीय शिक्षा नीति की रूपरेखा की सीमा में किया जाता है। ये सभी समूह पाठ्यचर्या नियोजकों पर दबाव ड़ालने का प्रयास करते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. एक शिक्षार्थी के विकास क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

6. सरकारी दबाव पाठ्यचर्या विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

....

....

....

7. व्यावसायिक संगठन पाठ्यचर्या में किस प्रकार योगदान करते हैं?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

6.4.4 आर्थिक विचार

आर्थिक विचार मूलतः पाठ्यचर्या के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाते हैं। पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में बहुत सारी क्रियाएँ निहित हैं जैसे भौतिक सुविधाओं की व्यवस्था, अधिगम सामग्री का विकास, प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती। इन सभी के लिए आवर्ती लागत की आवश्यकता होती है। ये सभी लागतें सरकार द्वारा वहन की जाती हैं और साथ ही समुदाय व अन्य संस्थाएँ भी वहन करती हैं। योजनाकार कुछ विशेष अधिगम प्राप्ति के अवसरों पर होने वाले खर्च का हिसाब लागत में सम्मिलित करते हैं। शैक्षिक अवसर प्रदान करने के वैकल्पिक साधनों पर अलग–अलग लागत आती है।

पाठ्यचर्या नियोजकों को यह सुनिश्चित करना होता है कि क्या विद्यालय के आसपास का समुदाय प्रस्तावित पाठ्यचर्या को लागू करने की लागत को वहन कर पाएगा? सरकार प्रत्येक स्तर पर जो आर्थिक मदद देती है उसके अतिरिक्त कुछ लागत समुदाय को भी वहन करनी पड़ती है। समुदाय ही अपने बच्चों को विद्यालय भेजता है। यदि समाज की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है तो यह अपने लोगों की सेवा करने की स्थिति में नहीं होगा। पाठ्यचर्या को प्रस्तावित करने से पहले पाठ्यचर्या योजनाकार को चार बातों को ध्यान में रखना पड़ता है – प्रारंभिक लागत, रखरखाव पर खर्च, अनुपूरक लागत तथा कार्मिक लागत। उदाहरण के लिए, यदि हमें टाइपिंग हेतु एक व्यावसायिक पाठ्यचर्या प्रारंभ करना है तो इसके लिए प्रारंभिक लागत होगी – टाइपिंग मशीन को खरीदना, रखरखाव पर खर्च – मशीनों का रखरखाव, अनुपूरक लागत पेपर, रिब्बन इत्यादि, कार्मिक लागत – एक शिक्षक की नियुक्ति जो टाइपिंग में पारंगत हो।

6.4.5 पर्यावरणीय विचार

पर्यावरण में वे सभी भौतिक एवं सामाजिक दशाएँ सम्मिलित हैं जो एक व्यक्ति, संस्थान या समुदाय के चारों ओर होती हैं। पर्यावरण प्राकृतिक एवं मानव निर्मित होता है। मानव जाति की जीवन रक्षा तथा निरंतर विकास, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के समझदारी से उपयोग करने पर निर्भर करता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने हमारी पर्यावरण पर नियंत्रण करने में मदद की है और अप्रत्याशित विकास के स्तरों, औद्योगिकीकरण, स्वचालित मशीनरी, संचार क्रांति, शहरीकरण इत्यादि ने मानव के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। प्रौद्योगिकी संचार क्रांति ने संसार को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के क्षेत्र में भी बहुत प्रभाव डाला है तथा बहुत सारी बीमारियों पर नियंत्रण पाने में सफलता प्राप्त की है। यद्यपि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण और समाज पर इसके प्रभाव ने भयावह पर्यावरण क्षरण, संसाधनों का रिक्तिकरण, मलिन बस्तियों का फैलाव, नई–नई बीमारियों का विस्तार, देशों द्वारा हथियारों की होड़ में प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग, जैसी चीजों को जन्म दिया है।

शिक्षा व्यवस्था को अपनी पाठ्यचर्या द्वारा मानव द्वारा प्राप्त उपलब्धियों से शिक्षार्थियों को परिचित करना चाहिए।

इसके साथ ही शिक्षार्थियों को तेजी से हो रहे विकास के प्रभावों के प्रति भी जागरूक बनाना चाहिए। पाठ्यचर्या योजनाकारों को शिक्षार्थियों को इस तरह के तरीके बताने चाहिए जिनसे उनमें पर्यावरण में उपलब्ध संसाधनों को ठीक से प्रयोग करने के तरीके आएँ। शिक्षार्थियों को इस योग्य बनाया जाए जिससे वे भविष्य के संसार में अपना स्थान सुरक्षित करें। पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वह पर्यावरण के प्रति चिन्ता उत्पन्न करे, मानव कल्याण एवं व्यक्तिगत नैतिकता का विकास करे, जिससे शिक्षार्थी

PDF Compressor Free Version

उपलब्ध संसाधनों को मानव कल्याण हेतु प्रयोग करें। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाओं द्वारा शिक्षार्थियों में पर्यावरण एवं मानवता के प्रति ऐसी अभिवृत्ति जाग्रत हो कि व्यक्ति, समुदाय एवं सभी देश शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना से रहें। पाठ्यचर्या योजनाकारों को इन उभरते हुए मुद्दों को पाठ्यचर्या विकास के समय ध्यान में रखना चाहिए।

6.4.6 संस्थागत विचार

जब पाठ्यचर्या योजनाकार किसी संस्था विशेष के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण करता है तब उसे उसकी संस्थागत आवश्यकताओं पर ध्यान देना पड़ता है। हम जानते हैं कि संस्था समाज का ही एक भाग है और इसका लक्ष्य संस्थागत उद्देश्यों की पूर्ति करना होता है। पाठ्यचर्या योजनाकार को संस्था की प्रकृति, विशेषतः इसके प्रत्यक्ष प्रयोजनों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। संस्थागत प्रयोजनों से अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित करने एवं उनको संगठित करने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, व्यावयासिक एवं तकनीकी विद्यालयों से आशा की जाती है कि शिक्षार्थियों को विशेष क्षेत्रों में नौकरी हेतु प्रशिक्षित करें। इसलिए व्यावसायिक कार्यक्रमो के उद्देश्यों का निर्माण करते समय नौकरियों के विश्लेषण की तकनीकी का प्रयोग किया जाता है, यह उपयुक्त अनुदेशात्मक सामग्री के चुनाव में सहायक होगा। नौकरी के विश्लेषण की तकनीकी ऐसी संस्थाओं के लिए आवश्यक नहीं है जहाँ मानवीय लक्ष्य एक मुख्य बिन्दु के रूप में हों। ऐसी संस्थाओं के उद्देश्य निर्धारण हेतु दूसरी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है, शिक्षार्थी–केन्द्रित पाठ्यचर्या सामग्री का विकास किया जाता है। इसी प्रकार संस्था विशेष के लिए पाठ्यचर्या निर्माण करते समय विद्यालय के अधिकारियों एवं योजना एवं प्रबंधन समिति के लोगों की अभिवृत्तियों को ध्यान में रखना आवश्यक है, किसी भी वर्ग विशेष की ओर जैसे संपूर्ण वाणिज्यिक विषयों की तरफ ध्यान दिया जाता है। किसी क्षेत्र विशेष अथवा वर्ग हेतु पाठ्यचर्या निर्माण करते समय आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता पर भी विचार किया जाना चाहिए, जैसे–पुस्तकालय, उपकरण, कर्मचारी, स्थान, आदि।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

8. पाठ्यचर्या निर्माण की योजना बनाते समय किन आर्थिक विचारों को ध्यान में रखना चाहिए?

....

....

....

....

9. पाठ्यचर्या निर्माण की योजना में संस्थागत विचार क्यों महत्वपूर्ण हैं?

....

....

....

....

PDF Compressor Free Version

6.4.7 सांस्कृतिक विविधता

समाजशास्त्रियों के अनुसार, संस्कृति एक प्राकृतिक शब्द है जिसमें सीखी हुई तथा मनुष्य निर्मित सभी प्रकार की चीजें सम्मिलित होती हैं। विद्यालयों की स्थापना संस्कृति के संरक्षण एवं संचरण के लिए की जाती है। इस कार्य को पूरा करने के लिए विद्यालय पाठ्यचर्या का सहारा लेते हैं जो विद्यालय में दिए गए सभी प्रकार के अनुभवों का योग है। ऐसा देखा गया है कि वर्तमान में समाज एक स्वजातीय संस्कृति से विविधता एवं बहुलता की ओर बढ़ रहा है। यह बदलाव निम्न के द्वारा जिम्मेदार ठहराया गया है:

- मूल्यों और जीवन शैली में विविधता, (अलग–अलग विचारधारा आज एक स्वीकृत विचार है),
- सृजातीय इतिहास में नई रूचि (आजकल लोगों ने अपने इतिहास एवं व्यक्तिगत धरोहर पर रूचि दिखानी प्रारंभ कर दी है), और
- दूरसंचार में विकास (लोगों को विश्व के अलग भागों में अपनी संस्कृति के सम्बन्धों की याद दिलाई जाती है)।

पाठ्यचर्या विकास की महत्वपूर्ण विशेषता इसमें है कि वह सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण किस प्रकार करता है। यह माना जाता है कि पाठ्यचर्या श्रेणी रहित एवं गैर–विवादास्पद ज्ञान का भंडार है जो उस विद्यालय विशेष में सभी बच्चों के लिए अच्छा है। कुछ विद्यालयों ने अपने अनुसार, जैसे कि "संस्कृति मुक्त ज्ञान, भाषा, विज्ञान, गणित, कला एवं हस्तशिल्प तथा शारीरिक शिक्षा इत्यादि" को संचारित करने का प्रयास किया है जोकि किसी व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु व्यक्तिगत या सार्वजनिक रूप से आवश्यक है। यह भी स्वीकार किया गया है कि जो घर की कमजोर पृष्ठभूमि या अन्य सामाजिक–आर्थिक से इस प्रकार की पाठ्यचर्या से रूबरू नहीं हो पाते हैं उन सभी को क्षति पूरक शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वे अपने सांस्कृतिक नुकसान व अभाव को पूरा कर सकें। इस पर आजकल बहस चल रही है कि अभाव का अर्थ केवल आर्थिक अभाव नहीं है, इसके बजाय कामगार व्यक्तियों के उन बच्चों को जो सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हैं, संरक्षण दिया जाना चाहिए। विद्यालय पाठ्यचर्या के निर्माण में इस श्रेणी के बच्चों की सांस्कृतिक समृद्धि एवं ऊर्जा को ध्यान में रखना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप हमारे देश में किसी एक कक्षा में विविध सांस्कृतिक भूमिका वाले बच्चे पढ़ते हैं जो एक ही प्रकार की पाठ्यचर्या से अधिगम प्राप्त करते हैं। इन बच्चों की भाषा और खानपान की आदतें भिन्न होती हैं और ये अलग–अलग धर्म के मानने वाले होते हैं। इसलिए पाठ्यचर्या योजनाकारों को ऐसी पाठ्यचर्या का निर्माण करना चाहिए जो इन शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं एवं रूचियों को पूरा करने में सहायक हो। साथ ही उसी समय पर ज्ञान, मूल्यों एवं कौशलों का विकास भी होता रहे। एक बहुल समाज में एक ही संस्कृति को सभी पर नहीं थोपा जा सकता क्योंकि यह सत्य है कि कोई एक उप– संस्कृति या संस्कृति उतनी ही अच्छी या खराब हो सकती है जितनी की कोई दूसरी होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सामाजिक परिवर्तन पाठ्यचर्या योजना में अपना प्रभाव रखते हैं। जहाँ तक समाज गतिशील है, शैक्षिक लक्ष्यों पर वाद–विवाद परिवर्तन में हलचल आती रहेगी जोकि एक स्वस्थ समाज का द्योतक है (बिनी, एवं अन्य, 1986)।

6.4.8 शिक्षक सम्बन्धी विचार

शिक्षण कार्य शिक्षक द्वारा पूरा किया जाता है जो एक विशिष्ट पाठ्यचर्या का निष्पादन करता है। वह शिक्षण अधिगम व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। शिक्षक के कार्यों में उसके द्वारा की गई व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रदर्शन तथा विभिन्न क्रियाकलापों में मार्गदर्शन

PDF Compressor Free Version

और अधिगम अनुभव, पाठ्यचर्या में सम्मिलित होते हैं। इसलिए, पाठ्यचर्या योजना बनाते समय शिक्षक सम्बन्धी विचार सम्मिलित किए जाने चाहिए। पाठ्यचर्या निष्पादन में विभिन्न शिक्षक भाग लेते हैं जो एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त किए हुए होते हैं, अलग–अलग अनुभवों का लाभ पहुँचाते हैं जिससे शिक्षार्थी अपने पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकें। विभिन्न स्तर की पाठ्यवस्तु और क्रियाकलापों को पूरा करने हेतु विविध योग्यताओं और क्षमता वाले शिक्षक चाहिए। इसी प्रकार पाठ्यचर्या योजना पर निर्णयों के आधार इन पर होने चाहिए – क्या हमारी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षक तुरंत उपलब्ध हैं? क्या उन्हें तैयार करना होगा? या क्या उन्हें निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अन्तःसेवा प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी? इसके लिए यह भी आवश्यक है कि क्या शिक्षकों के लिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएँ? किस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाए और कितने समय का प्रशिक्षण दिया जाए जिससे शिक्षक पाठ्यचर्या द्वारा अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इसलिए पाठ्यचर्या योजना से पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रशिक्षित एवं सक्षम शिक्षक उपलब्ध हों। अतः शिक्षक सम्बन्धी विचारों को पाठ्यचर्या योजनाकारों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

10. निम्नलिखित में सत्य/असत्य बताइए:

क) शिक्षक की योग्यता पाठ्यचर्या से निर्धारित की जाती है। सत्य/असत्य

ख) शिक्षण प्रक्रिया पाठ्यचर्या पर आधारित नहीं है। सत्य/असत्य

6.5 सारांश

पाठ्यचर्या विद्यालय के पास एक मूल साधन है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। पाठ्यचर्या बहुत से विचारों के द्वारा निर्देशित होती है। इनमें से प्रमुख हैं: विषय विशेष, बच्चे की वृद्धि एवं विकास, देश/राज्य, समाज/विद्यालय की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालय में संस्थागत एवं शिक्षक विचारों सम्बन्धी वातावरण। पाठ्यचर्या योजनाकार को विषय की प्रकृति की योजना एवं विकास करना है। एक पाठ्यचर्या बच्चों के एक विशेष समूह के लिए होती है। इसलिए, योजनाकार पाठ्यचर्या बनाते समय शिक्षार्थियों की वृद्धि एवं विकास, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास के गुणों को ध्यान में रखता है। उसे वृद्धि एवं विकास की विविध अवस्थाओं के शैक्षिक निहितार्थ (शिक्षण–अधिगम के दृष्टिकोण से) सजग रहना चाहिए।

शिक्षा एक सामाजिक उपक्रम है, सामाजिक दबाव पाठ्यचर्या योजना पर प्रभाव डालते हैं। सरकार और अर्द्धकानूनी संस्थाएँ, व्यावसायिक संगठन एवं समाज के विविध रूचियों वाले समूह अपना दबाव डाल सकते हैं। इस इकाई में आपने पढ़ा कि प्रत्येक पाठ्यचर्या को लागू करने हेतु आर्थिक मदद की जरूरत होती है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि तैयार की गई पाठ्यचर्या को लागू करने हेतु राज्य, समुदाय और संस्था उस खर्च को सहन करने योग्य है या नहीं। पाठ्यचर्या पर्यावरण और मानवता के प्रति शिक्षार्थियों में अनुकूल रवैया विकसित करने में सहायता करें और साथ ही परिवार, समुदाय, देश और विश्व में शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व की भावना पैदा करे।

PDF Compressor Free Version

6.6 इकाई के अंत में अभ्यास

1. पाठ्यचर्या योजना के लिए विविध कारकों जैसे विषय, शिक्षार्थी, शिक्षक एवं संस्था के सापेक्षिक प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

2. अपने विद्यालय की उच्च माध्यमिक (10+) स्तर की पाठ्यचर्या को लेकर यह देखें निम्न संदर्भ में उसे किस स्तर तक ठीक बनाया गया है:

   क) विविध विषयों की प्रकृति;

   ख) विकासात्मक विचार;

   ग) सामाजिक विचार;

   घ) संस्थागत विचार; और

   ङ) शिक्षक सम्बन्धी विचार।

3. अपने राज्य के माध्यमिक (10+) स्तर पर शैक्षणिक एवं व्यावसायिक धाराओं के पाठ्यचर्यों को देखकर पता लगाएँ कि ये सरकार एवं समुदाय के लिए किस स्तर तक लागत प्रभावी एवं संभव हैं। उदाहरण देकर चर्चा कीजिए।

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. चार अवयव हैं: उद्देश्य, विषयवस्तु, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन।

2. ज्ञान की प्रकृति एवं अनुभूति पाठ्यचर्या के संगठन में सहायक होते हैं और अधिगम प्राप्ति के वैकल्पिक रास्तों को समझने में मदद करते हैं।

3. जिस परिवेश में शिक्षार्थी रहता है उसके बारे में ज्ञान प्रदान करना तथा तार्किक सोच पैदा करना।

4. ये निम्न पर बल देते हैं:

   - विवादास्पद मुद्दों की परख;
   - सामाजिक एवं रचनात्मक बदलाव के लिए प्रतिबद्धता;
   - परिवेश में रहते हुए जिन वास्तविकताओं से सामना होता है, पाठ्यचर्या में उसी प्रकार की अभिवृत्तियों का समावेश;
   - सांस्कृतिक नवीनीकरण को बढ़ावा देना तथा अन्तर्राष्ट्रीयता से जुड़ना;

5. शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं बौद्धिक

6. संवैधानिक, कानूनी, नीतिगत निर्णय, आर्थिक सहायता।

7. अभिभावक—शिक्षक संघ, पाठ्यपुस्तक लेखक, प्रकाशक, विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय तथा संचार साधन।

PDF Compressor Free Version

8. वित्तीय विचार हैं: भौतिक सुविधाओं पर खर्च, अधिगम सामग्री, प्रारंभिक एवं आवर्ती लागत। यह लागत सरकार एवं समुदाय द्वारा साझा की जाती हैं।

9. संस्थागत क्षमता तथा संसाधनों के लिए विद्यालय अपेक्षित दिशा में पाठ्यचर्या को लागू नहीं कर पाएगा।

10. (क) सत्य, (ख) सत्य

6.8 संदर्भ पुस्तकें

मामिदी, एम. आर. एवं रविशंकर, एस. (1984): *कैरीकुलम डेवलपमेंट एंड एजुकेशनल टैक्नोलॉजी,* नई दिल्ली: स्टीलिंग पब्लिकेशन्स।

केली, ए. वी. (1989): *दि कैरीकुलम: थ्योरी एंड प्रैक्टिस,* लंदन: पॉल चेम्पमेन पब्लिशिंग।

सेलोर, जे. गेलन एवं एलेकजेंडर, विलियम एम. (1966): कैरीकुलम प्लानिंग फॉर माडर्न स्कूल्स, विंस्टोन, इंक, न्यूयॉर्क।

PDF Compressor Free Version

इकाई 7 पाठ्यचर्या की संरचना

संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 पाठ्यचर्या नियोजन परिभाषित करना

7.3.1 पाठ्यचर्या नियोजन के स्तर

7.3.2 पाठ्यचर्या नियोजन में शिक्षार्थियों की सहभागिता

7.4 पाठ्यचर्या संरचना के प्रतिमान

7.5 पाठ्यचर्या संरचना के उपागम

7.6 पाठ्यचर्या संरचना की प्रक्रिया

7.7 पाठ्यचर्या संरचना और विकास में शिक्षकों की भूमिका

7.8 सारांश

7.9 इकाई के अंत में अभ्यास

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.11 संदर्भ पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में, आपने पाठ्यचर्या के अर्थ, आधार और पाठ्यचर्या के प्रमुख तरीको का अध्ययन किया है। आपने प्रभावी शिक्षण और अधिगम में पाठ्यचर्या की भूमिका का भी अध्ययन किया है। इस इकाई में, हम पाठ्यचर्या संरचना और विकास की प्रक्रिया पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे। पाठ्यचर्या के विकास में,पाठ्यचर्या संरचना और विकसित करने में लगे लोगों के द्वारा अनुसरण किए जाने वाले उपाय सम्मिलित हैं। एक शिक्षक के रूप में, आप शिक्षार्थियों तक अधिगम अनुभवों को पहुँचाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि है। आपको पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इस समझ के साथ आप अपने सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के पूर्ण ज्ञान के साथ, पाठ्यचर्या को अधिक बुद्धिमत्ता से संचालित कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त, कौन जानता है कि एक दिन आप अपने विद्यालय या राज्य के पाठ्यचर्या की समीक्षा, अद्यतन और पुनःसंरचित करने में सम्मिलित टोली के सदस्यों में से एक हो सकते हैं। हम आशा करते हैं कि इन कारणों के कारण, आपको इस इकाई में दिलचस्प और उपयोगी चर्चा मिलेगी।

इस इकाई में, हम अध्ययन करेंगे कि पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों को सार्थक अधिगम स्वरूप, स्वीकृत पक्ष और नियोजन के विभिन्न स्तरों में किस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है जो पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया को मार्गदर्शन देते हैं।

PDF Compressor Free Version

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पाठ्यचर्या संरचना को परिभाषित कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या नियोजन के विभिन्न स्तरों पर चर्चा कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या संरचना के प्रतिमानों का वर्णन कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या संरचना के तरीकों के विश्लेषण कर सकेंगे; और
- पाठ्यचर्या संरचना की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।

7.3 पाठ्यचर्या नियोजन/योजना को परिभाषित करना

पाठ्यचर्या नियोजन और संरचना एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न स्तरों पर प्रतिभागी अधिगम के लक्ष्यों के बारे में निर्णय लेते हैं, उन शिक्षण–अधिगम स्थितियों के बारे में निर्णय लेते हैं, जिसके द्वारा ये हासिल किए जा सकते हैं और क्या अपनाए गए विधियाँ और तरीके प्रभावी हैं? पाठ्यचर्या नियोजन और विकास और अक्सर शिक्षा/निर्देश जैसे शब्दों के बीच सम्बन्ध बीन, एवं अन्य (1986) द्वारा व्यक्त किया गया है, जैसा कि आकृति 7.1 में दिखाया गया है।

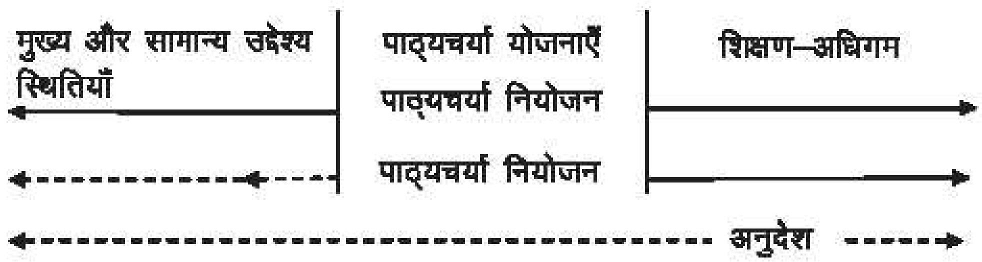

चित्र 7.1: पाठ्यचर्या नियोजन, पाठ्यचर्या विकास और अनुदेश के बीच सम्बन्ध

स्रोत: बीन, एवं अन्य, 1986

उपर्युक्त चित्र में पाठ्यचर्या नियोजन को एक सामान्य अवधारणा के रूप में समझाया गया है, जो व्यापक लक्ष्यों की पहचान से विशिष्ट शिक्षण–अधिगम की स्थितियों के लिए संभावनाओं का विवरण, आदि गतिविधियों का वर्णन कर सकता है। व्यापक लक्ष्य, अधिगम अनुभवों के समन्वित और सुसंगत कार्यक्रम में समाहित हैं।

एलेग्जेंडर (1954, पृ. 245) ने पाठ्यचर्या संरचना को इस प्रकार से परिभाषित किया है, "..... संरचना या ढाँचा या संरचनात्मक संगठन जो विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों के चयन, योजना और आगे ले जाने में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार संरचना, ऐसी योजना है जिसका शिक्षक अधिगम अनुभवों प्रदान करने में अनुपालन करते हैं। इस प्रकार, पाठ्यचर्या संरचना, पाठ्यचर्या नियोजन का एक हिस्सा बन जाता है।"

सन् 1949 में, राल्फ टायलर ने चार सरल चरणों में पाठ्यचर्या संरचना की प्रक्रिया को चार प्रश्नों या तर्क को सुलझाने का एक तरीका बताया है:

1. विद्यालय, किन शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं?
2. अधिगम के अनुभवों को कैसे चुना जा सकता है? जो इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं?

PDF Compressor Free Version

3. प्रभावी निर्देश के लिए अधिगम के अनुभवों को कैसे संगठित किया जा सकता है?

4. अधिगम के अनुभवों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है?

पाठ्यचर्या की योजना कई स्तरों पर बनानी होती है। निम्नलिखित उपभाग में, विभिन्न स्तरों पर बनानी नियोजन कैसे अलग–अलग होता है, की चर्चा करेंगे:

7.3.1 पाठ्यचर्या नियोजन के स्तर

बीन, एवं अन्य (1986) ने पाठ्यचर्या नियोजन के सात स्तर बताए हैं अर्थात् सात स्तरों पर, राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, विद्यालय प्रणाली व्यापक स्तर, निर्माण स्तर, शिक्षक टोली स्तर, व्यक्तिगत शिक्षक स्तर और शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच सहयोगी नियोजन के साथ कक्षा स्तर। आइए, हम उन पर चर्चा करें।

i) राष्ट्रीय स्तर

इस स्तर पर नियोजन में देश भर के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ सम्मिलित हैं ताकि माँगों को पूरा करने वाली एक पाठ्यचर्या पर चर्चा की जा सके और उसे अधिक विकसित किया जा सके। राष्ट्रीय स्तर पर नियोजन प्रक्रिया में सम्मिलित चरण निम्नलिखित हैं:

- महत्वपूर्ण विषय सामग्री, तथ्यों, सिद्धान्तों, अवधारणाओं आदि को पहचानना;
- एक अनुक्रम पर निर्णय लेना, जिसमें विषय सामग्री को विशिष्ट से सामान्य या आसान से मुश्किल तक पढ़ाया जा सकता है;
- ऐसी गतिविधियों की सलाह देना जिसके माध्यम से शिक्षार्थी विषय सामग्री, प्रयोगों, विचार–विमर्श सहित सर्वोत्तम सीख सकते हैं;
- विशेष विषय क्षेत्रों में अधिक अध्ययन के लिए पूरक सामग्री को सूचीबद्ध करना; और
- परीक्षणों का सुझाव देना ताकि शिक्षार्थी अपनी प्रगति की जाँच कर सकें।

पाठ्यचर्या विकसित होने के बाद, यह शिक्षकों के हाथों में कार्यान्वयन के लिए दिया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग के तहत एक स्वायत्त संगठन है, एक राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण है जो विद्यालयों में ज्ञान के चयन और संगठन में सम्मिलित हैं और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा बनाता है।

ii) राज्य स्तर

राज्य शिक्षा विभाग के अंतर्गत (शिक्षकों, सिद्धान्तों, पाठ्यचर्या समन्वयकों, आदि) के समूह से बनी एक समिति में कार्य करने का दायित्व लिया जाता है जो राज्य भर में, राज्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, समग्र पाठ्यचर्या तैयार करती हैं। राज्य स्तर की पाठ्यचर्या को विकसित करते समय, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा से दिशा निर्देश लिए जाते हैं।

iii) प्रणाली व्यापक स्तर

यह एक जिला स्तर की पाठ्यचर्या योजना है जो एक टोली द्वारा किया जाता है। इसमें प्राथमिक, मध्य और उच्च विद्यालय स्तर के शिक्षक और जिला पाठ्यचर्या समन्वयक सम्मिलित होते हैं। यह संपूर्ण जिले को प्रभावित करने वाले रूपरेखा सम्बन्धी मुद्दों को प्रतिबिंबित करता है। पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देते समय समिति निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करती है:

- जिले में कुछ मौजूदा समस्याएँ या विचार क्या है जिनका पाठ्यचर्या नियोजन समिति ध्यान रख सकती है ?

PDF Compressor Free Version

- शिक्षक, प्रशासक और नागरिकों जैसे विभिन्न समूहों का उचित प्रतिनिधित्व करने के लिए कौन–सी विधियों का उपयोग किया जा सकता है?
- पाठ्यचर्या समिति, किन मुद्दों को विचार के लिए उपयुक्त नहीं होने के रूप में वर्गीकृत कर सकती है?

iv) निर्माण या संस्था स्तर

माता–पिता, शिक्षकों, प्रशासकों, सलाहकारों और शिक्षार्थियों का एक समूह, व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों पर एक साथ काम करता है, जो किसी भी शैक्षणिक गतिविधियों के दौरान शिक्षार्थी सामना करते हैं। इसे छिपी हुई पाठ्यचर्या भी कह सकते हैं, क्योंकि ये विशेषताएँ अधिगम का निर्माण करती हैं, उन्हें पाठ्यचर्या की योजना बनाने के लिए सचेतन प्रयासों में विचार किया जाना चाहिए।

v) शिक्षक टोली स्तर

यहाँ, विभिन्न विषय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षकों का एक समूह, एक इकाई विकसित करने के लिए एक साथ आते हैं। इसे अंतर–आनुशासनिक पाठ्यचर्या नियोजन भी कहा जाता है।

vi) व्यक्तिगत शिक्षक स्तर

इस मामले में एक शिक्षक, अधिगम उद्देश्यों के बारे में निर्णय करने की कोशिश करता है: एक शिक्षक, शिक्षार्थियों के एक समूह को क्या सिखाना चाहता है? वह दैनिक या साप्ताहिक आधार पर उपयोग के लिए योजनाओं का एक समूह विकसित करती है। एक योजना तैयार करते समय, निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जाना चाहिए, जैसे शिक्षार्थियों की विशेषताएँ, गतिविधियों का अनुक्रमण, विभिन्न अधिगम सामग्रियों की उपयुक्तता, और संसाधनों की उपलब्धतता।

vii) सहयोगी पाठ्यचर्या नियोजन स्तर

यहाँ शिक्षक, शिक्षार्थियों के एक समूह को योजना करने में निर्देशित/मार्गदर्शन करता है कि वे एक विशेष विषय का अध्ययन किस प्रकार कर सकते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी एक साथ काम करते हैं और इकाई से सम्बन्धित "क्या, कैसे, कौन, कहाँ और कब जैसे प्रश्नों के समूह पर निर्णय लेते है, जिसमें वे काम कर रहे हैं।

7.3.2 पाठ्यचर्या नियोजन में शिक्षार्थियों की सहभागिता

क्रग (1957) तथा वस्किन और पेरिश (1967) ने पाठ्यचर्या नियोजन और संरचना में शिक्षार्थियों की भागीदारी को लोकप्रिय बनाया, लेकिन आलोचकों ने महसूस किया कि शिक्षार्थियों को पाठ्यचर्या नियोजन में कोई सहभगिती नहीं होनी चाहिए क्योंकि वे जानकार नहीं हैं और इसलिए बौद्धिक रूप से भाग नहीं ले सकते। बीन एवं अन्य (1986) ने अकेले शिक्षकों द्वारा, अकेले शिक्षार्थी या दोनों सहयोगात्मक तरीके से नियोजन की संभावनाएँ प्रस्तुत कीं। उन्होंने इकाई नियोजन को प्रत्येक घटक के भीतर विभिन्न संभावनाओं को पहचान के रूप में वर्णित किया है। शिक्षक, उनसे सम्बन्धित उद्देश्यों की एक श्रेणी और सामग्री वस्तुओं की संख्या, गतिविधियों, संसाधनों और मापने वाले उपकरणों, आदि को परिभाषित कर सकते हैं। इसके बाद शिक्षार्थी प्रत्येक घटक में किसी भी एक या अधिक संभावनाओं के चयन में सम्मिलित हो सकते है। उदाहरण के लिए, उद्देश्यों और संसाधनों का चयन शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है, लेकिन शिक्षार्थी संभव अधिगम गतिविधियों मापन उपकरणों आदि का चयन कर सकते हैं।

PDF Compressor Free Version

वे शिक्षार्थियों से संगठन हिन्दुओं, जैसे : अध्ययन का शीर्षक चुनने को कह सकते हैं और फिर अध्यापक अन्य नियोजनों, अर्थात् विषयवस्तु, क्रियाकलाप, संगठित हिन्दु से सम्बन्धित संसाधन आदि में उनकी मदद कर सकते हैं।

बीन, एवं अन्य (1986) ने एक कक्षा की तकनीक के रूप में शिक्षक–शिक्षार्थी योजना के कई लाभों को सूचीबद्ध किया है, जो निम्नलिखित हैं:

- यह सहयोग और भागीदारी निर्णय लेने के आधार पर लोकतांत्रिक जीवन का एक प्रतिमान प्रदान करते हैं।
- यह सम्बद्ध होने की भावनाओं के अवसर प्रदान करके मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करता है।
- अधिगम एक आपसी प्रक्रिया है, ऐसे सुझावों से यह शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों को बढ़ाता है।
- यह शिक्षकों को यह जानने का मौका देता है कि शिक्षार्थियों के लिए क्या महत्वपूर्ण और रुचिकर है।
- यह भाग लेने के अवसर प्रदान करके सामाजिक क्षमता को बढ़ावा देता है।
- इससे शिक्षार्थियों को अपने विचारों और रूचियों को व्यक्त करने का मौका मिलता है।

हालाँकि यह उल्लेखनीय है कि शिक्षक–शिक्षार्थी नियोजन केवल एक तकनीक नहीं है। इसके बजाय यह लोकतांत्रिक भागीदारी की अवधारणा पर पाठ्यचर्या नियोजन के विचार को आधार प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. पाठ्यचर्या नियोजन को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2. राज्य स्तर पर, पाठ्यचर्या नियोजन के अनुसार तीन बुनियादी मुद्दों की सूची बनाइए।

....

....

....

3. शिक्षक टोली स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

7.4 पाठ्यचर्या संरचना (डिजाइन) के प्रतिमान

अभी तक हमारी चर्चा के दौरान, हमने यह स्पष्ट किया है कि शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक सार्थक पाठ्यचर्या योजना महत्वपूर्ण है। एक पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए, विभिन्न प्रतिमान प्रस्तावित किए गए हैं। आइए, प्रत्येक प्रकार के इन प्रतिमानों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं:

क) टॉयलर का प्रतिमान

टॉयलर के अनुसार, पाठ्यचर्या अन्वेषण में सम्मिलित लोगों को यह परिभाषित करने की कोशिश करनी चाहिए:

- विद्यालय का एक उद्देश्य;
- इन उद्देश्यों से सम्बन्धित शैक्षिक अनुभव;
- इन अनुभवों का एक संगठन; और
- इन उद्देश्यों की प्राप्ति के सन्दर्भ में मूल्यांकन

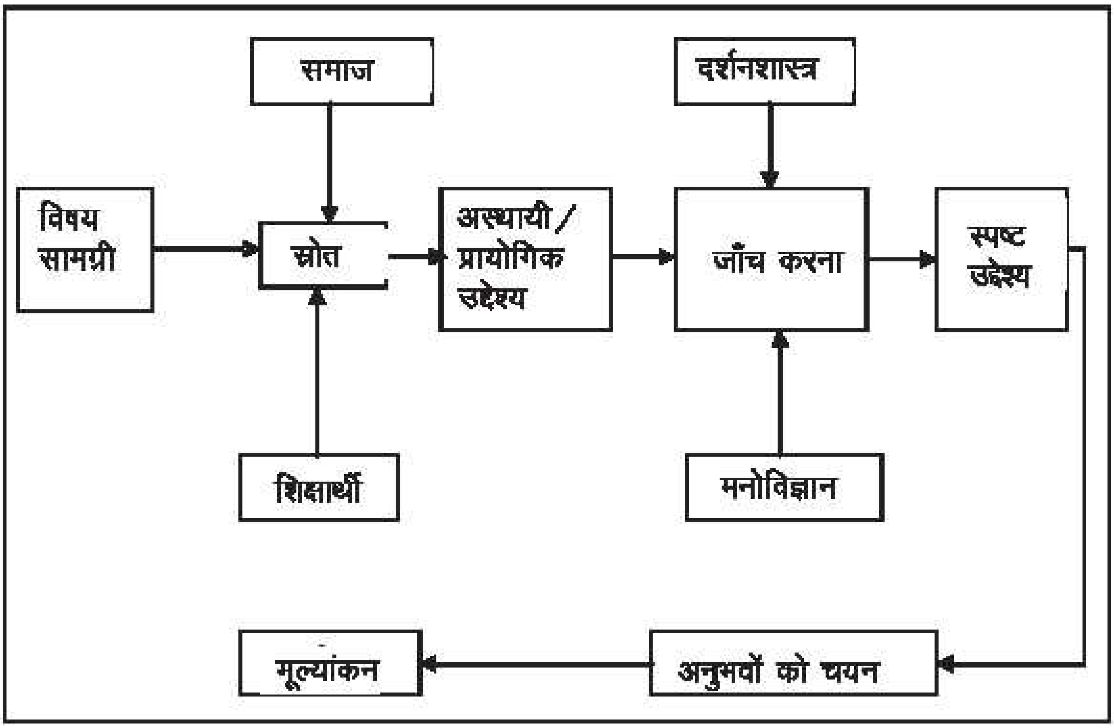

आकृति 7.2: टॉयलर का पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान

टॉयलर के प्रतिमान से पता चलता है कि अधिगम उद्देश्यों की पहचान करने के लिए, हमें समाज, शिक्षार्थियों और विषय सामग्री से जानकारी एकत्रित करने की आवश्यकता है। इसके बाद, हमें उन्हें सूक्ष्म अनुदेशात्मक उद्देश्यों में परिवर्तित करना होगा। अंतिम चरण मूल्यांकन है ताकि उद्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त किया गया है या नहीं, इसके बारे में राय प्रदान करना।

ख) टॉबा का प्रतिमान

उनके अनुसार, शिक्षकों को, पारंपरिक निगमनात्मक दृष्टिकोण का विरोध करते हुए, विशिष्ट के साथ प्रारंभ करने और सामान्य संरचना का निर्माण करने वाले प्रेरक दृष्टिकोण को अपनाने के द्वारा, अपने शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण–अधिगम सामग्रियों को तैयार करना चाहिए। टॉबा ने पाठ्यचर्या विकास के अपनी जमीनी स्तर के प्रतिमान में सात चरणों को सूचीबद्ध किया है, जिसमें शिक्षकों को प्रमुख निविष्टयाँ प्रदान करनी हैं।

PDF Compressor Free Version

- आवश्यकताओं का निदान
- उद्देश्यों को निर्धारण
- सामग्री का चयन
- सामग्री का संगठन
- अधिगम अनुभवों का चयन
- अधिगम अनुभवों का संगठन
- मूल्यांकन

यद्यपि टॉबा के प्रतिमान में कई गुण हैं, परन्तु कुछ आलोचकों का कहना है कि इसकी प्राथमिक कमजोरियाँ निम्नलिखित प्रकार की हैं:

- यह एक उच्च तकनीकी और विशिष्ट प्रक्रिया के रूप में भागीदारी लोकतंत्र की अवधारणा पर लागू होता है, और
- यह मानता है कि शिक्षकों के पास इस तरह की पाठ्यचर्या गतिविधियों में संलग्न करने के लिए विशेषज्ञता और समय होता है।

ग) सेलोर और एलैक्जेंडर के प्रतिमान

सेलोर और एलैक्जेंडर ने पाठ्यचर्या संरचना को पाठ्यचर्या विकास के एक व्यवस्थित दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया है। इसकी एक आत्म व्याख्यात्मक छवि नीचे दी गई है:

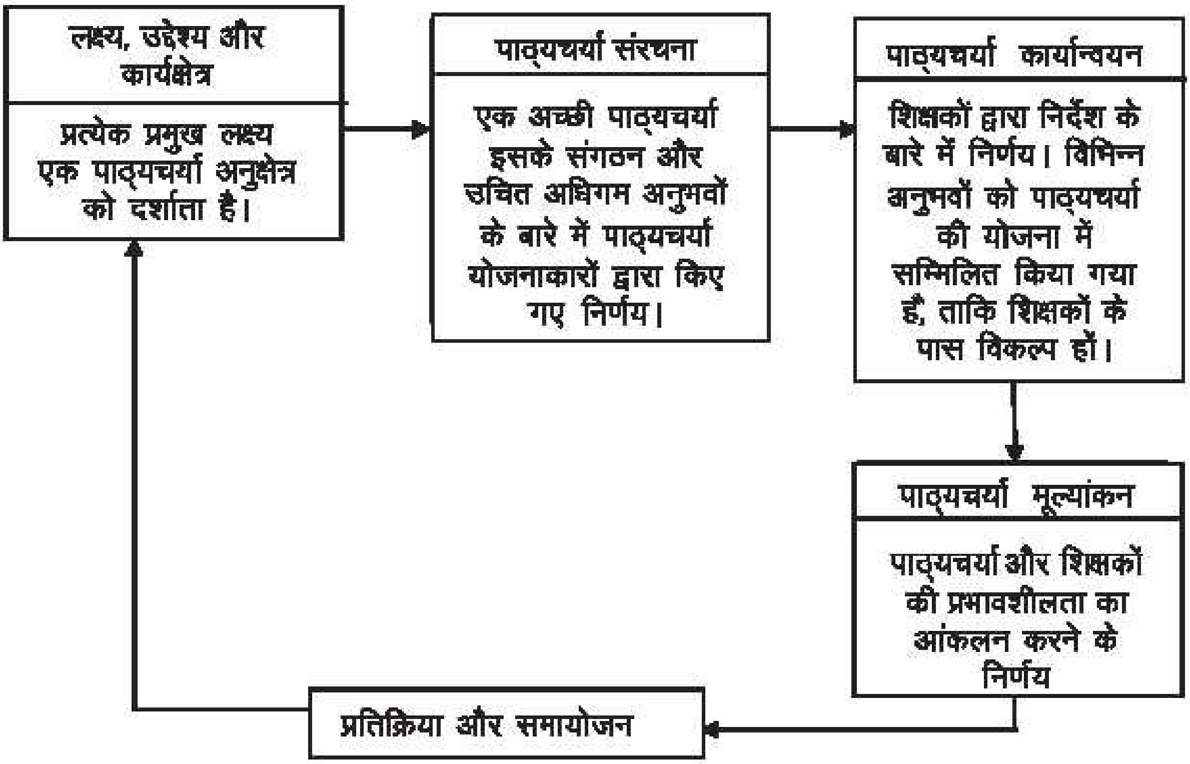

आकृति 7.3: सेलोर और एलैक्जेंडर का प्रतिमान

घ) मिलर और सैलर का प्रतिमान

इसमें जोर दिया गया है कि पाठ्यचर्या विकास को, पाठ्यचर्या के प्रयोजन की दिशा में कम से कम निम्नलिखित तीन अभिविन्यासों को प्रदर्शित करना चाहिए:

- **हस्तांतरण की स्थिति:** पाठ्यचर्या को शिक्षार्थियों को कौशल, तथ्यों और मूल्यों को संचालित करना चाहिए।

PDF Compressor Free Version

- **कार्य संपादन/लेन–देन की स्थिति:** पाठ्यचर्या को कार्य सम्पादन की, शिक्षार्थियों और शिक्षक के बीच एक वार्तालाप प्रक्रिया (शैक्षणिक अंतःक्रिया) के रूप में देखा जा सकता है।
- **रूपांतरण की स्थिति:** व्यक्तिगत परिवर्तन और सामाजिक दृष्टिकोण, पाठ्यचर्या के माध्यम से प्रभावित हो सकते हैं।

आरेखित रूप से योजना को आकृति 7.4 के अनुसार प्रदर्शित किया जा सकता है:

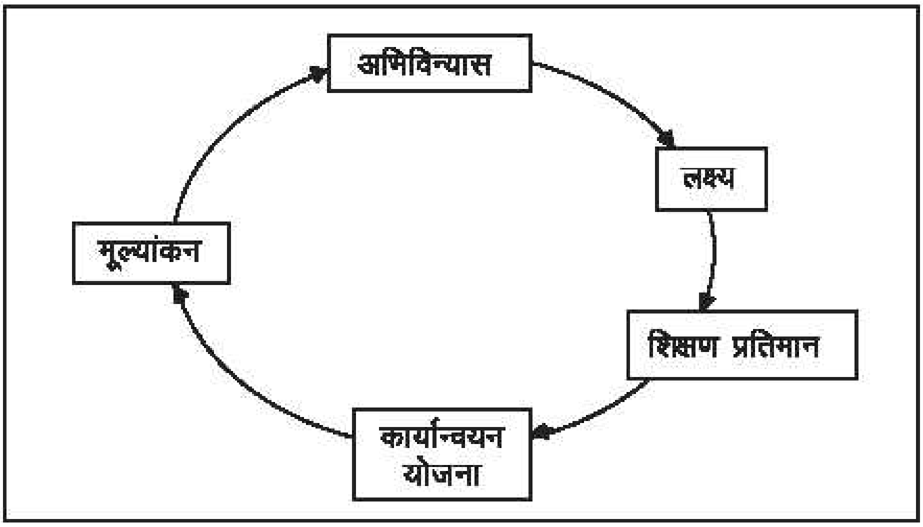

आकृति 7.4: मिलर और सैलर का प्रतिमान

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4. टॉबा के प्रतिमान की क्या कमियाँ हैं?

....

....

....

7.5 पाठ्यचर्या संरचना के उपागम

शिक्षण–अधिगम की स्थिति के विभिन्न पहलुओं के बारे में निर्णय लेने में प्रयुक्त संगठन के एक प्रतिरूप को रूपरेखा सम्बन्धी उपागम कहा जाता है (बीन, एवं अन्य, 1986)। पाठ्यचर्या विकास के लिए एक विशेष उपागम का चयन निम्नलिखित को दर्शाता है:

i) उद्देश्यों का चयन

ii) विषय सामग्री या विषयवस्तु का उपयोग

iii) प्रदान किए जाने वाले अधिगम अनुभवों के प्रकार

iv) शिक्षण–अधिगम स्थिति के लिए शिक्षकों, शिक्षार्थियों और संगठनात्मक केन्द्र की भूमिका

v) अधिगम अनुभवों को प्रदान करने के लिए विधि का चयन

PDF Compressor Free Version

इन उपगमों को चार प्रमुख समूहों में वर्गीकृत किया गया है। अब हम ऊपर दिए गए क्रमानुसार पाठ्यचर्या के तरीकों पर चर्चा करते हैं:

क) विषयक्षेत्र उपागम

सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले पाठ्यचर्या सम्बन्धी उपागमों में से एक विषय केन्द्रित उपागम है। इस संरचना में पाठ्यचर्या की योजना, अलग विषय क्षेत्रों या विषयों (अध्ययन का विषय) के आसपास बनाई जाती है।

मॉरिसन (1940) ने महसूस किया कि ऐसी एक संरचना, माध्यमिक स्तर पर एक शिक्षार्थी को एक विषयक्षेत्र में रूचि और क्षमता विकसित करने की अनुमति दे सकती है। हालाँकि उन्होंने प्रस्तावित किया कि विभिन्न शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए, विभिन्न पाठ्यचर्या की पेशकश की जानी चाहिए। विषय सामग्री के लिए यह अभिविन्यास, अधिगम के लिए एक मानसिक अनुशासन उपागम को प्रतिबिम्बित करता है, इस प्रकार विषय की दक्षता और कौशल, अधिगम उद्देश्यों के आधार बन जाते हैं।

ख) विस्तृत क्षेत्र उपागम

यह उपागम, सम्बन्धित क्षेत्रों से दो या अधिक विषयों को व्यापक क्षेत्र में जोड़कर पाठ्यचर्या घटकों का आयोजन करता है। आधुनिक समय में इस तरीके की लोकप्रियता निम्नलिखित कारणों से हैं:

i) पाठ्यचर्या स्थापित विषय सीमाओं में वर्गीकृत नहीं हैं।

ii) शिक्षकों को सामग्री चुनने के लिए अधिक लचीलापन उपलब्ध है।

iii) शिक्षार्थी, पाठ्यचर्या में विभिन्न विषयक्षेत्रों के अंतरसम्बन्ध देख सकते हैं। वे व्यापक क्षेत्रों में ज्ञान का सामान्यीकरण कर सकते हैं।

इस उपागम की आलोचना यह है कि शिक्षार्थियों की व्यापक क्षेत्रों में विभिन्न अवधारणाओं की एक ऊपरी समझ विकसित होती है।

ग) समस्या केन्द्रित उपागम

इस उपागम का उपयोग करने का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षार्थियों में महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है और ऐसी समस्याओं को हल करने में कौशल विकसित करना है। कुछ समस्या केन्द्रित उपागम, दृढ़ जीवन की स्थितियों पर ध्यान देते हैं, अन्य समकालीन सामाजिक समस्याओं से निपटते हैं, कुछ जीवन के क्षेत्रों को संबोधित करते हैं और कुछ समाज के पुनर्निर्माण से सम्बन्धित हैं।

समस्या केन्द्रित पाठ्यचर्या संरचनाएं उन सामाजिक आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए बनाए गई है, जो प्राप्त नहीं हैं और संस्कृति के संरक्षण के लिए भी हैं। उदाहरण के लिए, पर्यावरण की समस्याओं, प्रौद्योगिकी, नस्लवाद, भविष्य विज्ञान, आदि पर पाठ्यचर्या विकसित की जा सकती हैं।

घ) शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम

यह जोर देता है कि सभी विद्यालयों की शिक्षा, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं, रूचियों और क्षमताओं के आसपास होनी चाहिए। इस तरीके के पीछे प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों को अपने जीवन की समस्याओं से जूझने में सहायता करना है और वर्तमान के लिए तैयार करना है। इस दर्शन का प्रमुख स्रोत रुसो की पुस्तक "एमिल" है जो 1762 में प्रकाशित

PDF Compressor Free Version

हुई थी। उन्होंने लिखा कि जब एक बच्चा किशोरावस्था के करीब है, तो उसे "सैद्धान्तिक अध्ययनों की तरफ जाने के लिए बहुत कौशल और विवेक की आवश्यकता है।" उनका मानना था कि शिक्षकों को, शिक्षार्थियों को प्रकृति का पता लगाने और अपने दम पर सीखने का अवसर प्रदान करना चाहिए। "उसके सामने समस्याओं को रखो और उन्हें स्वयं हल करने दें। उसे विज्ञान नहीं पढाएँ, उसे इसे खोजने दे।" (रूसो, 1911)। यह उपागम दार्शनिकों, जैसे फ्रौबेल, पेस्टालॉजी के विचारों को भी लागू करता है, वे करके सीखने के दर्शन के समर्थक हैं। उदाहरण के लिए, भूगोल को पढ़ाने के लिए, शिक्षार्थियों को मानचित्र के काम सिखाने के लिए, क्षेत्रीय यात्राओं के लिए ले जाना चाहिए और परिदृश्यों के रेखाचित्र बनाने चाहिए। हालाँकि, अध्ययन के विषय शिक्षकों द्वारा व्यवस्थित और नियोजित किए जा सकते हैं, जबकि शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच चर्चा से अधिगम सहज ही घटित हो जाती है। उपर्युक्त बाल केन्द्रित संरचना, जिसके लिए ड्यूवी जिम्मेदार हैं, वास्तव में पार्कर की कल्पना थी। पार्कर (1894) का मानना था कि अनुदेश (शिक्षा) की पद्धति, अधिगम के लिए बच्चे की प्राकृतिक पहुँच पर आधारित होनी चाहिए। पार्कर की तरह, ड्यूवी का मानना था कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति सामाजिक लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हमने पाठ्यचर्या नियोजन के चार प्रमुख उपागम पर चर्चा की है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. पाठ्यचर्या विकास के लिए शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम से आपका क्या अभिप्राय है?

....

....

....

6. पाठ्यचर्या विकास में विषय–केन्द्रित उपागम के मूल सिद्धान्तों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

7.6 पाठ्यचर्या संरचना की प्रक्रिया

पाठ्यचर्या के देखने पर आपके मन में विभिन्न प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं, जैसे: विद्यालय शिक्षा में विभिन्न प्रकार के ज्ञान का चयन करने का आधार क्या है? विद्यालयों में ज्ञान की श्रेणियों का चयन, वैधता और व्यवस्थित कौन करता है? और किस रूप में? इन प्रश्नों के उत्तर इस भाग में दिए जाएँगे।

पाठ्यचर्या विकास एक विशेष कार्य है जिसके लिए उद्देश्यों को निर्धारित करने, दिए गए अधिगम अनुभवों के बारे में, और पाठ्यचर्या गतिविधियों द्वारा लाए गए परिवर्तनों का मूल्यांकन, आदि के बारे में एक व्यवस्थित सोच की आवश्यकता है। हमें उस क्रम का

PDF Compressor Free Version

पालन करने की आवश्यकता है जिसमें पाठ्यचर्या विकास से सम्बन्धित निर्णय लिए जाते हैं और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी निर्णय लेने से पहले सभी सम्बन्धित विचारों को ध्यान में रखा जाए। एक विचारपूर्वक योजनाबद्ध और गतिशील रूप से गठित पाठ्यचर्या के लिए हमें निम्नलिखित सोपानों का पालन करना चाहिए:

- शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन
- शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित करना
- विषयवस्तु चयन के लिए मानदंड
- विषयवस्तु का संगठन
- अधिगम अनुभवों का चयन
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन

i) शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन

पाठ्यचर्या का एक हिस्सा बनाने के लिए, किसी भी ज्ञान का चयन करते समय, आकलन करने की आवश्यकता है। आवश्यकता आंकलन पाठ्यचर्या निर्माण करने वालों की निम्नलिखित तरीकों से सहायता करता है:

शिक्षार्थी	• शिक्षार्थी की वर्तमान स्थिति और अभीष्ट में मौजूदा अन्तर को संबोधित करने के लिए उन्हें प्रेरित करने में सहायता करता है।
समाज	• शैक्षिक कार्यक्रम के सामाजिक कार्य को समझने और पहचानने में।
विषयवस्तु	• एक विषय की संरचना को रूपरेखा देने में सहायता करता है, जिसमें उप–विषय, उनकी प्रस्तुति का क्रम और प्रत्येक उपविषय के लिए उपयुक्त श्रेणी (ग्रेड) स्तर।

ii) शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित करना

टॉयलर (1949) के अनुसार, महत्वपूर्ण उद्देश्यों की एक सूची बनाना, अधिगम अनुभवों का चयन करने में और शिक्षण को निर्देश देने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त उद्देश्यों के एक रूप के बारे में, उन्होंने इस प्रकार कहा है:

- विद्यालय के उद्देश्यों का कोई भी कथन, शिक्षार्थियों में होने वाले परिवर्तनों का विवरण होना चाहिए।
- उद्देश्य, उपविषयों, अवधारणाओं, सामान्यीकरण या सामग्री के अन्य तत्व जो पाठ्यचर्या से सरोकार रखते हैं, को सूचीबद्ध करने को कहा जाना चाहिए।
- चूंकि उद्देश्यों के एक कथन का प्रयोजन शिक्षार्थियों में लाए जाने वाले परिवर्तनों को सूचित करना है, तब इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की संभावना से अनुदेशात्मक गतिविधियों की योजना बनाई और विकसित की जा सकती है।
- उद्देश्यों के कथन को इस संदर्भ में व्यक्त किया जाना चाहिए जिसमें यह शिक्षार्थियों में विकसित किए जाने वाले व्यवहारों के प्रकार और उसके जीवन की सामग्री या क्षेत्र का पता लगाएगा जिसमें यह व्यवहार संचालित होता है।

PDF Compressor Free Version

- उद्देश्यों को संक्षिप्त और स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए दो–आयामी आलेख (चार्ट) (व्यवहार पहलू और सामग्री पहलू) का प्रयोग करना अक्सर उपयोगी है ।

iii) विषयवस्तु चयन के लिए मानदंड

ऑरंस्टीन और हंकिन (2004) ने बताया कि विषयवस्तु पाठ्यचर्या की "विषयवस्तु" है। यह "क्या" है जिसे पढ़ाया जाना है, "क्या" जो शिक्षार्थियों को सीखना है। विषयवस्तु तथ्यों, अवधारणाओं, सिद्धान्तों, नियमों और सामान्यीकरणों से संदर्भित है। विषयवस्तु चयन को नीचे दी गई आकृति के अनुसार भी समझा जा सकता है:

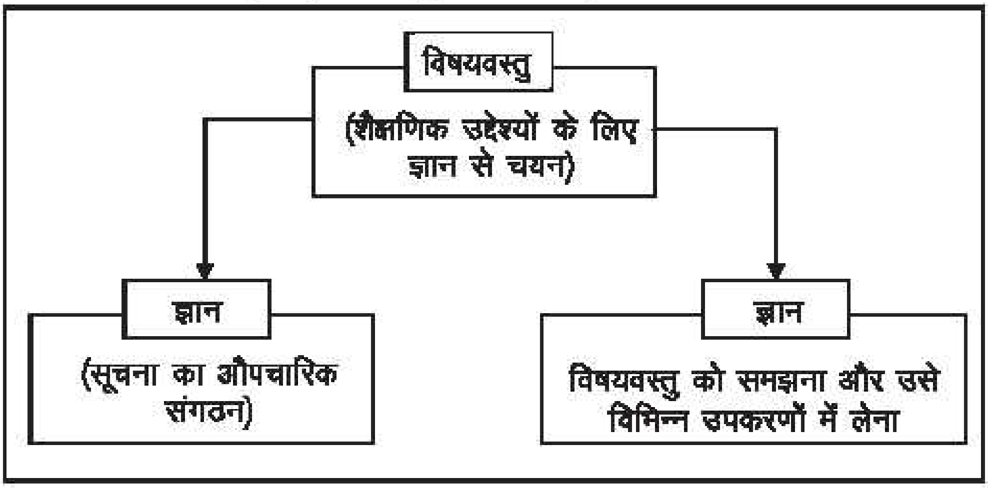

आकृति 7.5: विषयवस्तु का चयन

व्हीलर (1967), टॉबा (1962) तथा निकोलस और निकोलस (1972) ने विषय चयन के लिए निम्नलिखित मापदंड अग्रेषित किए हैं:

- विषयवस्तु की उपलब्धता
- विषयवस्तु का महत्व
- कार्यक्षेत्र और गहराई का उचित संतुलन
- शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और रूचियों के लिए उपयुक्तता
- विषयवस्तु की स्थिरता
- मुख्य विचारों और बुनियादी अवधारणाओं के साथ विषयवस्तु सामग्री का तार्किक सम्बन्ध;
- विषयवस्तु की सीखने की क्षमता;
- विषयवस्तु की, दूसरे विषयों के साथ अंतःक्रिया या आकर्षित होने की संभावना;
- सामग्री जो समाज के विकास में योगदान करती है।

iv) विषयवस्तु का संगठन

टॉयलर (1949) के अनुसार, पाठ्यचर्या संगठन, उद्देश्यों, अधिगम अनुभवों और सामग्रियों का एक एकीकृत और समेकित तरीके से व्यवस्थित प्रबंध करना है। यह किसी के सुसंगत कार्यक्रम को बनाने के लिए विषयवस्तु और अधिगम अनुभवों का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है।

PDF Compressor Free Version

इसी प्रकार, पाठ्यचर्या संगठित करने में, विशेषकर, सामग्रियों और अधिगम अनुभवों को क्रम में लाने के लिए, संगठित करने वाले सिद्धान्तों की पहचान करना भी आवश्यक है जिसके द्वारा ये धागे एक साथ बुने जाएँगे (टॉयलर, 1949)। इनमें से कुछ पहचाने गए संगठन सिद्धान्त निम्नांकित हैं:

- सरल से प्रारंभ और जटिल की ओर अग्रसर;
- पूरे से एक भाग तक;
- कालक्रमबद्ध उपागम;
- संकेन्द्रित चक्र के आधार पर अनुक्रम; तथा
- पूर्वापेक्षित शिक्षण के आधार पर अनुक्रम।

अब हम इन्हें विस्तार से समझें:

i) **अनुक्रमण:** पाठ्यचर्या में अनुक्रम स्थापित करने का अभिप्राय, विषयवस्तु और सामग्रियों को किसी प्रकार के क्रम में रखना है। इसके लिए, कुछ शिक्षण सिद्धान्त जैसे अज्ञात से ज्ञात तक जाना, सरल से जटिल तक, ठोस से अमूर्त तक, आदि को ध्यान में रखा जाना चाहिए। इन सिद्धान्तों के अतिरिक्त, संसाधन, जो शिक्षार्थियों के अधिगम को सुविधाजनक बनाते हैं, को व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

ii) **निरंतरता:** पाठ्यचर्या को, प्रगतिशील, अधिक माँग वाला प्रदर्शन, इससे निपटने के लिए अधिक जटिल सामग्रियाँ, विचारों को समझने के लिए, सम्बन्धित करने के लिए, लागू करने के लिए, इत्यादि के लिए अधिक गहराई और विस्तार प्रदान करना चाहिए। ऐसी संचयी शिक्षा, सोच, दृष्टिकोण और कौशल पर लागू हो सकती है।

शिक्षार्थियों को उत्तरोत्तर अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए, जिससे आलोचनाओं और विचारों के विश्लेषण के अधिक जटिल रूपों की परीक्षा तक पहुँच सकें। उदाहरण के लिए, कक्षा II (श्रेणी II) का एक छात्र, परस्पर निर्भरता की अवधारणा परिवार के सदस्यों के बीच सीख सकता है। यह एक उच्च श्रेणी में उस अवधारणा का प्रयोग कर सकता है लेकिन राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता, राजनीतिक निर्णय आदि के संदर्भ में। श्रेणी की सामग्री को अधिगम/शिक्षा में निरंतरता प्रदान करनी चाहिए और भूलने के माध्यम से होने वाले नुकसान को रोकना चाहिए। आप जानते हैं कि विच्छेदित सामग्री शिक्षार्थी को अपने गंतव्य के लिए नहीं ले जाती है, जोकि उद्देश्यों की प्राप्ति है।

iii) **एकीकरण:** यह माना जाता है कि अधिगम तब अधिक प्रभावी होता है, जब एक क्षेत्र से तथ्यों और सिद्धान्त को दूसरे से सम्बन्धित कर सकते हैं, विशेषकर जब ज्ञान लागू किया जाता है। पाठ्यचर्या योजनाकारों का निर्धारित शिक्षार्थियों को पढ़ाने जाने वाले विभिन्न विषयों के बीच सम्बन्धों को स्थापित करके पाठ्यचर्या को एकीकृत करने का प्रयास करना चाहिए। एक विधि सम्बन्धित क्षेत्रों को एक व्यापक क्षेत्र में जोड़ा जा सकता है, उदाहरण के लिए, भूगोल और इतिहास को सामाजिक अध्ययन में संयोजित करना। गणित और विज्ञान जैसे दो विषयों को सम्मिलित करना, सामग्री को एकीकृत करने का एक अन्य प्रयास है।

iv) पूर्ववर्ती चर्चा से स्पष्ट हुआ होगा कि पाठ्यचर्या संगठन को विषयवस्तु के तर्क और अधिगम अनुभवों के मनोवैज्ञानिक अनुक्रम दोनों को संरक्षित और परिरक्षित करना चाहिए। तार्किक संगठन में, नियोजक कुछ नियमों के अनुसार, इसे अधिक प्रबंधनीय बनाने के लिए सामग्री को व्यवस्थित करते हैं।

PDF Compressor Free Version

अर्थशास्त्र में, उदाहरण के लिए, आपूर्ति और माँग की अवधारणा सामग्री पर केन्द्रीकृत है। इनके बिना, पूँजी, श्रम और बाजार की अवधारणाओं को समूहित नहीं किया जा सकता है।

विषयवस्तु का मनोवैज्ञानिक संगठन यह समझने में सहायता करता है कि कोई व्यक्ति वास्तव में इसे कैसे सीख सकता है (यानी सामग्री)। विषयवस्तु को इस तरह से व्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि अमूर्त विषयवस्तु से पहले मूर्त विषयवस्तु का अनुभव प्राप्त हो।

v) अधिगम अनुभवों का चयन

अधिगम अनुभवों से अभिप्राय शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शिक्षण विधियों तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुचारू ढंग से चलाने के लिए गतिविधियों से होता है। अधिगम अनुभवों का चयन करने से पहले हमें निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए:

- समग्र लक्ष्यों तथा पाठ्यचर्या के विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए यह देखना होगा कि क्या अधिगम अनुभव उपयुक्त ढंग से कार्य कर रहे हैं?
- क्या शिक्षार्थी प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक स्थितियों में प्रयोग करने में सक्षम होंगे;
- क्या समय, कौशल, संसाधनों इत्यादि के संदर्भ में दिए हुए समय में पाठ्यचर्या की विषयवस्तु को सीखा जा सकता है?
- क्या अधिगम अनुभवों से शिक्षार्थियों में सोचने की योग्यताएँ तथा वैज्ञानिक/तर्कशक्ति विकसित होगी?
- क्या अधिगम अनुभव शिक्षार्थियों में एक व्यक्ति के रूप में तथा समूह/समाज के सदस्य के रूप में अस्तित्व के बारे में समझ विकसित करेंगे?
- क्या अधिगम अनुभव शिक्षार्थियों में नए अनुभवों के प्रति खुलापन तथा विविधता के प्रति सहनशीलता को बढ़ावा देंगे?
- क्या अधिगम अनुभवों द्वारा शिक्षार्थियों की आवश्यकताएँ तथा रूचियाँ पूरी हो सकेंगी?
- क्या अधिगम अनुभवों द्वारा शिक्षार्थियों की व्यक्तित्व के तीनों आयामों का उपयुक्त विकास हो पाएगा?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के अतिरिक्त, हमें उपयुक्त अधिगम के लिए सही भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार करना चाहिए। शैक्षिक वातावरण ऐसा होना चाहिए जिससे सामाजिक आवश्यकताएँ पूरी हों तथा जागरूकता तथा दूसरों के लिए सम्मान/सहानुभूति इत्यादि विकसित हों। इससे ऐसी गतिविधियों का उद्भव एवं विकास होना चाहिए जो अधिगम को बढ़ावा दें।

vi) पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

किसी भी शैक्षणिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन इस बात से होता है कि इसमें लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने की कितनी क्षमता है। उद्देश्यों की प्राप्ति का आंकलन करने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करना चाहिए। किसी भी गतिविधि के मूल्यांकन की कुछ विशेषताएँ होती हैं। यह महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

PDF Compressor Free Version

- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के साथ निरंतरता
- समुचित उपचारात्मक मूल्य
- व्यापकता
- वैधता
- निरंतरता

मूल्यांकन गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों होता है अर्थात् यह रचनात्मक विकास की प्रक्रिया में सुधार के उद्देश्य से तथा योगात्मक प्रत्येक चरण या सम्पूर्ण कार्यक्रम के अन्त में अनुदेशन संरचना की प्रभावशीलता को जानने हेतु दोनों प्रकार का हो सकता है। शैक्षिक मूल्यांकन, निर्देशन तथा आकलन दोनों प्रकार के कार्य करता है।

पाठ्यचर्या विकास एवं क्रियान्वयन की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान उपयुक्त तकनीकें एवं विधियाँ अपनानी चाहिए ताकि सभी तरह के प्रमाण एकत्रित किए जा सकें। इन तकनीकों तथा विधियों को अधिगम उद्देश्यों की प्रकृति तथा उपलब्धि के प्रकार के आकलन के आधार पर चयनित किया जाना चाहिए। शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता या असफलता सम्बन्धी तथ्य पाठ्यचर्या को बनाने वाले तथा क्रियान्वित करने वालों से प्रतिपुष्टि के द्वारा प्राप्त करने चाहिए।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि मूल्यांकन के दो निम्न प्रकार हैं:

- शिक्षार्थी मूल्यांकन, तथा
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन

(I) शिक्षार्थी मूल्यांकन: शिक्षार्थी मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन का आंकलन करना होता है। यह व्यवहार में परिवर्तन निम्नलिखित तरीके से जाँचा जा सकता है:

- मौखिक, लिखित या व्यावहारिक परीक्षण
- अंतःक्रियात्मक शिक्षण–अधिगम सत्रों, विभिन्न परिस्थितियों में चर्चाओं इत्यादि के दौरान शिक्षार्थियों से प्राप्त उत्तर।
- विभिन्न प्रकार के लिखित परिणाम, उदाहरण के लिए, परियोजना प्रतिवेदन, संगोष्ठी सत्रांत प्राप्त, इत्यादि।

शिक्षार्थियों के मूल्यांकन के लिए पर्याप्त अनुभव तथा कौशल होना चाहिए ताकि उच्च स्तर के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सही प्रश्नों का निर्माण किया जा सके।

हम शिक्षार्थियों की उपलब्धि का वैध तरीके से आंकलन करने के लिए, अवलोकन अनुसूची तैयार कर सकते हैं। यह एक ही प्रकार के विभिन्न कार्यों या एक ही क्षेत्र के कार्यों में प्रयुक्त हो सकती है। आकलन करने के लिए गुणात्मक मापदंड बनाए जा सकते हैं ताकि 1, 2, 3, 4, 5 अथवा A, B, C, D, E के रूप में श्रेणीकरण (रेटिंग) की जा सके। संपूर्ण उपलब्धि के लिए प्राप्त अंक या ग्रेड के लिए व्याख्या या गुणात्मक कथन भी दिए जा सकते हैं।

(II) पाठ्यचर्या मूल्यांकन: शिक्षार्थी मूल्यांकन, पाठ्यचर्या मूल्यांकन का ही भाग है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षा में मूल्यांकन में केवल अधिगम का ही मूल्यांकन या शिक्षार्थियों की उपलब्धि तक सीमित होना चाहिए। वास्तव में मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के नियोजन, विकास एवं क्रियान्वयन के विभिन्न अंगों का आंकलन सम्मिलित होता है।

PDF Compressor Free Version

हम यहाँ संक्षिप्त में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के बारे में चर्चा करेंगे क्योंकि अगली इकाई में विस्तृत रूप में इसके बारे में चर्चा की गई है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन से तात्पर्य पाठ्यचर्या के विभिन्न अंगों के मूल्यांकन से है, जिसमें उद्देश्य, पाठ्यवस्तु, विधियाँ एवं मूल्यांकन प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती है ताकि यह जाना जा सके कि क्या पाठ्यचर्या से लक्षित समूह की आवश्यकताएँ एवं शैक्षिक उद्देश्य पूरे हो रहे हैं या नहीं।

पाठ्यचर्या के घटकों की अकेले में जाँच नहीं की जा सकती है क्योंकि एक घटक या अन्य घटकों को प्रभावित करता है। क्योंकि ये घटक एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं, अतः प्रत्येक को अन्य के साथ जोड़कर ही मूल्यांकन किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन आकृति 7.7 में दर्शाया गया है:

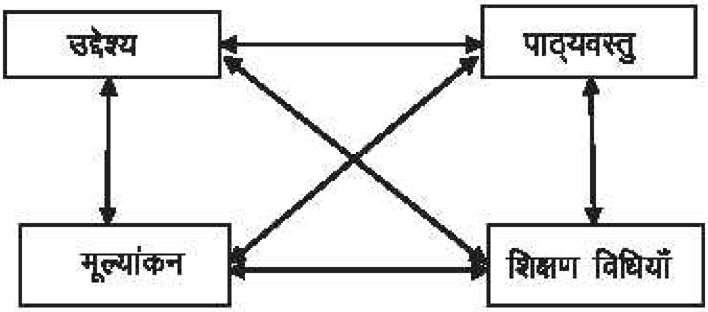

आकृति 7.7: पाठ्यचर्या अंगों की अंतःनिर्भरता

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य, पाठ्यचर्या में सुधार लाने के लिए प्रतिपुष्टि को एकत्र करना तथा उसका प्रयोग करना है। हममें से कोई भी पाठ्यचर्या मूल्यांकन की महत्ता के बारे में विवाद नहीं कर सकता है, फिर भी हम इसे कभी–कभार ही करते हैं। इसके लिए दो कारण उत्तरदायी हैं:

- मूल्यांकन के परिणाम अधिकतर नजरअंदाज किए जाते हैं, तथा
- नई व्यवस्था को स्वीकारने में प्रतिरोध हालाँकि इसकी क्षमता का ज्ञान होता है।

क्योंकि पाठ्यचर्या में सुधार के लिए मूल्यांकन आधारित सूचना आवश्यक होती है, अतः यह जरूरी हो जाता है कि हम इसके पीछे जिम्मेदार मुद्दों को अच्छी तरह से समझ लें। ये मुद्दे इस खंड की इकाई 4 में विस्तारपूर्वक वर्णित किए गए हैं।

viii) विकासात्मक पूर्व परीक्षण

हमने पिछले उपभाग में बताया कि मूल्यांकन, पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के दौरान किया जा सकता है। इस तरह का मूल्यांकन रचनात्मक या निर्माणात्मक मूल्यांकन कहलाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन जो कि विकास या क्रियान्वयन के अंत में किया जाता है, उसे योगात्मक पाठ्यचर्या कहते है।

पाठ्यचर्या विकास के लिए पूर्व परीक्षण, एक रचनात्मक मूल्यांकन है जो पाठ्यचर्या विकास की प्रत्येक अवस्था के दौरान किया जाता है। इसका उद्देश्य रूपरेखा एवं विकास के दौरान पाठ्यचर्या के प्रत्येक घटक में सुधार लाना है। इसके लिए वैज्ञानिक सूचना एकत्रित की जाती है ताकि विकसित की जा रही पाठ्यचर्या में सुधार लाने सम्बन्धी निर्णय लिए जा सके। पाठ्यचर्या की विकास की अवस्थाओं के दौरान, मूल्यांकन के प्रयासों द्वारा उन व्यक्तियों को विस्तृत एवं विशेषीकृत जानकारी मिलती है जो पाठ्यचर्या के मूल्यांकन से जुड़े होते हैं। यह पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के दौरान अधिकतम

PDF Compressor Free Version

हो सकता है। उदाहरण के लिए, पाठ्यचर्या निर्माण के दौरान, पाठ्यचर्या योजनाविद् यह जाँच कर सकते हैं कि कोई विषयवस्तु शिक्षार्थियों के सीखने के लिए उपयुक्त है या नहीं? इसके परिणामों के आधार पर विषयवस्तु में सुधार या फिर उसे हटाया भी जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन में प्रतिपुष्टि प्राप्त की जाती है तथा आवश्यक तालमेल की जाती हैं। अतः पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

7. विषयवस्तु चयन के कोई तीन मापदंड लिखिए।

....

....

....

8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन का क्या उद्देश्य है? संक्षिप्त में लिखिए।

....

....

....

9. शिक्षाविदों में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रति मतभेदों के लिए दो प्रमुख कारणों को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

7.7 पाठ्यचर्या संरचना और विकास में शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक पाठ्यचर्या का ऐसा अंग है, जिसे पाठ्यचर्या परिवर्तन या विकास की प्रक्रिया से वंचित नहीं किया जा सकता है। एक शिक्षक पाठ्यचर्या नियोजन एवं विकास में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होना चाहिए क्योंकि शिक्षक ही इसे कार्यान्वित करता है तथा अनुदेशन योजना का कार्यान्वयन करता है। शिक्षण पाठ्यचर्या को कार्यान्वित करने का एक कार्य है। शिक्षक संपूर्ण विकास के कार्य का हिस्सा होना चाहिए। इसका अर्थ है कि:

- शिक्षक पाठ्यचर्या नियोजन तथा विकास की प्रत्येक अवस्था में सम्मिलित होना चाहिए।
- पाठ्यचर्या को विकसित करते समय तथा संसाधनों के प्रारूप को विकसित करते समय उनकी सहायता ली जानी चाहिए।
- सहायक शैक्षिक वातावरण को निर्मित करते समय वे सहायता प्रदान कर सकते हैं।
- वे आम लोगों से नई परियोजनाओं पर संवाद कर सकते हैं तथा पाठ्यचर्या बदलाव के बारे में उनमें स्वीकार्यता बढ़ा सकते हैं।

PDF Compressor Free Version

7.8 सारांश

अब हम आपको इस इकाई में सीखे गए तथ्यों को दोहराने में सहायता करेंगे। हमने पाठ्यचर्या के तरीकों की परिभाषा से अपनी चर्चा आरंभ की जोकि शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों के बारे में निर्णय करने की योजना होती है। हमने पाठ्यचर्या विकास के मुख्य उपागम, उनसे सम्बन्धित मुद्दों तथा पाठ्यचर्या नियोजन के प्रतिमान के बारे में चर्चा की।

हमने पाठ्यचर्या विकास के प्रमुख अंगों जैसे, लक्ष्य, उद्देश्य, सामग्री, विधियाँ तथा मूल्यांकन के बारे में चर्चा की। यह पाठ्यचर्या विकास के आवश्यक घटक हैं।

इस इकाई में पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझाया गया है।

7.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1) उन उभरते हुए क्षेत्रों की पहचान कीजिए जो विद्यालयी पाठ्यचर्या में सम्मिलित किए जा सकते हैं। उन्हें विद्यालयी पाठ्यचर्या में सम्मिलित किए जाने के लिए तर्क दीजिए।

2) सामान्यतः विद्यालय शिक्षकों को विद्यालयी पाठ्यचर्या विकसित करने में सम्मिलित नहीं किया जाता है। अगर ऐसा है तो उन्हें पाठ्यचर्या विकास के अर्थ एवं प्रक्रिया का अध्ययन क्यों करना चाहिए? अपने विचारों के समर्थन में उपयुक्त तर्क दें।

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्यचर्या नियोजन ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अधिगम के उद्देश्यों, शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों एवं उनके नियोजन, तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इन गतिविधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने सम्बन्धी अनेक स्तरों पर निर्णय लिए जाते हैं।

2. राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन से सम्बन्धित तीन मुख्य मुद्दे हैं:
   - स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर स्थानीय प्रशासन द्वारा कार्यक्रम प्रारंभ करने का विशेषाधिकार
   - पाठ्यचर्या योजना को विकसित करने के लिए स्थानीय शिक्षकों की तुलना में राज्य स्तरीय शिक्षकों का अधिक योग्य होना।
   - एक राज्य में शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता, राज्य स्तरीय मापदंडों के अनुसार सुनिश्चित किया जाना।

3. शिक्षक दल/समूह स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन में अंतःअध्ययन पाठ्यचर्या नियोजन निहित हैं क्योंकि विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों के शिक्षक अपने ज्ञान से योगदान देते हैं। विभिन्न विषयों के पहलुओं को आपस में जोड़ा जाता है ताकि नई पाठ्यचर्या योजना विकसित की जा सके।

4. टॉबा के प्रतिमान की निम्नलिखित कमियाँ हैं:
   - इसमें सहभागिता वाले लोकतांत्रिक प्रक्रिया का उपयोग होता है क्योंकि यह बहुत वैज्ञानिक एवं विशेषीकृत प्रक्रिया है, तथा
   - इसकी मान्यता है कि इन पाठ्यगामी गतिविधियों में शिक्षकों के पास दक्षता एवं समय की उपलब्धता होती है।

PDF Compressor Free Version

5. पाठ्यचर्या विकास की शिक्षार्थी–केन्द्रित विधि शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं पर ध्यान देती है। यह शिक्षार्थियों को समाज की भावी समस्याओं के बजाय वर्तमान समस्याओं के लिए तैयार करती है। शिक्षार्थी–केन्द्रित विधि पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षार्थियों को प्रदान किए गए अधिगम अनुभव, शिक्षकों को शिक्षार्थियों के वृद्धि एवं विकास से सम्बन्धित पहलुओं को समझने में सहायता करने के लिए नियोजित किए जाते हैं।

6. विषय–केन्द्रित विधि में, विषय/पाठ्यवस्तु, पाठ्यचर्या विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण मापदंड बन जाती है। चयनित पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखते हुए अधिगम अनुभव संगठित किए जाते हैं। इस विधि में पाठ्यचर्या योजनाविदों द्वारा विषयवस्तु की प्राप्ति का आकलन करने के लिए उपर्युक्त विधि विकसित की जाती है।

7. विषयवस्तु की उपलब्धता, महत्व, विषयवस्तु की सीखने की क्षमता।

8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या की विभिन्न विशेषताओं के बारे में प्रतिपुष्टि प्राप्त करना तथा पाठ्यचर्या में सुधार लाने के लिए इस प्रतिपुष्टि का उपयोग करना होता है।

9. हालाँकि पाठ्यचर्या विकास के लिए मूल्यांकन बहुत आवश्यक है, परंतु यह कार्यान्वित नहीं किया जाता है क्योंकि:

   क) मूल्यांकन परिणामों का प्रयोग में न लाया जाना।

   ख) नवीन/आधुनिक व्यवस्था को स्वीकार करने में अवरोध होना।

7.11 संदर्भ पुस्तकें

क्रोनबेक, जे. ली (1964): *इवोल्यूशन फॉर कोर्स इम्प्रूवमेंट इन न्यू करीकुला,* न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रॉ।

हारनिक, आर., *दि टीचर: डिसिजन मेकर एंड करीकुलम प्लानर,* सक्रानटोन, पीए, इंटरनेशनल टेक्सटबुक, 1968

हेस, *कैरीकुलम प्लानिंग: ए न्यू एप्रोच* (तृतीय संस्करण), 1980।

हेरिक, वी. (1950): "कंसेप्ट ऑफ *करीकुलम* डिजाइन" इन *टूवर्ड कैरीकुलम थ्योरी* संपादित वी. हेरिक एवं आर. अय्यर, शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

इग्नू (1992) – *करीकुलम डेवलेपमेंट फॉर डिस्टेंस एजुकेशन,* (ई.एस.–316), खंड 1 एवं 2, नई दिल्ली।

इग्नू (2006), *एजुकेशन: नेचर एंड पर्पज्स,* (एम.ई.एस. 012), खंड 4, नई दिल्ली।

जे. डिवी (1966): *दि चाइल्ड एंड दि करीकुलम – दि स्कूल एंड सोसाइटी,* फोनिक्स, यू.एस.ए.।

क्रूग, ई. (1957): *करीकुलम प्लानिंग,* न्यू यॉर्क: हार्पर एवं रॉ, (1950): *कैरीकुलम प्लानिंग,* संशोधित संस्करण, न्यू यॉर्क: हार्पर एवं रॉ।

ओर्नस्टेन, सी. एवं हंग्किन्स, पी. (1988): *करीकुलम, फाउण्डेशन्स, प्रिंसिपल्स एंड इश्यूज,* न्यू जर्सी, यू.के.।

टाबा, एच. (1962): *करीकुलम डेवलेपमेंट: थ्योरी एंड प्रैक्टिस,* न्यूयॉर्क: हरकोर्ट ब्रास जोवनविच।

टेलर, आर. (1950): *बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करीकुलम एंड इंस्ट्रक्शन,* शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

वारविक, डी. (1975): *करीकुलम स्ट्रक्चर एंड डिजाइन,* यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन प्रेस।

PDF Compressor Free Version

इकाई 8 पाठ्यचर्या नवीकरण

संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 नवीकरण के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन

8.3.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

8.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के स्रोत

8.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विधियाँ

8.5.1 पाठ्यचर्या विकास के दौरान मूल्यांकन

8.5.2 पाठ्यचर्या निष्पादन के दौरान मूल्यांकन

8.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रतिमान

8.7 पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण

8.8 सारांश

8.9 इकाई के अंत में अभ्यास

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.11 संदर्भ पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हम पाठ्यचर्या नियोजन तथा विकास की प्रक्रिया के बारे में चर्चा कर चुके हैं। आप उन बाधाओं के बारे में भी पढ़ चुके हैं जो पाठ्यचर्या विकास सम्बन्धी निर्णयों को प्रभावित करते हैं। अतः अब तक आप पाठ्यचर्या नियोजन तथा विकास की प्रक्रिया के बारे में समझ चुके हैं।

पिछली इकाई में आपने मूल्यांकन के बारे में भी जानकारी प्राप्त की है। मूल्यांकन, पाठ्यचर्या नियोजन एवं विकास की प्रक्रिया का आवश्यक घटक है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पाठ्यचर्या विकास एवं निष्पादन सम्बन्धी निर्णय लेने के लिए उपयोगी सूचनाएँ एकत्रित और प्रदान की जाती हैं। दूसरे शब्दों में, एक प्रभावशाली एवं आवश्यकता–आधारित पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए आपको अपने निर्णय वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर लेने होंगे।

इस इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन एवं उसके महत्व के बारे में चर्चा की गई है जोकि पाठ्यचर्या विकास एवं निष्पादन की प्रक्रिया में निहित है। आप पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण की विधियों के बारे में भी इस इकाई में अध्ययन करेंगे। इस इकाई में की गई चर्चा, आपको इस तरह की सार्थक एवं नियमित गतिविधि में भाग लेने में सक्षम बनाएगी। ऐसा करने से आप पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

PDF Compressor Free Version

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता पर चर्चा कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न स्रोतों की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एक पाठ्यचर्या या उसके किसी हिस्से का मूल्यांकन कर सकेंगे; और
- पाठ्यचर्या विकास की अवस्था के आधार पर विभिन्न विधियों का प्रयोग करते हुए पाठ्यचर्या का मूल्यांकन कर सकेंगे।

8.3 नवीकरण के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन

मूल्यांकन इसलिए किया जाता है ताकि किसी विद्यमान या निर्माण की अवस्था में पाठ्यचर्या की अच्छाइयों या कमियों के बारे में जाना जा सके जिससे पाठ्यचर्या का नवीकरण हो सके। पाठ्यचर्या नवीकरण, एक नियमित समीक्षा तथा पुनर्विचार की प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है जोकि कुछ विशेष बिन्दुओं पर केन्द्रित होता है। पाठ्यचर्या नवीकरण, पाठ्यचर्या योजना को समीक्षा करने की प्रक्रिया है। अगर यह निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रभावी सिद्ध नहीं होती है तो इसमें सुधार की आवश्यकता है:

- क्या वर्तमान संदर्भ में पाठ्यचर्या उपयुक्त है?
- क्या नियोजित पाठ्यचर्या निष्पादित भी हुई है?
- पाठ्यचर्या किस प्रकार से सही है?
- पाठ्यचर्या, पाठकों या लक्ष्य समूह के लिए किस प्रकार से लाभकारी है?
- क्या इसमें नवीन विधियाँ सम्मिलित हैं?

उपर्युक्त पाँच प्रश्नों के आधार पर यह स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा ही पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण हो सकता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन एवं विकास में, मूल्यांकन एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन से अभिप्राय शिक्षार्थियों के आंकलन से है कि पाठ्यचर्या का निष्पादन किस स्तर तक हुआ है तथा जब पाठ्यचर्या को निष्पादित किया गया, शिक्षार्थियों ने कक्षा में विभिन्न गतिविधियों द्वारा क्या अनुभव प्राप्त किए हैं शिक्षार्थियों के ऐसे अनुभव विद्यालय की चारदीवारी अथवा कठोर समयावली तक सीमित नहीं होने चाहिए। इसमें वे गतिविधियाँ भी सम्मिलित हो सकती हैं जो कि छिपी हुई पाठ्यचर्या का हिस्सा हो सकती हैं। अतः हम यह जानने के इच्छुक हैं कि मूल्यांकन केवल कक्षा के अंदर की गतिविधियों का मूल्यांकन नहीं है बल्कि पाठ्यचर्या के मुख्य बिन्दुओं के आधार पर विद्यालय का मूल्यांकन है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम पाठ्यचर्या से सम्बन्धित पहलुओं जैसे पाठ्यचर्या सुधार, सम्मिलित शिक्षक, शिक्षार्थियों इत्यादि के बारे में तथा प्रशासनिक प्रभावशीलता के बारे में निर्णय लेते हैं।

इसके आधार पर हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि क्या विकसित एवं निष्पादित की गई पाठ्यचर्या से वांछित परिणाम प्राप्त हुए हैं या नहीं। यह हमें किसी पाठ्यचर्या के निष्पादन से पूर्व उसकी कमियों तथा अच्छाइयों के बारे में जानने तथा पाठ्यचर्या निष्पादन के उपरांत उसकी प्रभावशीलता के बारे में जानने में सहायक होता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया आकृति 8.1 में दर्शाई गई है।

PDF Compressor Free Version

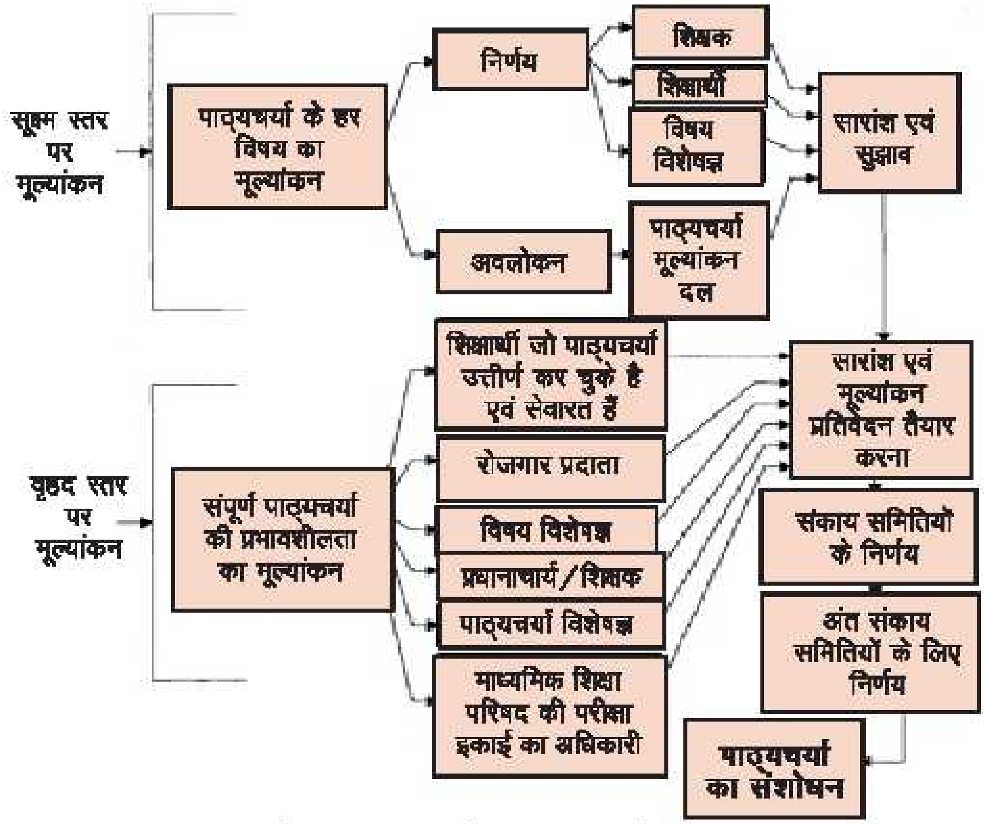

आकृति 8.1: पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया

पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया एक ही समय पर होने वाला कार्य नहीं है। यह निरंतर चलने वाली एवं चक्रीय प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन, पाठ्यचर्या चक्र की प्रत्येक अवस्था में अपनी भूमिका अदा करता है। पाठ्यचर्या चक्र, आकृति 8.2 में दर्शाया गया है:

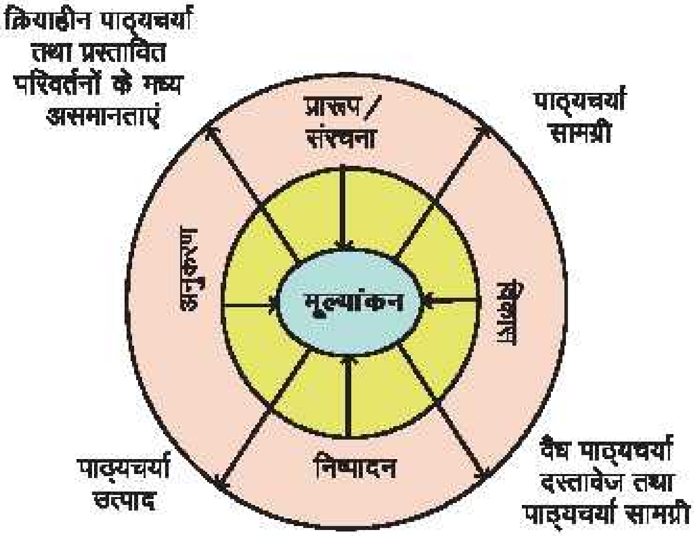

आकृति 8.2: पाठ्यचर्या चक्र की संकल्पनात्मक संरचना

पाठ्यचर्या चक्र यह दर्शाता है कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक व्यापक गतिविधि है। यह निरंतर तथा नियमित होनी चाहिए। यह पाठ्यचर्या प्रारूप एवं निष्पादन की हर अवस्था पर आवश्यक है। पाठ्यचर्या के नियमित मूल्यांकन द्वारा हमें यह पता लगता है कि क्या हम पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर जा रहे हैं।

8.3.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

अब प्रश्न यह उठता है कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों आवश्यक है? इस प्रश्न का व्यावसायिक उत्तर शिक्षार्थी अधिगम पर बल देता है तथा शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल देता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं:

PDF Compressor Free Version

i) नई पाठ्यचर्या का विकास करना

अगर आप माध्यमिक स्तर पर किसी व्यावसायिक पाठ्यचर्या के लिए नया पाठ्यचर्या विकसित करना चाहते हैं, यह तर्कसंगत होता है कि हम अन्य व्यवस्था के पाठ्यचर्या का मूल्यांकन कर लें और उसके पश्चात् उसे अपनी आवश्यकतानुसार अपनाएँ। हमारी कार्यविधि यह होनी चाहिए कि हम विद्यमान पाठ्यचर्या को अपनी नई आवश्यकताओं के अनुसार ढाल लें क्योंकि किसी समय नियोजन के दौरान हमारे निर्णय उचित नहीं भी हो सकते हैं। ऐसी प्रक्रिया से पाठ्यचर्या में अधिक भारीपन आने का खतरा रहता है। नए पाठ्यचर्या के विकास सम्बन्धी वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने के लिए, वर्तमान पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक है।

ii) निष्पादित किए जाने वाले पाठ्यचर्या की समीक्षा

नीति निर्माताओं तथा निर्णय लेने वालों के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें किसी पाठ्यचर्या के निष्पादन के बारे में त्वरित प्रतिपुष्टि मिले ताकि वे पाठ्यचर्या से सम्बन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जरूरी बदलाव ला सकें। इसके लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है।

iii) अनावश्यक पहलुओं को हटाना तथा वर्तमान पाठ्यचर्या को संशोधित करना

यह आवश्यक है कि पाठ्यचर्या से अनावश्यक विषयवस्तु, विचारों को हटाया जाए तथा नए पहलुओं तथा विकसित विचारों को पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया जाए। इस सब कार्य को करने के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन किया जाना बहुत आवश्यक है।

iv) पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का पता लगाना

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में किसी पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना बहुत आवश्यक है। यह मूल्यांकन, शिक्षार्थियों की उपलब्धि के मूल्यांकन से भिन्न होता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन बहुत व्यापक है तथा इसमें शिक्षार्थी मूल्यांकन भी सम्मिलित है जिसमें शिक्षार्थियों की पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं की उपयुक्तता के बारे में उनकी भावनाएँ भी सम्मिलित होती हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. विद्यालय स्तर पर किसी कक्षा के पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाना क्यों आवश्यक हैं?

....

....

....

2. आप पाठ्यचर्या नवीकरण से क्या समझते हैं?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

8.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के स्रोत

विद्यालय पाठ्यचर्या के बारे में सार्थक जानकारी एकत्रित करने के लिए बहुत सारे स्रोत हैं। मुख्य स्रोतों पर यहाँ चर्चा की जा रही है:

i) **शिक्षार्थी:** किसी पाठ्यचर्या के शिक्षार्थी, किसी पाठ्यचर्या की उपयोगिता तथा उसके कार्यान्वयन के बारे में बताने वाले प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। पाठ्यचर्या के इच्छित परिणामों की सूची शिक्षार्थियों को दी जा सकती है तथा उनसे दो तरीकों से जानकारी एकत्रित की जा सकती हैं:

- यह पता लगाकर कि क्या शिक्षार्थियों ने इच्छित परिणामों को प्राप्त कर लिया है?
- शिक्षार्थियों के इस सम्बन्ध में भावनाओं का पता लगाकर कि उन्होंने किस हद तक पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है। यह जानकारी मुख्यतः गुणात्मक होती है तथा पाठ्यचर्या के संशोधन में बहुत महत्त्व रखती है। यह जानकारी पाठ्यचर्या उत्तीर्ण कर चुके शिक्षार्थियों से भी प्राप्त की जा सकती है जो पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के दौरान पहले सीख चुके हैं।

ii) **शिक्षक तथा अन्य विषय विशेषज्ञ**

पाठ्यचर्या नवीकरण की प्रक्रिया में, शिक्षकों को अवश्य सम्मिलित करना चाहिए क्योंकि वे पाठ्यचर्या को कक्षा में निष्पादित करते हैं। वे विषयवस्तु को पहचानने, चयन करने तथा व्यवस्थित करने की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। यह प्रक्रिया पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तथा अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ के अनुसार की जाती है।

iii) **पाठ्यचर्या विशेषज्ञ**

पाठ्यचर्या विशेषज्ञ उन आधुनिक तकनीकों के बारे में बता सकते हैं जो पाठ्यचर्या विकसित करने में प्रयुक्त हुई हैं ताकि उन्हें शिक्षार्थियों के नज़रिए से अधिक सार्थक बनाया जा सके। विषयवस्तु को एकत्रित करके पाठ्यवस्तु के रूप में लिखने की प्राचीन विधि अब अनुपयुक्त हो चुकी है। अब पाठ्यचर्या में, उद्देश्यों या वांछित परिणामों, उन परिस्थितियों जिनमें शिक्षार्थियों का मूल्यांकन किया जाना है तथा उनकी उपलब्धि का स्तर क्या होगा, इन सबके बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। अतः पाठ्यचर्या विशेषज्ञों का पाठ्यचर्या मूल्यांकन में बहुत अधिक योगदान है। वे पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए सही स्रोत हैं।

iv) **नीति निर्माणकर्ता**

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए वे नीति निर्माणकर्ता जो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सी.बी.एस.ई.), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) तथा राज्य माध्यमिक शिक्षा परिषदों में कार्यरत हैं, उनके लिए महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। अपने पद के कारण वे सरकार की नीतियों एव उनमें हो रहे परिवर्तनों के बारे में ज्यादा जानकारी रखते हैं जिनका विद्यालय पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध होता है। पूर्व में कई बार ऐसा देखा गया है कि जब कभी राज्य में सरकार बदली है, तब इतिहास या विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन हुए हैं। इसलिए नीति निर्माता पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं।

v) **समुदाय**

स्थानीय समुदाय, जहाँ किसी पाठ्यचर्या के उत्तीर्ण शिक्षार्थियों या उत्पाद की खपत होती है, भी पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। स्थानीय समुदाय की आवश्यकताएँ पाठ्यचर्या को उपयोगी तथा आवश्यकता–आधारित

PDF Compressor Free Version

बना सकती हैं। ऐसी पाठ्यचर्या जो समुदाय की आवश्यकताओं के आधार पर बना होगी, उससे उत्तीर्ण हुए शिक्षार्थी समुदाय को बेहतर सामाजिक ढंग एवं जिम्मेदार नागरिकों के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकेंगे।

vi) विद्यालय छोड़ने वाले बच्चे

ऐसे बच्चे जिन्होंने अपनी शिक्षा पूरी किए बिना ही विद्यालय छोड़ दिया हो, वे भी पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं। ऐसे शिक्षार्थी उन बिन्दुओं या पहलुओं को उजागर कर सकते हैं जिनके कारण उन्होंने विद्यालय छोड़ा। एक उपचारात्मक परीक्षण द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि ऐसे शिक्षार्थियों में वर्तमान पाठ्यचर्या के बारे में किस प्रकार की भ्रांतियाँ हैं। ऐसी प्रतिपुष्टि से पाठ्यचर्या में सुधार या संशोधन किया जा सकता है।

vii) रोजगार प्रदाता

रोजगार प्रदाताओं के विचार भी पाठ्यचर्या की अच्छाइयों एवं कमियों का पता लगाने में लाभप्रद हो सकते हैं। वे लोग जो स्वरोजगार में हैं, वे भी पाठ्यचर्या की कमियों या खूबियों के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकते हैं। ऐसी जानकारी, पाठ्यचर्या को सामाजिक रूप से उपयोगी बना सकती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. विद्यालय छोड़ने वाले शिक्षार्थियों के पाठ्यचर्या के बारे में विचार क्यों लेने चाहिए?

....

....

....

4. रोजगार प्रदाताओं के पाठ्यचर्या के बारे में विचार क्यों लेने चाहिए?

....

....

....

8.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विधियाँ

पाठ्यचर्या मूल्यांकन, किसी बाहरी अभिकरण या आंतरिक विभाग जो कि पाठ्यचर्या नियोजन एवं विकास से जुड़ा हो या दोनों द्वारा संयुक्त रूप से करवाया जा सकता है। संयुक्त रूप से किया गया मूल्यांकन अधिक व्यापक एवं वस्तुनिष्ठ होता है। मूल्यांकन की विधि या तो प्रश्नावली पर आधारित या साक्षात्कार पर आधारित हो सकती है। मूल्यांकन के लिए सूचनाए एकत्रित करने का तरीका उद्देश्यों पर निर्भर करता है। जब हमें पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के बारे में गुणात्मक जानकारी चाहिए तो या असंरचित अवलोकन का उपयोग किया जा सकता है। जब हमें किसी पाठ्यचर्या के विभिन्न अंगों के बारे में मात्रात्मक जानकारी चाहिए, एक अनुसूची का प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार से मूल्यांकन के उद्देश्यों तथा अवस्था जैसे कि विकास की अवस्था या कार्यान्वयन की अवस्था, के आधार पर अन्य कई तकनीकें प्रयोग की जा सकती हैं। नियोजन अवस्था में पाठ्यचर्या मूल्यांकन केवल कार्य विश्लेषण तक सीमित रह जाता है। इसी प्रकार,

PDF Compressor Free Version

विषयवस्तु विश्लेषण के लिए रचनात्मक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। यह कार्य सामान्यतः विद्यालय में नहीं किए जाते हैं जिससे पाठ्यचर्या में कई कमियाँ देखने को मिलती हैं। एक अच्छे से निर्मित विद्यालय पाठ्यचर्या में नियोजन स्तर पर भी मूल्यांकन चक्र को स्थान दिया जाना चाहिए।

8.5.1 पाठ्यचर्या विकास के दौरान मूल्यांकन

पाठ्यचर्या विकास के दौरान मुख्य कार्यों में से एक है, उन विशिष्ट उद्देश्यों की सूची बनाना जो पाठ्यचर्या के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। इस सूची को मूल्यांकन से गुजरना होता है। इस सूची को कार्यरत शिक्षकों को दिया जाता है ताकि इस बारे में उनकी प्रतिक्रियाएँ या विचार लिए जा सकें। इसके साथ ही रोजगार प्रदाताओं, उच्च स्तर पर कार्यरत शिक्षकों, नियोजकों और प्रशासकों इत्यादि से भी जानकारी एकत्रित की जा सकती है ताकि शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान एवं व्यवहार को वांछित लक्ष्यों से जोड़ा जा सके। इस प्रतिपुष्टि के आधार पर, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में वांछित बदलाव लाए जा सकते हैं।

पाठ्यचर्या विकास के दौरान मूल्यांकन में दूसरा प्रमुख कार्य अनुदेशन सामग्री से जुड़ा है जोकि उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार की गई है। इस सामग्री को कुछ शिक्षार्थियों पर प्रयोग किया जाता है ताकि उनके अधिगम या कठिनाइयों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। इससे हमें मूल्यांकन के बारे में उपयुक्त सूचना प्राप्त होती है जिसे सामग्री में सुधार लाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। आंतरिक मूल्यांकन से एकत्रित जानकारी के आधार पर भी अधिगम सामग्री में सुधार लाए जा सकते हैं। यहाँ पाठ्यचर्या सामग्री में सभी श्रव्य–दृश्य कार्यक्रम, शिक्षक संदर्शिका, प्रश्न, परियोजना कार्य इत्यादि सम्मिलित हैं। इसी तरह से पाठ्यचर्या विकास के दौरान अपनाए जाने वाले मूल्यांकन के तरीकों का भी एक बार सूक्ष्म स्तर पर परीक्षण कर लेना चाहिए और कोई सुधार की आवश्यकता हो तो वह सुधार किया जाना चाहिए।

8.5.2 पाठ्यचर्या निष्पादन के दौरान मूल्यांकन

पाठ्यचर्या के परीक्षण तथा पाठ्यचर्या सामग्री में परिवर्तन करने के उपरांत यह आवश्यक है कि शिक्षकों और प्रशासकों को पाठ्यचर्या के सही कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षित किया जाए। पाठ्यचर्या को बिना सहयोगी या आरंभिक पाठ्यक्रम के कार्यान्वित किए जाने से खतरा हो सकता है। इससे नई सामग्री का अनचाहे ढंग से प्रयोग हो सकता है। किसी पाठ्यचर्या का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन करने के लिए इसमें सम्मिलित लोगों का प्रशिक्षण, एवं सभी आवश्यक सुविधाओं तथा संसाधनों का प्रावधान किया जाना आवश्यक है।

मूल्यांकन उस समय आवश्यक है जब पाठ्यचर्या को कार्यान्वित किया जाता है तथा जब कोई पाठ्यचर्या समाप्त हो जाती हैं। इस अवस्था में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दो उद्देश्य हैं: (क) विद्यालय में पाठ्यचर्या के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सहायक क्षेत्रों को खोजना, तथा (ख) उत्पाद की गुणवत्ता को नियंत्रित करना। इस अवस्था में आवश्यक एकत्रित सूचना में निम्नलिखित सम्मिलित होता है:

विद्यमान परिस्थिति: पाठ्यचर्या योजना के अनुसार पाठ्यचर्या के सभी पहलूओं का अध्ययन करना चाहिए ताकि पाठ्यचर्या की अज्ञात विशेषताओं को पहचाना जा सके। ऐसी अनुसूची का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं के कार्यान्वयन में कमियों का आकलन हो सके। ऐसी अनुसूची में उद्देश्यों की विशेषताएँ, पाठ्यचर्या की विषयवस्तु, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया आरंभ करने के लिए शिक्षार्थियों की विशेषताएँ, पाठ्यचर्या के निष्पादन के लिए आवश्यक शिक्षक की विशेषताएँ, शिक्षार्थियों

PDF Compressor Free Version

की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के सुचारू संचालन हेतु आधारभूत मान्यताएँ, आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यचर्या का संगठन, पाठ्यचर्या निष्पादन तथा शिक्षार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने हेतु निम्नलिखित विधियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए:

i) **पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता:** पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण प्रश्न इस बात का निर्धारण करना है कि शिक्षार्थियों ने पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को किस स्तर तक प्राप्त किया है? अतः पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता यह दर्शाती है कि सामाजिक तंत्र द्वारा निर्धारित उद्देश्य पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त हुए हैं।

   क्योंकि यह संभव नहीं है कि विषयवस्तु के सभी उद्देश्यों को शत–प्रतिशत शिक्षार्थियों द्वारा प्राप्त किए जाएँ, अतः महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कम से कम आवश्यक शिक्षार्थियों द्वारा कम से कम आवश्यक उद्देश्य प्राप्त किए गए हों। किसी कार्यक्रम की प्रभावशीलता के आंकलन के लिए रोजगार प्रदाताओं, भूतपूर्व शिक्षार्थियों से भी प्रतिपुष्टि प्राप्त करनी चाहिए। पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का पता, नई पाठ्यचर्या तथा पुरानी पाठ्यचर्या की तुलना से भी किया जा सकता है जिसके लिए समयबद्ध अध्ययन आवश्यक है।

ii) **कार्यक्रम की स्वीकार्यता:** पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता के आकलन के साथ, यह भी आवश्यक है कि इसकी स्वीकार्यता का आकलन किया जाए। इसका अर्थ है कि जो लोग कार्यक्रम के कार्यान्वयन में लगे हैं, वे इसे पसंद करते हैं या नहीं। कार्यक्रम की स्वीकार्यता का पता लगाने के लिए शिक्षार्थियों, शिक्षकों, निरीक्षकों/प्रशासकों के विचारों को जान लेना चाहिए।

iii) **कार्यक्रम की कार्य कुशलता/दक्षता:** प्रभावशीलता तथा दक्षता का प्रयोग विशेष उद्देश्य से किया जाता है। पाठ्यचर्या की दक्षता से अभिप्राय है कि क्या पाठ्यचर्या से कम से कम लागत, समय एवं ऊर्जा का उपयोग किए उद्देश्य प्राप्त किए जा सकते हैं। प्रभावी पाठ्यचर्या से तात्पर्य है कि क्या पूर्व निर्धारित उद्देश्य प्राप्त हुए हैं या नहीं चाहे समय, ऊर्जा या खर्च कितना भी हो। प्रभावी तथा दक्ष पाठ्यचर्या यह सुनिश्चित करता है कि कम से कम संसाधनों एवं लागत में उद्देश्य प्राप्त हो जाएँ। परंतु किसी कार्यक्रम की दक्षता का आकलन करना बहुत कठिन है। नियंत्रित प्रयोग इस संदर्भ में मददगार हो सकते हैं परंतु चरों/कारकों का नियंत्रण भी कठिन है। हालाँकि किसी कार्यक्रम की दक्षता का आकलन अन्य किसी कार्यक्रम से उनसे प्राप्त परिणामों या प्रभावों के आधार पर किया जाना चाहिए। किसी कार्यक्रम की दक्षता का आकलन करने में मुख्यतः निम्नलिखित प्रश्न सामने आते हैं:

   - क्या कार्यक्रम के परिणाम कुल संसाधनों पर किए गए खर्च के अनुसार उपयुक्त हैं?
   - क्या नयी पाठ्यचर्या, पुरानी पाठ्यचर्या से ज्यादा दक्ष अथवा गुणकारी है?
   - क्या शिक्षार्थियों तथा शिक्षकों के समय तथा सामग्री एवं संसाधनों की बर्बादी तो नहीं हो रही है?
   - क्या उपकरण तथा व्यक्तियों का संपूर्ण उपयोग हो रहा है?
   - किसी कार्यक्रम की कार्यक्रम दक्षता/निपुणता को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

PDF Compressor Free Version

8.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रतिमान

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए अनेक प्रतिमान हैं जैसे,

क) टॉयलर का प्रतिमान

ख) सिप (सी.आई.पी.पी.) प्रतिमान

ग) स्टेक का प्रतिमान

घ) क्रिकपैट्रिक का प्रतिमान

ङ) स्क्रिवन का प्रतिमान

आइए, इनमें से जो महत्वपूर्ण प्रतिमानों पर यहां विचार करते हैं :

क) टॉयलर का प्रतिमान

यह सन् 1949 में टॉयलर द्वारा विकसित प्रतिमान बहुत प्रसिद्ध नियोजन के प्रतिमानों में से एक है। मे (1986) के अनुसार, टॉयलर के प्रतिमान में पाठ्यचर्या के तीन प्राथमिक स्रोत हैं: शिक्षार्थी, समाज तथा विषयवस्तु, जो कि कार्यक्रम के सामान्य उद्देश्यों का निर्माण करने के लिए आवश्यक हैं तथा जो शिक्षा के दर्शन तथा अधिगम के मनोविज्ञान को प्रदर्शित करते हैं।

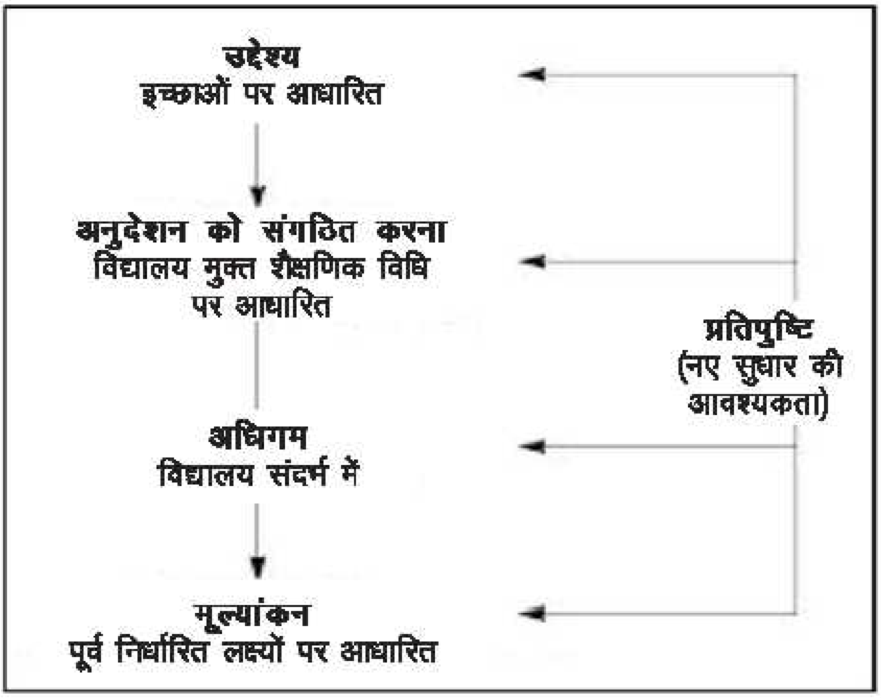

आकृति 8.3: शैक्षिक सुधार तर्क का वृत्तक

टॉयलर का 1949 का पाठ्यचर्या प्रतिमान, चार अंगों वाला रेखीय प्रतिमान है जिसमें उद्देश्य, अनुदेशन विधियाँ तथा विषयवस्तु, अधिगम अनुभवों का संगठन, एवं मूल्यांकन सम्मिलित है, जो कि निम्नलिखित चार प्रश्नों पर आधारित है:

1) एक संस्था को क्या शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने चाहिए? (उद्देश्य)

2) इन उद्देश्यों से क्या शैक्षिक अनुभव प्राप्त होंगे? (अनुदेशन विधियाँ एवं विषयवस्तु)

PDF Compressor Free Version

3) इन शैक्षिक अनुभवों को कैसे प्रभावी ढंग से संगठित किया जा सकता है? (शैक्षिक अनुभवों को संगठित करना)

4) हम कैसे निर्धारित करेंगे कि उद्देश्य प्राप्त हुए हैं या नहीं ? (आंकलन एवं मूल्यांकन)

ख) सिप सी.आई.पी.पी. प्रतिमान

यह प्रतिमान 1960 के दशक में डेनियल सॅफलबीम तथा उसके साथियों ने विकसित किया था। सिप (सी.आई.पी.पी.) का पूरा नाम, संदर्भ (Context), इनपुट (Input), प्रक्रिया (Process) तथा उत्पाद (Product)। सिप (सी.आई.पी.पी.) एक ऐसा मूल्यांकन का प्रतिमान है जिसमें किसी कार्यक्रम की महत्ता का आंकलन करने के लिए संदर्भ, इनपुट, प्रक्रिया तथा उत्पाद का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रतिमान के अनुसार मूल्यांकन की प्रक्रिया में निर्णय लेने के लिए सम्बन्धित विकल्पों का चयन करने के लिए उपयोगी जानकारी की पहचान, एकत्रीकरण तथा आबंटन किया जाता है।

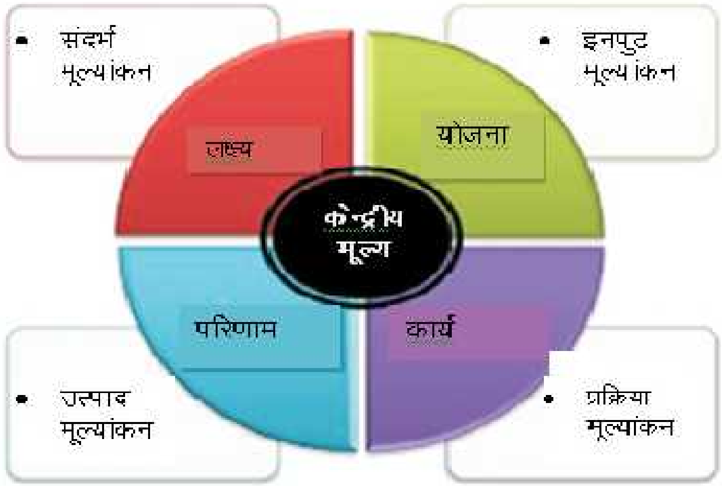

आकृति 6.4: सिप (सी.आई.पी.पी.) का मूल्यांकन प्रतिमान

सिप (सी.आई.पी.पी.) मूल्यांकन के यह चार अंग एक निर्णायक को निम्नलिखित चार प्रश्नों का उत्तर देने में सहायता करते हैं:

- **हमें क्या करना चाहिए?**

इसमें लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं के निर्धारण के लिए आवश्यकता–सम्बन्धी सूचनाओं का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। उदाहरण के लिए, साक्षरता कार्यक्रम के संदर्भ मूल्यांकन में उस कार्यक्रम के वर्तमान उद्देश्यों, साक्षरता उपलब्धि परीक्षण अंकों, स्टॉफ की आवश्यकताओं और समस्याओं, साक्षरता नीतियों एवं योजनाओं, समुदाय की समस्याओं, विचारों, सोच तथा आवश्यकताओं इत्यादि का विश्लेषण सम्मिलित हो सकता है।

- **हमें यह कैसे करना चाहिए?**

इसमें वे कार्य और संसाधन सम्मिलित हैं जो नए लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं तथा इसमें बाह्य सफल कार्यक्रम सामग्री तथा सूचना का एकत्रीकरण सम्मिलित हो सकता है।

- **क्या हम इसे योजनानुसार कर रहे हैं?**

यह निर्णय लेने वालों को कार्यक्रम के कार्यान्वयन सम्बन्धी सूचना प्रदान करता है। निरंतर रूप से कार्यक्रम का अवलोन करने से निर्णय लेने वालों को यह जानकारी प्राप्त

PDF Compressor Free Version

होती रहती है कि कार्यक्रम कार्यान्वयन में कैसे योजनाओं एवं दिशा–निर्देशों का पालन हो रहा है तथा इसमें कर्मियों की समस्याओं, मनोबल, सहयोग, सामग्री की अच्छाइयों एवं कमियों तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन एवं धन सम्बन्धी समस्याओं के अनुपालन सम्बन्धी सूचना प्राप्त होती रहती है।

- **क्या कार्यक्रम सही कार्यान्वित एवं सफल हुआ?**

कार्यक्रम के परिणामों का मापन करके तथा उनको पूर्व निर्धारित परिणामों की तुलना करके, निर्णय लेने वाले इस निर्णय को करने में सक्षम हो जाते हैं कि क्या कार्यक्रम को आगे चलाया जाना चाहिए, या उसमें सुधार करने चाहिए या इस कार्यक्रम को पूरी तरह से बंद कर देना चाहिए। यह परिणाम मूल्यांकन का महत्वपूर्ण तत्व है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. पाठ्यचर्या कार्यान्वयन के दौरान मूल्यांकन क्या होता है?

....

....

....

6. टॉयलर के प्रतिमान के चार अंग कौन से हैं?

....

....

....

8.7 पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण

किसी पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन से पहले उसका पुनर्निर्माण या पुनःसंरचना की जानी आवश्यक है। यह सूक्ष्म स्तर या वृहद स्तर पर किया जा सकता है। वृहद स्तर पर, पुराने एवं अनुपयोगी तत्वों को हटाया जा सकता है तथा सम्बन्धित क्षेत्र में हुए नए परिवर्तनों या विकास को जोड़ा जा सकता है तथा विषयवस्तु को पुनः क्रमबद्ध किया जा सकता है। सूक्ष्म स्तर पर, एक शिक्षक प्रस्तुतीकरण के अनुसार विषयवस्तु के सही क्रम का पता लगा सकता है। परंतु यदि उसने सहभागिता वाली शिक्षण विधियों का उपयोग करना है, तो वह विषयवस्तु के क्रम को अपने अनुसार बदल सकता है। इस प्रकार की सूक्ष्म स्तर पर विषयवस्तु का पुनर्संगठन सामान्यतः उन शिक्षकों द्वारा किया जाता है जो अपने शिक्षण में नवाचारी होते हैं। सूक्ष्म स्तर पर पाठ्यचर्या के पुनःसंगठन के उतने तरीके हो सकते हैं, जितने शिक्षक हैं।

पुनःनिर्मित पाठ्यचर्या का पूर्व–परीक्षणः वृहद स्तर पर जब किसी विद्यमान पाठ्यचर्या को पुनःनिर्मित या पुनःसंरचित किया जाता हे तो इसके कार्यान्वयन से पूर्व–परीक्षण आवश्यक है। इस परीक्षण से पता चलता है कि क्या परिवर्तनों का वांछित प्रभाव हुआ है या नहीं और क्या इसमें अभी भी सुधार की आवश्यकता है। इस तरह की पुनःसंरचना को शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों के अनुसार किया जाना अधिक उपयुक्त एवं बेहतर होता है।

PDF Compressor Free Version

पाठ्यचर्या संशोधन के अन्य प्रतिमान/प्रारूप की खोज करना: इस इकाई में वर्णित पाठ्यचर्या संशोधन की विधियाँ बहुत पूर्व समय से चलन में है तथा अन्य क्षेत्रों में इस सम्बन्ध में बहुत सारे सक्रिय सहित प्रतिमान विकसित किए जा रहे हैं। इन प्रतिमान के कुछ उपयोगी पहलु/बिन्दु, जो कि तकनीकी, व्यावसायिक या चिकित्सा शिक्षा इत्यादि के क्षेत्र में विकसित हुए हैं, उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकते हैं जो विद्यालय स्तर के पाठ्यचर्या संशोधन से जुड़े हैं। विद्यालय स्तर पर शिक्षा योजनाविदों तथा पाठ्यचर्या का कार्यान्वयन करने वालों को इस प्रकार के प्रतिमान की निरंतर खोज करते रहना चाहिए। संभवतः, माध्यमिक शिक्षा के लिए, इस क्षेत्र में पाठ्यचर्या विकास में लगे पेशेवरों द्वारा एक उपयुक्त तथा सक्रिय प्रतिमान विकसित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

7. सूक्ष्म एवं वृहद स्तर पर नियोजन क्या है?

....

....

....

....

....

8.8 सारांश

इस इकाई में आपने पाठ्यचर्या संशोधन के लिए जिम्मेदार पाँच कारणों के बारे में समझा। यह पाँच कारण हैं; (i) पाठ्यचर्या का आधुनिकीकरण करना; (ii) पाठ्यचर्या से अनावश्यक विषयवस्तु को हटाना; (iii) पाठ्यचर्या को अधिक दक्ष बनाना; (iv) वांछित एवं प्राप्ति के मध्य अंतर या दूरी को कम करना; तथा (v) छिपे हुए पाठ्यचर्या को उजागर करना। आपने पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चार उद्देश्यों के बारे में भी जाना जोकि, (i) विद्यमान पाठ्यचर्या की मूल्यांकन रिपोर्ट के आधार पर नए पाठ्यचर्या कार्यक्रम का विकास करना; (ii) वर्तमान कार्यक्रम की समीक्षा करना; (iii) पाठ्यचर्या से अनावश्यक पहलुओं को हटाना तथा सम्बन्धित क्षेत्र के नए विचारों को शामिल करना; तथा (iv) यह पता करना कि विद्यमान कार्यक्रम कितना प्रभावी है।

आपने उन विभिन्न स्रोतों के बारे में जाना जिनसे पाठ्यचर्या संशोधन के लिए उपयोगी सामग्री एकत्रित की जा सकती है। इन स्रोतों में शिक्षार्थी, शिक्षक, विषय विशेषज्ञ, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ, नीति निर्माता, समुदाय के लोग इत्यादि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त आपने पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं को भी जाना। आपने पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान अपनाई जाने वाली विधियों के बारे में भी समझा। ये विधियाँ हालाँकि इतनी व्यापक नहीं थी अगर इनकी तुलना अन्य क्षेत्रों में हो रहे विकास की गति के अनुसार पाठ्यचर्या संशोधन को ध्यान में रखा जाए। अतः यह आवश्यक है कि विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए व्यापक विधियों का विकास एवं अनुसरण करने का सुझाव दिया जाता है।

PDF Compressor Free Version

इस इकाई के अंत में हमने सूक्ष्म एवं वृहद स्तर पर पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण के बारे में सीखा। वृहद स्तर पर पुनर्निर्माण इसलिए आवश्यक है ताकि इसे शिक्षक द्वारा कक्षा में पाठ्यचर्या निष्पादन के बारे में अपनाई गई विधियों के अनुरूप बनाया जा सके। सूक्ष्म स्तर पर पुनर्निर्माण, एक शिक्षक से दूसरे शिक्षक तक भिन्न हो सकता है जो उसके निष्पादन के लिए अलग–अलग विधियाँ अपनाते हैं।

8.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1) आपके द्वारा माध्यमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले विषय के बारे में उस उपयोगी जानकारी को एकत्रित करें जो आपको पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं। अपने परिणामों को विश्लेषण कीजिए तथा यह पता लगाएँ कि क्या उस विषय के पाठ्यचर्या में संशोधन आवश्यक है। अगर हाँ, तो उपयुक्त सुझाव दें। यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

2) एक शिक्षक के रूप में अपने अनुभवों के आधार पर उस इकाई की पहचान कीजिए जो आपके शिक्षार्थियों को सीखने के लिए बहुत कठिन है। इसके निदान के लिए अनुदेशनात्मक सामग्री तैयार कीजिए। इस सामग्री को कुछ शिक्षार्थियों पर प्रयोग कीजिए तथा आपके द्वारा तैयार की गई इस सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन करें।

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) विद्यालय पाठ्यचर्या के मूल्यांकन निम्नलिखित कारणों से किया जाना आवश्यक है:

   - ज्ञान के क्षेत्र में नवीन जानकारी/विकास को निहित करने के लिए।
   - पाठ्यचर्या से अनावश्यक पहलुओं तथा विषयवस्तु को हटाने के लिए।
   - अगली कक्षा की आवश्यकताओं तथा वर्तमान कक्षा के उद्देश्यों के मध्य अंतर को पहचानने के लिए तथा इस अंतर को उपयुक्त अधिगम अनुभवों से पूर्ति करने के लिए।
   - पाठ्यचर्या को निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अधिक दक्ष बनाने के लिए।
   - यह पता लगाने के लिए कि छिपी हुई पाठ्यचर्या के उद्देश्य किस हद तक प्राप्त हुए हैं।

2) शिक्षार्थी अपनी समझ के अनुसार उत्तर देंगे।

3) विद्यालय छोड़ने वाले शिक्षार्थी पाठ्यचर्या की कमियों को उजाकर कर सकते हैं। उनके विद्यालय छोड़ने के कारण, पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाल सकते हैं।

4) रोजगार प्रदाताओं की पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में प्रतिक्रियाएँ इसलिए ली जाती हैं क्योंकि वे किसी पाठ्यचर्या को उत्तीर्ण किए शिक्षार्थियों के उपभोक्ता होते हैं। इसलिए वे किसी पाठ्यचर्या की अच्छाइयों तथा कमियों के बारे में सही निर्णायक हो सकते हैं। वे यह बताने में भी सक्षम होते हैं कि विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को शिक्षार्थी कहाँ–कहाँ प्रयोग करने में सफल हुए हैं। उनकी प्रतिपुष्टि के आधार पर पाठ्यचर्या को सार्थक एवं आवश्यकता आधारित बनाया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

5) पाठ्यचर्या निष्पादन के दौरान मूल्यांकन के दो उद्देश्य हैं: (क) विद्यालय में पाठ्यचर्या के प्रभावी निष्पादन के लिए सहायक क्षेत्रों को खोजना, तथा (ख) उत्पाद की गुणवत्ता को नियंत्रित करना।

6) उद्देश्य, अनुदेशनात्मक विधियाँ तथा विषयवस्तु, अधिगम अनुभवों को संगठित करना तथा मूल्यांकन/आकलन।

7) वृहद स्तर पर पाठ्यचर्या पुनर्निर्माण के दौरान अनावश्यक पहलुओं को हटाया जाता है तथा उसमें नवीन जानकारी सम्मिलित की जाती है। सूक्ष्म स्तर पर, शिक्षक वर्तमान पाठ्यचर्या को नहीं बदलता है। वह उपयुक्त तथा नवीन शिक्षण तकनीकों को अपनाता है ताकि पाठ्यचर्या का निष्पादन हो सके। इस सूक्ष्म स्तर पर शिक्षक अपनी क्षमताओं तथा संसाधनों से सम्बन्धी ज्ञान के आधार पर पाठ्यचर्या का निष्पादन करता है।

8.11 संदर्भ पुस्तकें

बीनी, टूफ्फर एवं एलस्सी, (1986): *कैरीकुलम प्लानिंग एंड डेवलेपमेंट,* न्यूटोन, एम.ए.: एलियन एवं बीकॉन, इंक।

मट्ट, बी.डी. एवं शर्मा, एस. आर. (1992): *प्रिन्सिपल्स ऑफ कैरीकुलम कंस्ट्रक्शन,* दिल्ली, कनिष्का पब्लिशिंग हाउस।

ब्लूम, बी.एस. (1977): "ट्राई–आउट एंड रिविजन ऑफ एजुकेशनल मैटरियल्स एंड मैथड्स", इन लीवी, ए. (संपा.), *हैंडबुक ऑफ कैरीकुलम इवोल्यूशन,* पेरिसः यूनिस्को।

डॉल, आर.सी. (1986), *कैरीकुलम इम्प्रूवमेंट, बोस्टन:* एलियन एवं बीकॉन।

जेनकिन्स, डी. (1976): *कैरीकुलम इवोल्यूशन,* मिल्टन किन्स, दि ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

मल्होत्रा, एम.एम. (1985): *कैरीकुलम इवोल्यूशन एंड रिन्यूल,* मनीला, सी.पी.एस.सी.।

रॉबर्ट, एम. एवं मेरी, जे. (1983): "कैरीकुलम इवोल्यूशन इन पिनचस", तमीर (संपा.), (1985), *दि रोल ऑफ इवोल्यूटर्स इन कैरीकुलम डेवलेपमेंट,* लंदनः क्रोम हेल्म।

स्टीफन, डब्ल्यू एवं डुगलस, पी. (1972): *कैरीकुलम इवोल्यूशन,* ब्रिस्टोलः एनएफईआर पब्लिशिंग कं. लिमिटेड।